ओ३म्

30वें वार्षिक समारोह पर प्रकाशित
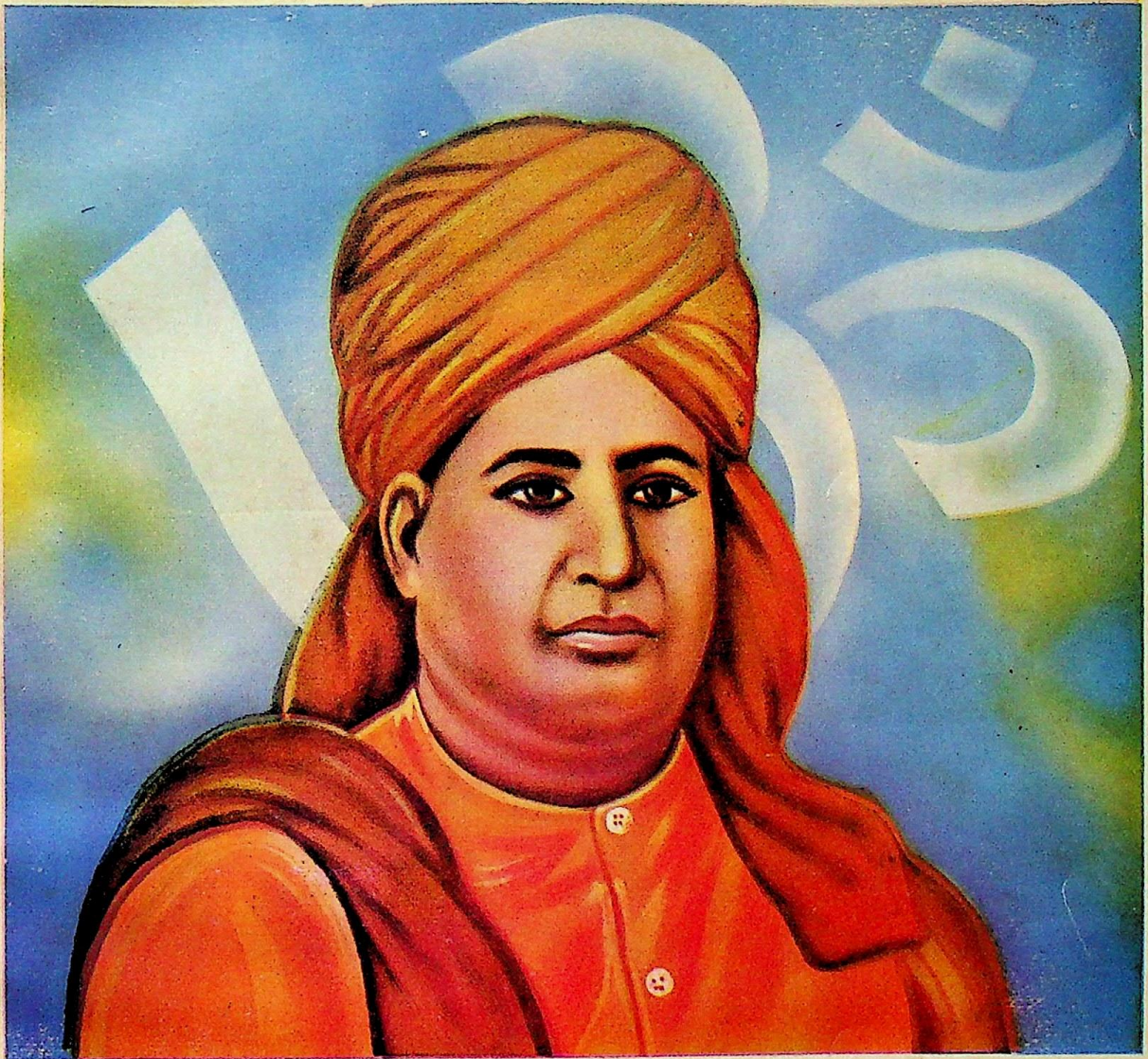
श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति (ट्रस्ट)

(श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय)

करतारपुर-144801 (ज़िला जालन्धर)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यस्तु सर्वाणि भूतांन्यात्म-येवानुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥ यजु० 40.6 ॥

6. "He who considers all beings as existing in the Supreme Spirit, and the Supreme Spirit as pervading all beings, cannot view with contempt any creature whatsoever."

With best compliments from :

K. R. STEEL UNION PRIVATE LIMITED

'EVEREST HOUSE' 10th FLOOR,
46-C, CHOWRINGHEE ROAD, CALCUTTA-16.

STEEL ROLLING MILLS ELECTROLYTIC TIN PLACE MFG.
STEEL PROCESSING TRADING TECHNICAL
AND COMMERCIAL ADVISORY SERVICES

Regd. Office :

MITTAL COURT BUILDING, 4-FLOOR,
NARIMAN POINT, BOMBAY.
Phone : 44-4331 (3 Lines)
Cable : 'KAYSTEEL'
Telex : 7338 RCRK
2853 KRS
2534 KRAJ

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

न स सखा यो न ददादि सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः ।
अपास्मात्प्रेयान्न तदोको अस्ति पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत् ॥

ऋ० 10 । 117 । 4 ॥

(यः पित्वः सचमानाय) जो अन्न को चाहने वाले (सचाभुवे सख्ये) सहकारी मित्र को (न ददाति) नहीं देता है, (स सखा न) वह मित्र नहीं । (अस्मात् अप + प्रेयात्) इससे दूर चला जाए । (तत् ओकः न अस्ति) [क्योंकि] वह घर नहीं है । (अन्यम् अरणम्) दूसरे सरलता से आश्रय देने वाले, अथवा असम्बन्धी (पृणन्तम् चित् इच्छेत्) दाता को ही चाहे ।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

रिरोलिंग तथा बिल्डिंग मिटीरियल के
थोक व्यापारी, गवर्नमेण्ट आर्डर सप्लायर

शिवचन्द राय सुभाष चन्द्र

66, जी. टी. रोड़, लिल्लोह, हावड़ा

दूरभाष : 24317

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

न वा उ देवा: क्षुधमिद्वधं ददुरुताऽशितमुप गच्छन्ति मृत्यव: ।
उतो रयि: पृणतो नोपदस्यत्युताऽपृणन् मडितारं न विन्दते ।।

ऋ० 10 । 117 । 1 ।।

(देवा:) देवों ने, दैवी शक्तियों ने (वै—उ) निश्चय से (क्षुधम् इत् वधम्) भूख ही वध=मौत (न ददु:) नहीं दी, (अशितम् उत) [वरन्] खाने वाले को भी (मृत्यव:) मौतें, दु:खक्लेश मृत्यु के साधन (उप+गच्छन्ति) प्राप्त होते हैं । (पृणत: उतो रयि:) दानी का तो धन (न उप+दस्यति) नहीं नष्ट होता, क्षीण नहीं होता ।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

पलेट और पलेट कटिंग हैवी राड,
हैवी गार्डरचैनल के विक्रेता

मुरली धर ओम प्रकाश

टाण्डा रोड़,
जालन्धर नगर - 4

दूरभाष : 74791

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट
के
माननीय प्रधान तथा गुरुकुल के कुलपिता

उदारहृदय श्री शिवचन्द जी अग्रवाल

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
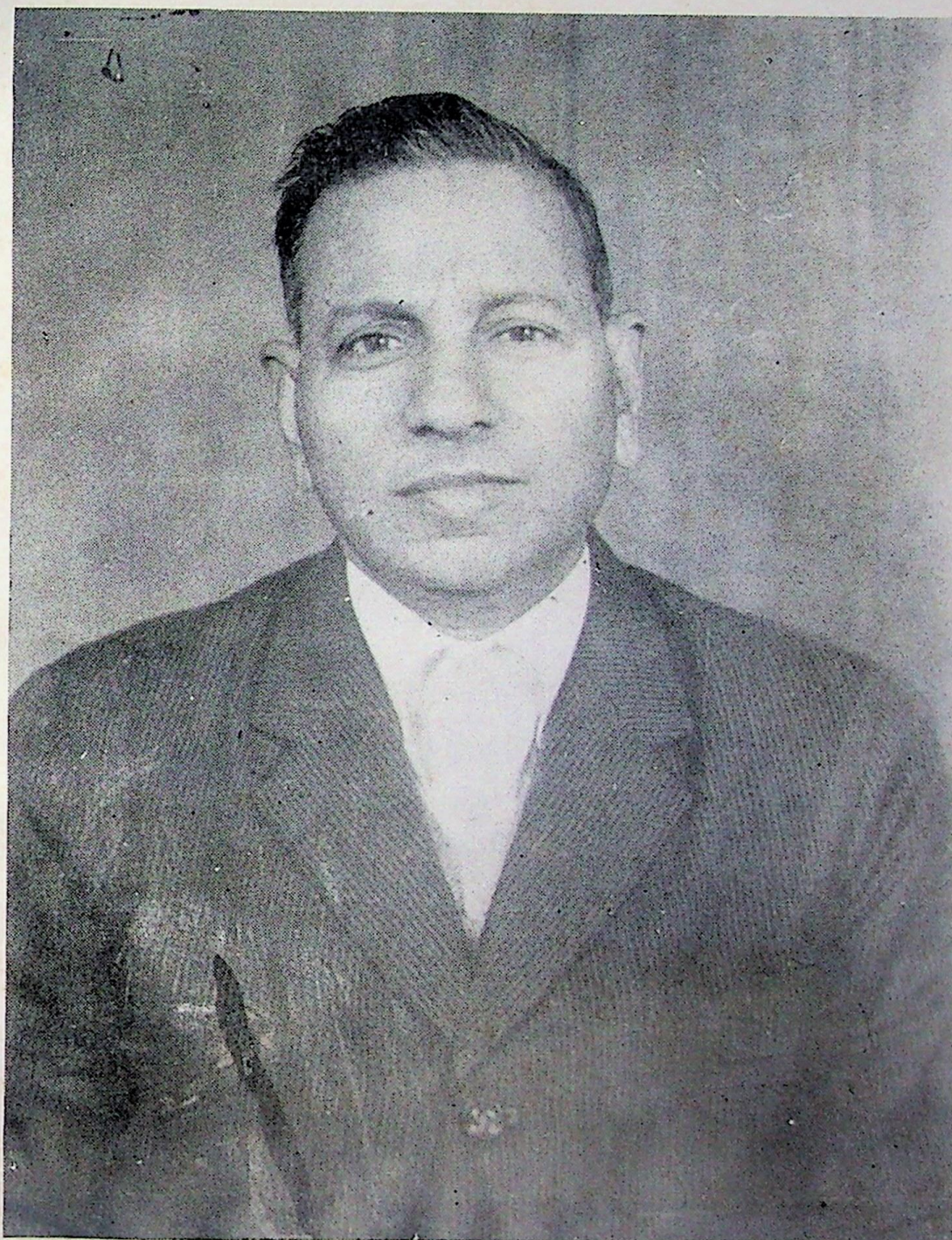
मा प्रगाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः ।
मान्तः स्थुर्नो अरातयः ॥ अ० 13 । 1 । 59 ॥

(वयम् सोमिनः) हम ऐश्वर्य्य-सम्पन्न होकर (पथः मा) मार्ग से, सन्मार्ग से मत (प्रगाम) दूर जाएं । (इन्द्र) हे परमैश्वर्य्यप्रदातः ! (यज्ञात्) यज्ञ से, परोपकार से (मा) मत [हम दूर जाएं ।] (अरातयः) दान न देने वाले (नः + अन्तः—मा + स्थुः) हमारे बीच में मत ठहरें ।

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

★

खेम चन्द राज कुमार चैरीटेबल ट्रस्ट,
जालन्धर शहर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यथा सूर्य्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यतः ।
ऐवा मे प्राण मा बिभेः ॥ अ० 2 । 15 । 3 ॥

(यथा सूर्य्यः च) जैसे सूर्य्य और (चन्द्रः च) चन्द्र और=नक्षत्र तारादि (न बिभीतः) नहीं डरते हैं (न रिष्यतः) [अतएव] नहीं हिंसित होते हैं, (एवा में प्राण) इसी प्रकार [हे] मेरे प्राण ! (मा बिभेः) मत तू डर ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

मै. रवि स्टील इण्डस्ट्रीज़

माझीवाड़ा, आगरा रोड़,

थाणा

प्रयोजक—श्री गीगराज नन्दिनी अग्रवाल

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे मम ।
ज्योक् च सूर्य्यं दृशे ॥ ऋ० 10 । 9 । 7 ॥

(आपः+मम) जल मेरे (तन्वे) शरीर के लिए (च+ज्योक्) और चिरकाल तक (सूर्य्यम्) सूर्य्य को (दृशे) देखने के लिए (वरूथम्+भेषजम्) श्रेष्ठ स्वास्थ्यप्रद औषध (पृणीत) प्रभु-कृपा से दें ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

मित्तल इस्पात

स्टील कास्टिंगज़

के

निर्माता

मेन रोड़, गगरेट (हि. प्र.)

दूरभाष :— कार्यालय : 37 आवास : 31

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वेदसुधा

वर्ष 1985-86 | अश्विन 2042, अक्तूबर 1985 | अंक -- 6

ओ३म्

नशीली रसीली लहर

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया ।

इन्द्राय पातवे सुतः ।। सामवेद ।।

ऋषि:—मधुछन्दा=मीठे संकल्प वाला ।

(सोम) हे सोम ! तू **(स्वादिष्ठया)** अत्यन्त रसीली **(मदिष्ठया)** अत्यन्त नशीली **(धारया पवस्व)** धारा के रूप में प्रवाहित हो । [जीव जगत् को] पवित्र कर । **(सुतः)** तेरा जन्म इस लिए हुआ है कि **(इन्द्राय पातवे)** मैं इन्द्रियों को राजा तेरा पान करूँ ।

मोहन ! तेरा-प्रेम-रस अत्यन्त रसीला अत्यन्त नशीला है । जिसने इसका एक एक घूँट पी लिया, उसे दुनिया की सुध-बुध न रही । संसार जिसे दिन कहता है, वह उस के लिए रात है । संसार जिसे रात कहता है, वह उसके लिए दिन है । वह पागल है । अपनी मस्ती में बहा जाता है । एक तरंग है कि वह उस पर सवार है । कैसा पवित्र, कैसा बेलाग नशा है ! काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार कोई भी मल ऐसा नहीं जो नशे के साथ लगा रहे ।

इस नशे का पान साधारण जन नहीं, केवल राजा लोग करते हैं । तो भी हम तो अपनी देव-पुरी के राजा हैं । हमारे शरीर को स्वयं वेद अयोध्या—युद्धों से बचाने लायक, अजेय—नगरी कहता है । हम इन्द्रियों के स्वामी हैं । हमारा संयम-रूप स्वराज्य अटल है : हमारा अधिकार है कि हम सोम का—प्रभु-प्रेम के संजीवन-रस का—जी भर कर पान करें ।

बहती नवल नशीली धार ।।

झूम-झूम मद-माती लाती, सुख-संजीवन सार ।

रोम-रोम बन ओंठ चूसता, ऐसा सरस खुमार ।

मेरी देव-पुरी के राजा ! करो ग्रहण उपहार ।

बहती नवल नशीली धार ।।

—स्व. पं. चमूपति एम. ए.

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
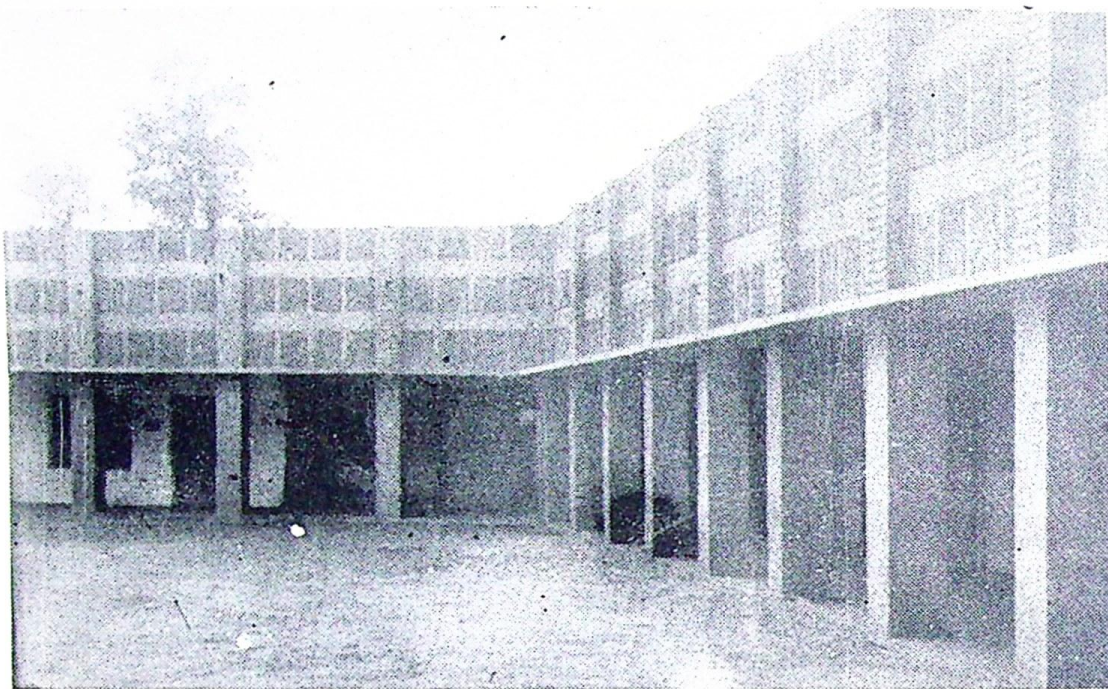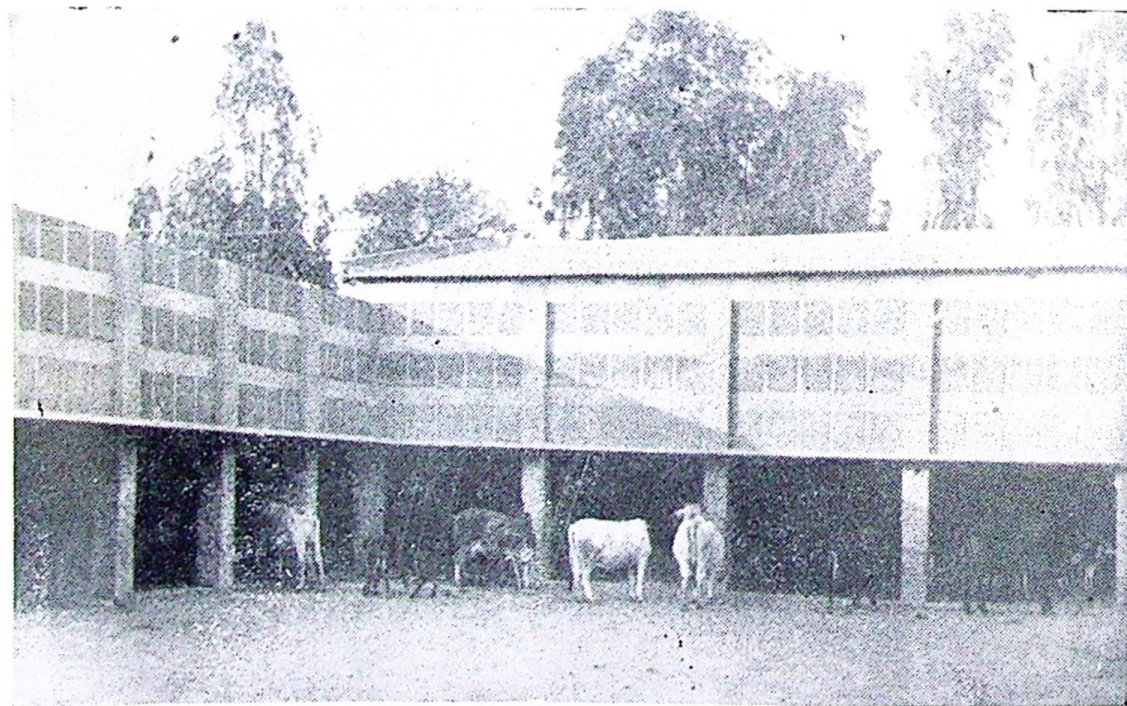
प्रेरणा के स्रोत : दिव्य विभूतियां
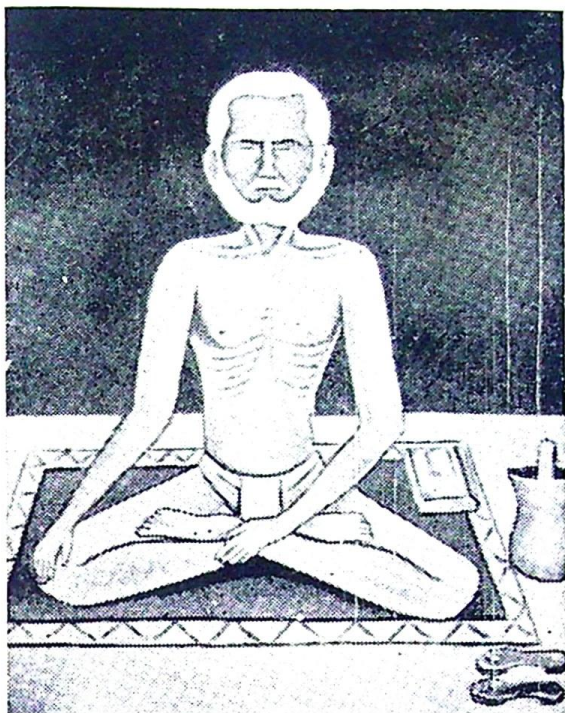
महर्षि दयानन्द के गुरु—
ब्रह्मर्षि दण्डी विरजानन्द सरस्वती

आर्य समाज के संस्थापक—
महर्षि दयानन्द सरस्वती
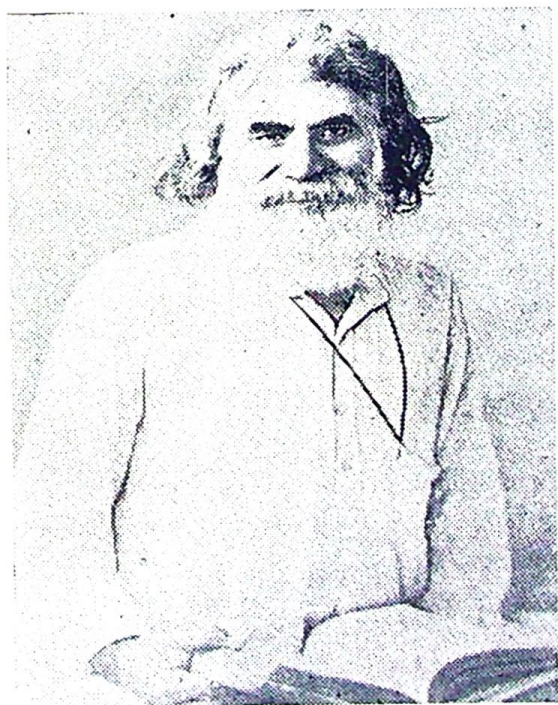
वन्दनीय महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज
(ट्रस्ट के संस्थापक)

पूज्य स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज
(संस्कृत विद्यालय के संचालक)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

स्मारक की नींव के पत्थर
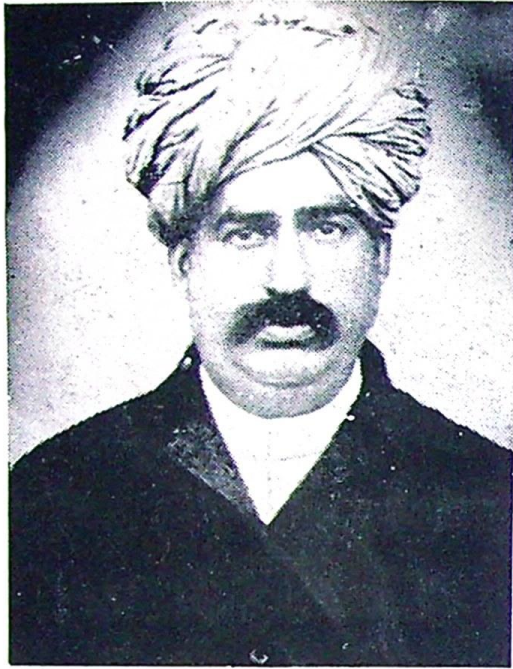
श्री महाशय बद्रीनाथ जी आर्य
(स्मारक भवन के भूमिदाता व निर्माणकर्त्ता)

ब्र. गुरचरण दास जी जिज्ञासु
(स्मारक भवन के पुनरुद्धारक)

पं. नन्दलाल जी वानप्रस्थी
(भूतपूर्व—वेद प्रचारक व अधिष्ठाता: विद्यालय)

प्रि. राम चन्द्र जी जावेद
(भूतपूर्व—अधिष्ठाता: विद्यालय

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

सम्पादकीय

अपनों से अपनी बात

छात्रों से—

आज पंजाब में संस्कृत का मार्ग पूर्वापेक्ष दिन प्रतिदिन कठिन कठिनतर कठिनतम हुआ जा रहा है, पुनरपि हम संस्कृत प्रेमियों को इससे हताश नहीं होना चाहिए, अपितु इसके लिए संघर्ष करते रहना चाहिए, प्रयत्न करते रहना चाहिए हमारे संघर्ष के अनुरूप सफलता हमारे हाथ में होगी। आज संस्कृत का पठन पाठन केवल नौकरी की अपेक्षा से होता है और सम्पूर्ण अर्हताओं के अभाव में; पढ़कर भी छात्र पछताते हैं और हीन भावना का शिकार होते हैं परन्तु जब सस्कृत का अध्ययन केवल ज्ञानोपार्जन के लिए होता था तब यह संस्कृत स्वयं अर्थकरी हो जाती थी, आज इसके विपरीत है, यदि संस्कृत का अध्ययन विशिष्टता प्राप्त करने के उद्देश्य से किया जाए तो इसमें कोई संशय नहीं कि संस्कृत के द्वारा जीविकोपार्जन न हो सके। आवश्यकता है सच्ची लगन और ज्ञानपिपासा की। सस्कृत सागर की उपरि सतह में से तो केवल क्षार ही प्राप्य है बहुमूल्य रत्न पाने के लिए तो हमें इसके अन्तस्तल में ही डुबकी लगानी पड़ेगी, अतः निवेदन है उन छात्रों से, जो इस मार्ग पर चल रहे हैं कि वे परीक्षा उत्तीर्णता ही ध्येय न मानकर विषय की थाह तक पहुँचने के लिए अथक श्रम करें। परिश्रम ही सच्ची सफलता है। आओ! हम सब मिलकर सही अर्थों में संस्कृत के प्रचार प्रसार में जुट जाएँ, इस मार्ग में जो न्यूनताएँ हों उन्हें हम स्वयं दूर कर इसका मार्ग प्रशस्त करें।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिक्षा विभाग व सरकार से—

शिक्षा विभाग व भारत सरकार से भी इस विषय में निवेदन है कि संस्कृत विद्यालयों को चलाने के लिए केवल अनुदान दे देना ही पर्याप्त नहीं अपितु आज के अनुरूप इसके अध्ययन के साथ गणित व सामान्य ज्ञान जैसे दो तीन विषय संयुक्त कर एक सुनिश्चित पाठ्यक्रम इसके लिए तैयार करना चाहिए जिससे छात्रों का ज्ञान केवल एकपक्षीय न होकर बहुमुखी हो। इसी के साथ इनके कार्यक्षेत्र में वृद्धि के लिए भी पर्याप्त सहयोग की आवश्यकता है। अतः लिपिक आदि के पदों में विशारद, शास्त्री आदि परीक्षोत्तीर्ण छात्रों को भी स्थान दिया जाना चाहिये।

संस्कृत विद्यालयों के प्रबन्धकों से—

एक निवेदन है उन सदाशयों से जो कि इन संस्कृत विद्यालयों का प्रबन्ध करते हैं वा इनका संचालन करते हैं। वे जहां संस्कृत के हेतु इतना व्यय करते हैं, यदि इसी के साथ अतिरिक्त समय में छात्रों के लिए टाईपिंग, बुककीपिंग आदि की कक्षायें भी कुछ धन व्यय करके आरम्भ कर देवें तो इससे छात्रों की संख्या में जहां वृद्धि होगी वहां उनके कार्यक्षेत्र बढ़ने से छात्रों को अर्थ-लाभ भी होगा।

कृतज्ञता—इस भव्य 'स्मारिका' के मुद्रण व प्रकाशन में उन सभी लेखकों तथा कवियों के आभारी हैं जिन्होंने समय पर अपनी रचनाएँ भेजकर इसके प्रकाशन में सहयोग दिया है।

साथ ही हम उन उद्योगपतियों को भी विस्मृत नहीं कर सकते जिन्होंने विज्ञापन देकर इसके अर्थाभाव को दूर किया है।

अन्त में—कुछ अपरिहार्य कारणों से स्मारिका—प्रकाशन में जो विलम्ब हुआ उसके लिए हम पाठकों से क्षमा चाहते हैं।

नरेश कुमार शास्त्री आचार्य—श्री गुरु विरजानन्द
वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर 144801

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

दण्डी विरजानन्द स्मारक : एक परिचय

—श्री नरेश कुमार शास्त्री, व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य

दण्डी विरजानन्द—

महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत ही नहीं अपितु समस्त विश्व में नवजागृति के सन्देश-वाहक, वेदोद्धारक तथा आर्यसमाज के संस्थापक के रूप में जाने जाते हैं। महर्षि दयानंद जिन का बचपन का नाम मूलशंकर था ने सच्चे शँकर की खोज में लगभग 22 वर्ष की आयु में गृह त्याग कर दिया था। इधर महर्षि को सच्चे शंकर का आभास कराने वाले ब्रह्मर्षि विरजानन्द जी जिनका बचपन का नाम बृजलाल था, वे भी लगभग 15 वर्ष की अवस्था में प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी पैदल ही गृहत्याग कर ऋषिकेश की ओर चल पड़े थे। जहां पहुँचकर इन्होंने गङ्गा की पवित्र गोद में लगातार तीन वर्ष तक कठोर गायत्री तप किया, जिसके फलस्वरूप इनके दिव्यचक्षु खुल गये और अपने शेष जीवन को माँ सरस्वती के अर्पण करने हेतु वहाँ से मथुरा आकर अपनी कुटिया में छात्रों को पढ़ाना आरम्भ कर दिया, यह कुटिया ही उनकी संस्कृत पाठशाला थी, इसी पाठशाला में गुरुवर दण्डी विरजानन्द के चरणों में बैठकर सन् 1860 से 1863 तक महर्षि दयानन्द ने व्याकरणादि ग्रन्थों का अध्ययन किया और गुरु दक्षिणा में गुरु को दिए वचन के अनुसार वैदिक धर्म को पुनः अस्तित्व में लाने के लिए कार्यक्षेत्र में उतरे।

करतारपुर एक तीर्थ—

दादा गुरु विरजानन्द जी की जन्मभूमि के बारे में अब कोई विवाद नहीं रहा, अब सभी इतिहासज्ञ इस बात से सहमत हैं कि दादा गुरु दण्डी विरजानन्द जी का जन्म करतारपुर के समीप वेई नदी पर स्थित गंगापुर नामक ग्राम में हुआ था, जो अब बाढ़ की भेंट हो चुका है। अतः करतारपुर विश्व के आर्यों छात्रों के लिए टंकारा और मथुरा की तरह ही एक पुण्य तीर्थ है जहां प्रतिवर्ष आर्य जन एक सम्मेलन के रूप में अपने दादा गुरु को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक की स्थापना—

सर्वप्रथम 1925 में मथुरा शताब्दी के अवसर पर आर्यजगत् को दण्डी विरजान्द जी के जन्मस्थान करतारपुर होने का पता चला था। 1930 में इसी विषय में ला. देवराज जी की अध्यक्षता में करतारपुर में एक सम्मेलन भी हुआ इसके पश्चात् एक सम्मेलन आचार्य रामदेव जी की अध्यक्षता में हुआ और स्थानीय आर्यसमाज के साहसी युवकों ने उस समय आसपास के गांवों में जाकर दण्डी जी के वंश बारे काफी जानकारी एकत्रित की। फिर भी उनकी स्मृति में कोई भवन विशेष नहीं बन सका। परन्तु संकल्प शुद्ध रहा

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और लाहौर निवासी (जो पाकिस्तानी बनने के पश्चात् करतारपुर में आ बसे थे तथा इससे पूर्व नैरोबी (अफ्रीका) में रेलवे कर्मचारी थे) परम ऋषिभक्त महाशय बद्रीनाथ जी आर्य द्वारा प्रदान की गयी 52000/- की पवित्र राशि से करतारपुर में 24 फाल्गुन सं. 2041 तदनुसार 10 मार्च 1956 को स्मारक भवन का शिलान्यास पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती के करकमलों से हुआ। 24 भाद्रपद संवत् 2021 तदनुसार 6 सितम्बर को जिसका उद्घाटन पूज्य स्वामी ज्ञानानन्द जी वैदिक मिश्नरी भूतपूर्व मेहता जैमिनी ने किया।

इसके पश्चात् स्मारक भवन का निर्माण धनाभाव से अधूरा ही पड़ा रहा। 1959 में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की 1000/- की राशि के सहयोग से पानी की मोटर तथा लोहे के बड़े गेट की व्यवस्था की गयी।

1962 में श्री बिहारी लाल जी मेहता तथा श्री विद्यासागर जी धीमान के आमन्त्रण पर पूज्यपाद महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज पधारे, और उन्होंने इस अधूरे भवन में ही यजुर्वेद का पारायणयज्ञ सम्पन्न कराया। चार वर्ष बाद पुन: श्री बिहारी लाल जी के आमन्त्रण पर महात्मा जी ने चारों वेदों का पारायण यज्ञ 1 फरवरी 1966 से 28 फरवरी 1966 तक कराया।

समिति ट्रस्ट का निर्माण एवं पञ्जीकरण—

इसी बीच 16 फरवरी 1966 को पूज्य महात्मा प्रभु आश्रित जी की अध्यक्षता में एक सभा के अन्तर्गत समिति ट्रस्ट के निर्माण का निर्णय हुआ, जिसका ट्रस्टी शिप शुल्क 250/- रखा गया, सबसे पहले ट्रस्टी भी स्वयं महात्मा जी ही बने और भी अनेक महानुभावों ने सदस्यता ग्रहण की।

23 अगस्त 1966 को जालन्धर के ही सुयोग्य वकील श्री सुलक्षण जी ने ट्रस्ट का विधिवत् पञ्जीकरण नि:शुल्क करा दिया और स्मारक का कार्यभार एक तरह से पूज्य महात्मा जी ने अपने हाथों में ले लिया। परन्तु दुर्भाग्यवश 16 मार्च 1967 को महात्मा जी का स्वर्गवास हो गया और समिति ने महात्मा जी के शिष्य श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी को मुख्य संचालक तथा पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी को सह संचालक बना दिया।

महात्मा प्रभु आश्रित यज्ञशाला व धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय—

पूज्य महात्मा प्रभु आश्रित जी की स्मृति में एक भव्य यज्ञशाला के निर्माण की योजना बनाई गई जिसे 1969 में श्री बाबू बिहारी लाल जी की सुपुत्री श्रीमती सुशीला देवी जी की 5000/- की दान राशि के सहयोग से भक्त श्री गिरधारी लाल जी की देखरेख में मूर्त्त रूप दिया गया।

महात्मा जी की ही स्मृति में फरवरी 1969 में एक धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय डा. विद्याधर जी पुरी के नेतृत्व में आरम्भ किया गया, जो कई वर्षों तक नि:शुल्क चिकित्सा करता, बाद में चिकित्सक के अभाव में बन्द हो गया।

दण्डी विरजानन्द निर्वाण शताब्दी तथा स्मारक भवन का पुनरुद्धार—

कृष्णा त्रयोदशी सोमवार संवत् 1925 तदनुसार 14 सितम्बर 1868 को ब्रह्मर्षि दण्डी विरजानन्द जी महाराज ने देहत्याग किया था। अत: 1966 में ही निर्वाण शताब्दी मनाने का विचार हुआ जो सार्वदेशिक सभा के सहयोग से 5-10-69 से 12-10-69 तक शताब्दी पूर्वोत्सव के रूप में बड़ी धूमधाम से करतारपुर में मनाया गया।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी अवसर पर ब्रह्मचारी श्री गुरु चरण दास जी जिज्ञासु ने स्मारक भवन तथा यज्ञशाला के फर्श पलस्तर आदि का कार्यभार अपने ऊपर लिया। श्री जिज्ञासु जी के छोटे भाई श्री बैजनाथ जी गुप्ता, श्री सेठ शिवचन्द अग्रवाल तथा श्री प्रकाशचन्द जीवाहरी ने भी इस कार्य में भरपूर सहयोग दिया।

गुरु विरजानन्द जी की निर्वाण शताब्दी का सम्पन्नता समारोह 20-9-70 से 28-9-70 से सोल्लास एवं सोत्साह मनाया गया, करतारपुर वासी आज भी उस उत्सव की चर्चा करते नहीं अघाते। उस शताब्दी आयोजन में सर्वाधिक सहयोग स्मारक के संचालक पूज्य स्वामी विज्ञानानन्द जी तथा श्री पं. नन्दलाल जी वानप्रस्थी का रहा।

डाक-टिकट—

श्री गुरु विरजानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में डाक तार विभाग की ओर से 14 सितम्बर 1971 को अनुप्रस्थ आकार की एक डाक टिकट भी जारी की गई जिसके मध्य में स्वामी विरजानन्द जी को आसन मुद्रा में दर्शाया गया है। 20 पैसे की इस डाक टिकट की मुद्रण संख्या 30 लाख थी।

संस्कृत विद्यालय की स्थापना—

इस शताब्दी महोत्सव पर 27-9-1970 को दण्डी स्वामी विरजानन्द जी की स्मृति को स्थायी रूप देने के उद्देश्य से उनकी मथुरा की पाठशाला की भांति श्रीयुत् पं. धर्मदेव जी विद्यामार्त्तण्ड द्वारा श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत विद्यालय का उद्घाटन कराया गया। जो कालान्तर में पूज्य स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज के संचालन में महाविद्यालय का रूप धारण कर गया। 1970 में ही विद्यालय की श्रेणियों के उपयोगार्थ भवन पूर्ति में हीरो साईकिल लुधियाना ने श्री दयानन्द मुञ्जाल की पवित्र स्मृति में पहले कमरे का निर्माण कराया। अब शनैः शनैः इन कमरों की संख्या 9 हो गयी है।

गऊशाला की स्थापना—

29-10-1973 को दीपावली के दिन गुरुकुल में गऊशाला की स्थापना हुई, जिसमें श्री चतुर्भुज जी मित्तल ने सर्वप्रथम अपने गृह से एक विलायती गौ देकर इस कार्य का शुभारम्भ किया। 1974 में गऊशाला के भवन का निर्माण भी आरम्भ कर दिया गया। आज गऊशाला में कुल मिलाकर बच्छे बच्छियों सहित 18-20 पशु हैं, जिनके आवास तथा चारे आदि का उत्तम प्रबन्ध है। वर्ष भर छात्रों को पर्याप्त मात्रा में दूध, दही, मक्खन, छाछ और मिलता रहता है।

200 वर्षीय दण्डी विरजानन्द जी का जन्म समारोह—

गुरुकुल के वार्षिक उत्सव पर 16 सितम्बर 78 से 23 सितम्बर 78 तक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सहयोग से दण्डी विरजानन्द जी का 200 वर्षीय जन्म समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्ध—

1980 में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र जी हूजा गुरुकुल के पारितोषिक समारोह पर करतारपुर पधारे और तभी एतत्विषयक सभी अर्हतायें पूरी करते हुए इस संस्कृत महाविद्यालय जो कि इससे पूर्व श्रीमद्दयानन्द आर्षविद्यापीठ गुरुकुल उच्चतर रोहतक की शाखा के रूप में संस्कृत का प्रचार प्रसार करता रहा, को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के साथ जोड़ दिया गया। जिसे 1983 में विश्वविद्यालय ने विधिवत् स्थायी मान्यता देकर अपनी शाखा के रूप में स्वीकार कर लिया।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'स्मारिका' का प्रकाशन—

1980 में ही गुरुकुल की एक वार्षिक पत्रिका निकालने का निर्णय लिया गया जिसे श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट के 'स्मारक' नाम के अनुरूप 'स्मारिका' नाम देकर जिसका प्रथम अङ्क सितम्बर 1980 में गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर प्रकाशित किया गया। तभी से निरन्तर प्रति-वर्ष उत्कृष्ट लेखसामग्री, साजसज्जा के साथ यह पत्रिका स्मारक एवं विद्यालय की गतिविधियों के परिचय के साथ-साथ पाठकों का ज्ञानवर्धन कर रही है।

हिन्दी टाईपिंग—

स्मारक ट्रस्ट के मन्त्री श्री चतुर्भुज जी मित्तल के सत्प्रयास से हिन्दी का कार्यक्षेत्र बढ़ाने तथा छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के दृष्टिगत विगत वर्ष 1984 में ट्रस्ट ने हिन्दी टाईपिंग की कक्षायें आरम्भ कर दी हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में और भी कई एक योजनाएं हैं जो कि पंजाब के अस्थिर वातारण के कारण क्रियान्वित नहीं हो पायी, स्थिति तथा समय अनु-कूल होने पर अवश्य ही फलीभूत होंगी, ऐसा दृढ़ विश्वास है।

ट्रस्ट के प्रधान श्री सेठ शिवचन्द जी तथा मन्त्री श्री चतुर्भुज जी मित्तल का व्यापक योग-दान सराहनीय है।

□ □ □

महर्षि ने कहा था—

"जब पाँच पाँच वर्ष के लड़का लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें। अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी। उसके पश्चात् जिनसे अच्छी शिक्षा, विद्या, धर्म, परमेश्वर, माता, पिता, आचार्य, विद्वान्, अतिथि, राजा, प्रजा, कुटुम्ब, बन्धु, भगिनी, भृत्य आदि से कैसे वर्त्तना चाहिए, इन बातों के मन्त्र, श्लोक, सूत्र, गद्य, पद्य, भी अर्थ सहित कण्ठस्थ करावें। जिनसे सन्तान किसी धूर्त्त के बहकाने में न आवे और जो जो विद्या धर्मविरुद्ध भ्रान्ति जाल में गिराने वाले व्यवहार हैं उनका भी उपदेश कर दें, जिससे भूत-प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो।

—सत्यार्थ प्रकाश

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर के पदाधिकारी
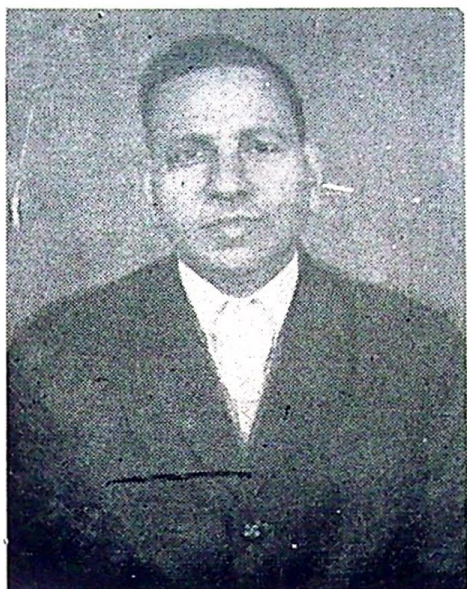
प्रधान—श्री सेठ शिव चन्द जी अग्रवाल,
जालन्धर
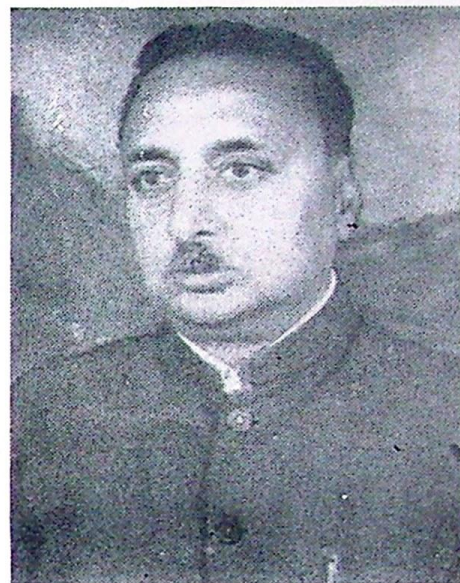
महामन्त्री—श्री चतुर्भुज जी मित्तल,
जालन्धर
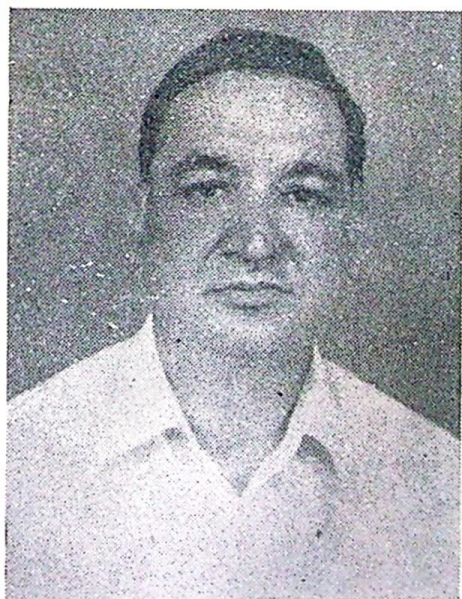
श्री ला. यशफूल चन्द जी अग्रवाल,
कोषाध्यक्ष

श्री राम लुभाया जी नन्दा
उपकोषाध्यक्ष

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
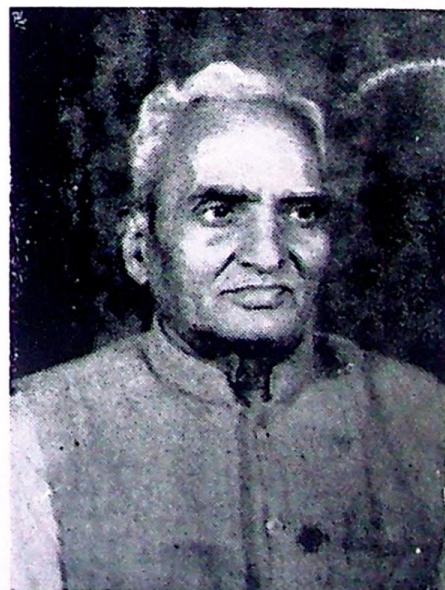
श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट के उपप्रधान व उपमन्त्री

श्री सत्यानन्द जी मुञ्जाल
लुधियाना, (उपप्रधान)
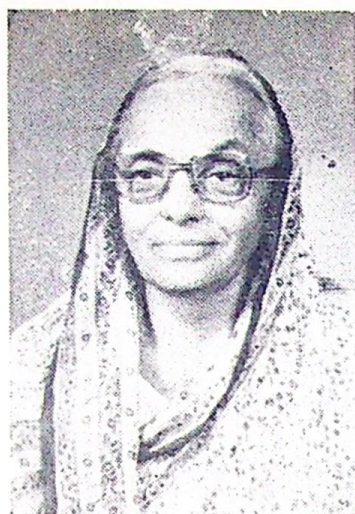
श्रीमती कमला जी आर्या
लुधियाना, (उपप्रधाना)

पं. हरबन्स लाल जी शर्मा
जालन्धर, (उपप्रधान)

श्री चतुर्भुज जी गुप्ता
अमृतसर, (उपप्रधान)

डा. श्री चन्द जी आनन्द
करतारपुर, (उपप्रधान)
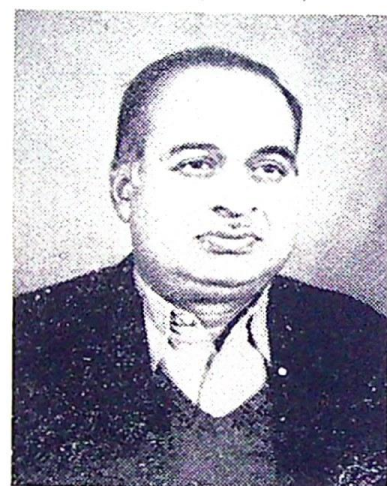
श्री जगदीश राय जी बांसल
मोगा, (उपमन्त्री)

श्री कुन्दन लाल जी अग्रवाल
जालन्धर, (उपमन्त्री)
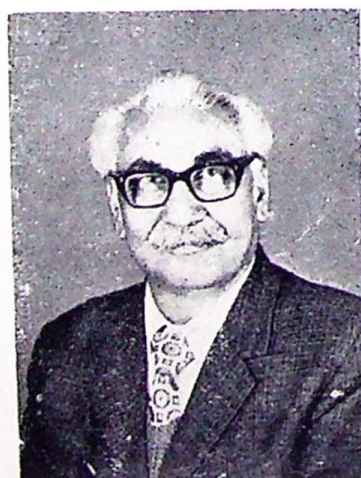
ज्ञानी गुरदियाल सिंह जी
लुधियाना, (उपमन्त्री)

श्री देवराज जी खुल्लर
लुधियाना, (उपमन्त्री)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट के अन्तरंग सदस्य

श्री स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती
जालन्धर
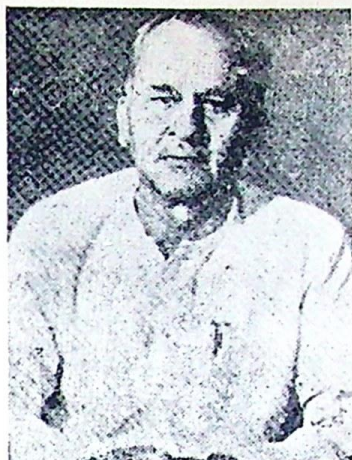
श्री वीरेन्द्र जी एम. ए.
जालन्धर

श्री रोशन लाल जी गुप्ता
जालन्धर

श्री सेठ मुरली धर जी
जालन्धर

श्री रवि भूषण जी मित्तल
जालन्धर

श्री दुनी चन्द जी थापर
जालन्धर

श्री जगदीश जी बत्तरा
अमृतसर

श्रीमती शान्ता जी गौड
लुधियाना

प्रि. सन्तोष जी पुरी
जालन्धर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट के अन्तरंग सदस्य

श्री सुभाष जी अग्रवाल
जालन्धर

प्रि. एस. पी. नन्दा
जालन्धर

श्री कस्तुरी लाल अग्रवाल
करतारपुर

चित्र अप्राप्त

1. कु. पुष्पा मेहता, करतारपुर (उपमन्त्री)
2. श्री बैजनाथ जी गुप्ता, जालन्धर (अन्तरंग सदस्य)
3. श्री जगदीश चन्द्र जी डाबर, जम्मू (अन्तरंग सदस्य)
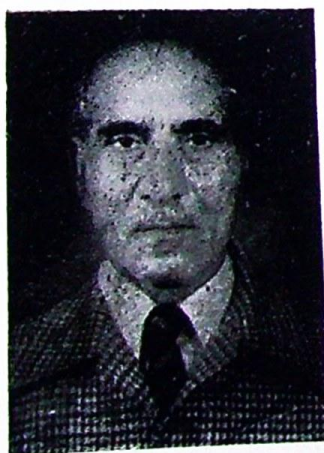
वैद्य भीमसेन जी
करतारपुर
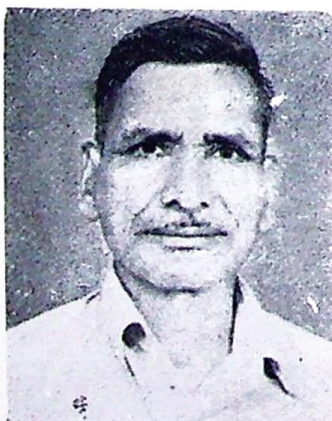
श्री रखा राम जी भण्डाराध्यक्ष
करतारपुर

श्री बृज भूषण जी चार्टिड अकाऊण्टैंट
जालन्धर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्
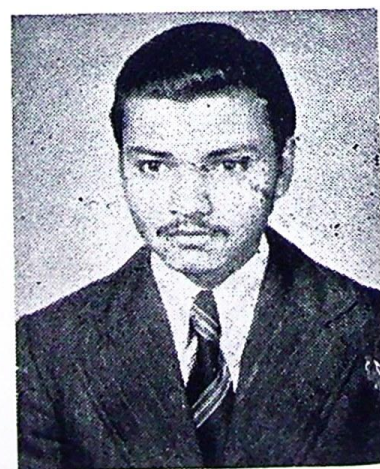
श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट एवं तदन्तर्गत श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर के अधिकारी तथा अन्तरंग सदस्य

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर एवं संस्कृत महाविद्यालय के वर्ष 1983, 1984 तथा 1985 के लिए चुने गए तथा श्री प्रधान जी द्वारा मनोनीत किये गये अधिकारीयों एवं कार्य-कारिणी के सदस्यों की सूची :—

प्रधान : श्री शिवचन्द जी अग्रवाल, जालन्धर
उप-प्रधान : श्री सत्यानन्द जी मुञ्झाल, लुधियाना
,, : श्री चतुर्भुज जी गुप्ता, अमृतसर
,, : श्रीमती कमला जी आर्या लुधियाना
,, : श्रीमती कमला जी आर्या लुधियाना
,, : पं. हरबंस लाल जी शर्मा, जालन्धर
,, : डा. श्री चन्द जी आनन्द, करतारपुर
महामन्त्री : श्री चतुर्भुज जी मित्तल, जालन्धर
उपमन्त्री : श्री कुन्दन लाल जी अग्रवाल, जालन्धर
,, : श्री जगदीश राय जी बान्सल, मोगा

उपमन्त्री : ज्ञानी गुरदयालसिंह जी आर्य, लुधियाना
,, श्री देवराज जी खुल्लर, लुधियाना
, कुमारी पुष्पा जी मेहता, करतारपुर
कोषाध्यक्ष : श्री यशफूलचन्द जी अग्रवाल, करतारपुर
उपकोषाध्यक्ष : श्री राम लुभाया जी नन्दा, बस्ती नौ, जालन्धर
भण्डाराध्यक्ष : श्री रखा राम जी, करतारपुर

प्रबन्धक—विद्यालय : श्री प्रेम कुमार जी अग्रवाल, करतारपुर
अधिष्ठाता—विद्यालय : श्री चौ. ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट, जालन्धर शहर
स. अधिष्ठाता—विद्यालय : श्री सुखदेव राज जी शास्त्री, करतारपुर
आचार्य—विद्यालय : श्री नरेशकुमार जी शास्त्री व्याकरणाचार्य
चार्टर्ड अकाऊंटैंट : श्री बृज भूषण जी अग्रवाल, जालन्धर
अन्तरंग सदस्य : श्री वीरेन्द्र जी एम. ए., जालन्धर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अन्तरंग सदस्य :

श्री बैजनाथ जी गुप्ता, जालन्धर
श्री वैद्य भीम सैन जी, करतारपुर

श्री सुभाष जी अग्रवाल, जालन्धर
श्री दुनी चन्द जी थापर, जालन्धर

श्री स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती, जालन्धर
श्री जगदीश चन्द्र जी डाबर, जम्मू

श्री रवि भूषण जी मित्तल, जालन्धर

श्री जगदीश जी बत्रा, अमृतसर
श्रीमती शांता जी गौड़, लुधियाना

श्री सेठ मुरलीधर जी, जालन्धर
प्रि. सन्तोष जी पुरी, जालन्धर
श्री रोशन लाल जी गुप्ता, जालन्धर
प्रि. एस. सी. नन्दा द्वाबा कालेज, जालन्धर
श्री कस्तूरी लाल जी अग्रवाल, करतारपुर

विशेष ग्रामन्त्रित सदस्य

1. श्री प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी, धूरी
2. श्री मेहर चन्द जी वानप्रस्थी, जीरा
3. श्री जगदीश लाल जी सर्राफ, अमृतसर
4. श्री शोरी लाल जी, अमृतसर
5. श्री जमुना दास जी, सुल्तानपुर लोधी
6. श्री बलबीर जी सौंधी, जालन्धर
7. श्री सत्यपाल जी मल्होत्रा, रैय्या मण्डी
8. श्री केवल कृष्ण जी मल्होत्रा, गहरी मण्डी
9. श्री ब्रह्मदेव जी सहगल, मोगा
10. श्री जुगल किशोर जी गोईन्का, अमृतसर
11. श्री देश राज जी छाबड़ा, फगवाड़ा
12. श्री अमृतलाल जी अग्रवाल, करतारपुर
13. श्री विद्यासागर जी धीमान, करतारपुर
14. श्री कृष्ण जी बान्सल, करतारपुर
15. श्रीमती कैलाश वती जी खुल्लर, लुधियाना
16. श्रीमती सरोज जी ओहरी होशियारपुर
17, श्रीमति विद्यावती जी आर्या, लुधियाना
18. श्रीमती सत्याभामा जी सोनी, समराला
19. श्रीमती शान्ता जी अग्रवाल, लुधियाना
20. श्रीमतो विद्यावती जी देवगण, लुधियाना
21. श्री कु. सत्या देवी जी आर्या, लुधियाना

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

जो जागत है
सो पावत है

लेखक—पं. धर्म देवार्य—सहसम्पादक
'आर्य मर्यादा, साप्ताहिक,
स. वेद प्रचार अधिष्ठाता,
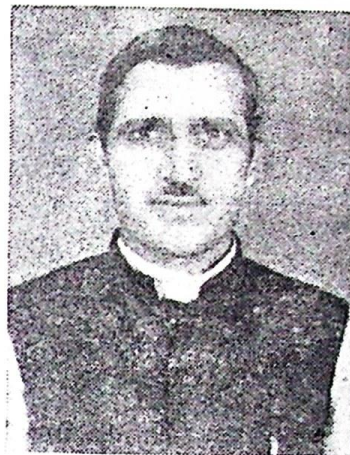
जो जागता है वह प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। जीवन जीने के लिए और आगे बढ़ने के लिए जागना अति आवश्यक है। आलस्य, प्रमाद और निद्रा में आदमी पिछड़ जाता है। इसी लिए वेद ने कहा है कि :—

यो जागारः तमृचः कामयन्ते
यो जागारः तमु सामानि यन्ति।

यो जागार तमयं सोम आह,
तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥
ऋग्वेद 5-44-14

शब्दार्थ—(या) जो (जागार) जागता है सदा जागरूक रहता है। (तमु) उसकी (ऋचः कामयन्ते) सब लोग स्तुतियां करते हैं अर्थात् वेद की ऋचाएं भी उसे ही चाहती हैं दूसरे शब्दों में परमात्मा भी उसी का कल्याण करता है। (यो जागार) जो जागरूक है (तमु) उसे ही (सामानि) शान्ति के प्रयोग या वचन (यन्ति) प्राप्त होते हैं।

(यो जागार) जो जागता है (अयं सोमः) यह सोम शान्ति दायक प्रभु (तम्-आह) उसके अभिमुख होकर कहता है (अहं) मैं (तव सख्ये) तेरी मित्रता में (न्योकाः) निश्चित स्थान रखने वाला (अस्मि) हूँ।

वेद के इस मन्त्र ने स्पष्ट कर दिया है कि जागने वाला ही आगे बढ़ सकता है। "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत" उठो जागो और अपने ध्येय को प्राप्त करो। वेद के कई मन्त्रों के द्वारा हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हम जागते रहें और जाग कर खड़े होकर सावधानी के साथ अपने कदमों को आगे बढ़ाएं।

बिना जागे जीवन में किसी भी क्षेत्र में सफलता नहीं मिलती। जीवन का पहला पड़ाव बाल्य अवस्था है। विद्या प्राप्ति का यही अवसर है इसे हम अध्ययन अवस्था भी कह सकते हैं। विद्या की अवस्था भी कह सकते हैं। जो बच्चे विद्यार्थी-अवस्था में आलसी, प्रमादी और उच्छृंखल होते हैं। जिनको नींद बहुत प्यारी होती है वे विद्या की पूर्ण प्राप्ति नहीं कर सकते। आलस्य और प्रमाद विद्यार्थी का शत्रु है यह दोनों उसे आगे बढ़ने से रोकते हैं। विद्या प्राप्ति के लिए विद्यार्थी को बहुत तप-तपना पड़ता है। प्रातः चार बजे उठना और रात्रि दस बजे सोने का नियम बनाना पड़ता है। वह यदि सोता भी है तो ऐसी नींद जिसमें थोड़ी सी आहट से वह जागृत हो जाता है। जो विद्यार्थी गाढ़ निद्रा में सोते हैं और जगाने पर भी नहीं जागते वह आलसी और प्रमादी

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होकर विद्या प्राप्ति से भी वंचित रह जाते हैं। इसीलिए विद्यार्थी अवस्था में ब्रह्मचारी के सम्मुख यही रहना चाहिए कि—"यो जागार: तम ऋच: कामयन्ते" वेद के इस आदेश का पालन करते हुए विद्यार्थी जागरूक रह कर विद्या प्राप्त करे।

जीवन का दूसरा पड़ाव गृहस्थ है। यहां भी आलसी प्रमादी और अधिक सोने वाला गृहस्थी अपने जीवन में सफल नहीं होता। क्योंकि ऐसा व्यक्ति स्वार्थी हो जाता है। वह अपना धन और यौवन गलत कार्यों में नष्ट करता है। गृहस्थ में भी वही व्यक्ति सफल होता है जो अपने कर्त्तव्य के प्रति सदा जागरूक रहता है। जो पति-पत्नि के रूप में, भाई-भाई के रूप में, बाप-बेटों के रूप में जागरूक रहकर अपने कर्त्तव्य का पालन करता है उसे आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता।

जीवन का तीसरा पड़ाव वानप्रस्थ और चौथा पड़ाव सन्यास है। इनमें भी आलस्य प्रमाद का कोई स्थान नहीं। आलसी और प्रमादी वानप्रस्थी व सन्यासी न तो कभी समाज का कल्याण कर सकता है और न ही अपना उत्थान कर सकता है। वह तो तभी सफल हो सकता है जब वह महर्षि दयानन्द की भान्ति केवल शरीर को आराम देने के चार पांच घन्टे ही निद्रा ले।

सन्यासी सांसारिक पदार्थों व रिश्ते, नातियों से अपना सम्बन्ध तोड़कर परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ता है। परमात्मा की प्राप्ति के लिए ही इस आश्रम का निर्माण किया गया है। वैसे ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी व सन्यासी सभी का मुख्य ध्येय उस परमात्मा की प्राप्ति है। यह मानव का चोला मिला ही उसकी प्राप्ति के लिए है। तभी तो वेद ने स्पष्ट किया है "यो जागार तमयं सोम आही, तवाहमस्मि सख्ये न्योक;, अर्थात् जो जागता है उसे ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। उसे ही भक्ति का रस मिलता है। भक्ति भी अन्धी श्रद्धावाली व गफलत भरी न हो भक्ति भी ज्ञानपूर्वक, बुद्धिपूर्वक जागरूक होकर करनी चाहिए तभी जीवन में सफलता मिलेगी। प्रत्येक को जागरूक होकर चलना चाहिए। इस प्रकार जो विचारपूर्वक कार्य करता है वह जीवन में चारों ओर सफलता प्राप्त कर लेता है। उसका रास्ता कोई रोक नहीं सकता, वह किसी कष्ट, दु:ख विघ्न बाधा से घबराता नहीं उसके कदम आगे ही आगे बढ़ते रहते हैं। वह जो चाहे प्राप्त कर लेता है तभी तो किसी कवि ने कहा है।

जो जागत है सो पावत है।
जो सोवत है सो खोवत है।।

पता—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब,
गुरुदत भवन, किशनपुरा चौक,
जालन्धर शहर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

ब्रह्मर्षि-विरजानन्द-स्तुतिपञ्चकम्

—डॉ. नारायणमुनिश्चतुर्वेदः

(1)

यो वैराग्यव्रती विरक्त जनता जीवातवे जीवितः ।
विज्ञै र्जिन स्वर्गमार्गमहिमा, सङ्गीतसङ्गी भवन् ॥
सङ्गीत-प्रगतौ प्रगाढ-रुचिभिर्यो गीयतेऽहर्निशम् ।
सोऽयं वीरजवीर्यजोऽपि विरजानन्दोऽरजा राजताम् ॥

(2)

सूर्यो व्याकरणस्य पुण्यमणिभिः पूर्णो महासागरः ।
अक्षीणः खलु लक्ष्यकक्षकुहरे तीर्णश्च शास्त्रार्णवे ॥
उद्गीर्णो व्यसनैरसद्-गुणगणैर्दुःखैर्निगीर्णो न यः ।
वन्द्यो वीरजनाग्रगण्यगरिमा सर्वत्र संस्तूयते ॥

(3)

अज्ञानाश्रितग्रन्थमन्थनपथः शैथिल्यमापादयन् ।
विज्ञानार्जित वेदवादवदनं विद्वज्जनैर्वर्धयन् ॥
दुर्विद्यादरदत्तमत्तहृदयं दुर्गं द्रुतं ध्वंसयन् ।
धीरो धीर बुधेषुवृद्धविरजानन्दोऽमदो मोदताम् ॥

(4)

यद् धैर्यं विबुधेषु नैव रुरुधे बोधोद्धतं साधितम् ।
यत्तेजो जवनं समूर्जितगुणं जज्ञे जनैः स्फूर्जितम् ॥
यत् सर्वोन्नतसाहसं श्रुतिगतं सद्भिः सदा कीर्त्यते ।
तत्तन्नातिमनः प्रमोद सदनं मान्यैर्मतं मन्यताम् ॥

(5)

अभ्याशं समुपेत्य यस्य स दयानन्दो महर्षिर्महान् ।
सञ्जातो जगतीतलेऽत्र विपुले वेदार्थ सिद्ध्यै सुधीः ॥
यद्वृत्तेत निर्वर्तितं प्रतिपदं व्याप्तं महत्तामसम् ।
दुर्ज्ञानम् गुरुरस्य विज्ञविरजानन्दो महान् शोभताम् ॥

पता — गुरुकुल महाविद्यालयः, ज्वालापुरस्थः

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

विप्र बनने के लिए गिरि और नदी का संग करो

—श्री मनोहर विद्यालङ्कार

उपह्वरे गिरीणां संगथे च नदीनाम् । धिया विप्रो अजायत ।। ऋक् ८-६-२८

ऋषि:—वत्स: काण्व: । देवता-इन्द्र: । छन्द:-गायत्री ।

शब्दार्थ—

आधिदैविक—(गिरीणां उपह्वरे) पर्वतों की कन्दराओं (च) और (नदीनां संगथे) नदियों के संगम पर (काण्व वत्स:) ज्ञान और कर्म की साधना में निरन्तर रत व्यक्ति (धिया) अपनी प्रज्ञा और क्रिया (ध्यान, धारणा, समाधि) द्वारा (विप्र: अजायत) परमेश्वर की वाणी को सुनने में समर्थ मेधावी बन जाता है ।

आधिभौतिक—(गिरीणां उपह्वरे) पर्वत समपालक मेघ सदृश सुखवर्षक माता पिता के आश्रय में और (नदीनां संगथे) गुरुओं की संगति में रहने वाला व्यक्ति (धिया) अपनी बुद्धि और कर्मों के द्वारा (विप्र: अजायत) समाज का पालक, पूरक और प्रेरक बन जाता है, मुख्य पदों पर पहुँचता है ।

आध्यात्मिक—(गिरीणां उपह्वरे) पर्वत में स्थित सुषुम्ना के चक्र-गह्वर में (च) और (नदीनां संगथे) नाड़ियों के संगम भ्रुकुटि में अथवा अनाहतनाद करने वाली नाड़ियों के सङ्ग सङ्ग (धिया) ऋतम्भरा प्रज्ञा तथा योग क्रिया द्वारा (काण्व: वत्स:) निरन्तर प्रयत्न शील साधक (विप्र: अजायत) अपनी कमियों को पूर्ण करके इन्द्र का सखा बन जाता है । अथवा इस साधक की (धिया) ऋतम्भरा प्रज्ञा में (विप्र:) विशेष रूप से पालन पूरण करने वाला परमेश्वर (अजायत) प्रकट हो जाता है ।

निष्कर्ष—माता पिता का संरक्षण और गुरुओं का सहवास मनुष्य की कमियों को दूर करके पूर्णता की ओर ले जाता है । इस लिये इन तीनों देवों का सदा आदर और आज्ञा पालन करके, इन्हें सन्तुष्ट रखना चाहिये । **मातृदेवो भव, पितृ देवो भव, आचार्यदेवो भव । पितरि प्रीयमाणे तु प्रीयन्ते सर्वदेवता: ।**

ध्यान, धारणा समाधि आदि योग क्रियाओं के लिये अथवा परमेश्वर का प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिये पर्वतों के उपह्वर और नदियों के संगम जैसे प्राकृतिक सौन्दर्य से समाकुल और जनाकुल कोलाहल से शून्य प्रदेश ही उपयुक्त स्थान हैं ।

मनुष्य को अपने समाज की पालना करने और प्रेरणा देने के लिये पहले अपने माता पिता और गुरुओं की संगति में रहकर सिद्धान्त और व्यवहार की शिक्षा ग्रहण करके स्वयं मेधावी बनना चाहिये । आत्म निर्भर होना चाहिये । तभी वह सच्चे अर्थों में इन्द्र का कृपा पात्र या सखा बन सकता है ।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि देवता, छन्द शब्दों के अर्थों का समन्वय मन्त्रार्थ के साथ इस तरह किया जा सकता है कि—जो व्यक्ति ऊपर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उठने के लिये, कण कण करके ज्ञान संचय में लगा रहता है और ज्ञान प्राप्त करके पग पग पर उसका उपयोग करता है, (उत्तान शयो वत्स: ।) वत्स और काण्व बनने के लिये—गायत्री का जप करता है अर्थात् अपना जो उद्देश्य बनाया है, तदनुकूल प्रयत्न और आचरण करता है; इन्द्र (ऐश्वर्य शाली) परमात्मा या समर्थ पुरुष, विघ्न बाधाओं से उसकी रक्षा करके उसके उद्देश्य को पूरा करते हैं; वह इन्द्र का सखा और कृपा पात्र बनता है। समय आने पर दूसरों के लिये इन्द्र की तरह सहायक और कृपालु बन जाता है।

अर्थ पोषक प्रमाण—

वत्स:—उत्तानशयो वत्स: । वै० वत्सो वां मधुम द्वचोऽशंसीत् । ऋक् ८-८-११ । वदतीति वत्स: । उणादि । शिष्य को उन्नति की कामना से विनीत होना चाहिये।

काण्व:—कण् शब्दे गतौ च, कण कण करके ज्ञान प्राप्त करके पग पग पर उस का उपयोग करने वाले पिता की सन्तान या गुरु का शिष्य।

गिरीणाम्—गिरि: मेघनाम । नि० १-१०. गिरि: पर्वत: । पर्वत व मेघ के समान पालक वर्षक।

नदीनाम्—नद् भासार्थ: भाषार्थो वा । पा० टुनदि समृद्धौ । काशकृत्स्न, उपदेश (ज्ञान) देकर समृद्ध बनाने वाले गुरुओं के।

विप्र:—वपति धर्ममिति मेधावी । उणादि २-२९ । विप्र: मेधाविनामा । नि० ३-१५, वि+प्र (प्रा प्रपूरणे) विशेषेण पूरयति, विप् प्रेरणे-प्रेरयति वा । विप्र:—मेधावीव सर्वं वेत्ता परमेश्वर: । स्वा० दया० ४-२६-१ त्वं विप्रस्त्वं कवि: ऋक् ९-१८-२ । विप्राच्छेते यच्छुश्रुवांस: । तै० सं० २-५-९-२ । उपह्वरे—Solitary or Private place.

धिया—धी: प्रज्ञानाम । नि० ३-९ ऋतंभरा प्रज्ञा । धी: कर्म नाम । नि० २-१ इसी प्रकार ऋक् ८-३१-१० में माता पिता गुरु और सदा साथ रहने वाले सर्व व्यापक परमात्मा से प्राप्तव्य शान्ति और सुख की प्रार्थना की है :—**आ शर्म पर्वतानां वृणीमहे नदीनाम् । आ विष्णो: सचाभुव: ।।**

इसी प्रकार २-३४-११ में 'नदीनाम्' का अर्थ सेना करने से ठीक संगति लगती है। **नि पर्वता अद्मसदो न सेदु: ।** ऋक् ६-३०-३ में अद्म सनोतीति—अन्न देने वाले पर्वतों से उपमा दी है। इसलिये पर्वतानाम् का अर्थ माता पिता किया जा सकता है।

पता—522, ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली।

उत्तिष्ठत सन्नह्यध्वम्
उदारा: केतुभि: सह ।
सर्पा इतरजना रक्षांसि
अमित्रान् अनुधावत ।।

अथर्व **11-10-1**

□ □ □

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

साधना-पथ पर

—प्रा. रमाकान्त दीक्षित
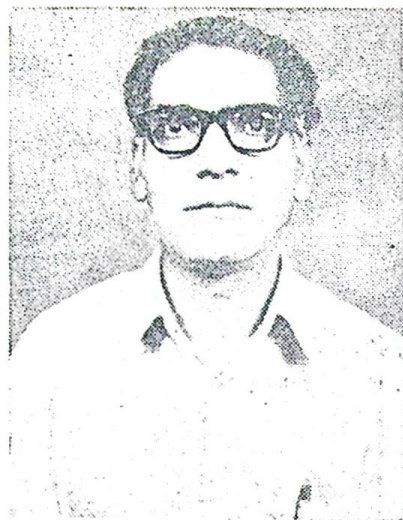
जग में सदा साधना-पथ पर, मिलता विष का प्याला।

खेवनहारा अगर न जूझे, नहीं किनारा मिलता,
नीरस पतझर को झेले बिन, फूल न प्यारा खिलता,
बादल भी तो तड़प-तड़प कर, जल की गागर लाता,
बहता अगर पसीना तन से, सुख-सागर लहराता।

धीरज धर कर आगे-आगे बढ़ता है मतवाला।
जग में सदा साधना-पथ पर, मिलता विष का प्याला।।

दीप रात के गहरे तम से, रोज लड़ा करता है,
यौवन देखे जहां रुकावट, वहीं अड़ा करता है,
पत्थर से टकरा निर्झर की, बहती रहती धारा,
उठकर, गिरकर, गिरकर, उठकर, छूती लहर किनारा,

श्रम है हर मानव के मन का, सबसे बड़ा शिवाला।
जग में सदा साधना-पथ पर, मिलता विष का प्याला।

बिना त्याग के कुछ गुणिजन के, सभा न कोई सजती,
बिना छेदवाली छाती से, नहीं बांसुरी बजती,
बीज धरा में गल जाने पर, अकुर फूटा करता,
ज्ञान गिरा से दानवता का, घेरा टूटा करता,

युद्ध क्षेत्र में लड़ने से ही, यश का मिला दुशाला।
जग में सदा साधना-पथ पर, मिलता विष का प्याला।

अभ्यासी का तन-मन निश-दिन, निखरा कई गुना है,
सोना सहकर पीर आग की, कंचन खरा बना है,
स्वांति-बूंद सीपी में पड़कर, सच्चा मोती बनती,
रूई धुने जाने पर ही तो, तन पर चादर तनती,

पाठ पढ़ाती दु.ख-सुख के है, जीवन की जो शाला।
जग में सदा साधना-पथ पर, मिलता विष का प्याला।

—कानोडियों की गली, डा. मुरारी मार्ग,
भिवानी-135201 (हरियाणा)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

यज्ञ-विज्ञान

—श्री पं. वीरसेन, वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य

1. वेद विद्या एवं विज्ञान का भंडार है—

वेद में विविध प्रकार का विज्ञान है। यह विज्ञान यज्ञों के माध्यम से हमारे देश में प्रचलित था और उसका अवशेष किसी न किसी रूप में आज भी प्रचलित है। महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने स्पष्ट घोषणा की कि वेद में सब ज्ञान विज्ञान बीज रूप से है और यज्ञ को रूढ़ीवादी गर्त से निकाल कर विज्ञान के सिंहासन पर बैठा दिया। आज के समय में यज्ञ की वैज्ञानिक उपयोगिता का अनुसन्धान योरोप और अमेरिका में होने लगा। और उसके सुपरिणाम अनेक क्षेत्र में प्रतीत होने लगे हैं।

2. यज्ञ कार्य वैज्ञानिक है—

वेद में यज्ञ को विश्वभिषक् कहा है। अर्थात् यज्ञ द्वारा समस्त विश्व को स्वास्थ्य, आयु, जीवन प्राप्त होता है और समस्त रोग तथा रोगों के कारण तत्वों का प्रदूषणों का निवारण भी होता है। अत: किस परिस्थिति में कौन सा यज्ञ, किस प्रकार करें इसका विचार करने से ही यज्ञ विज्ञान का विकास करने में सफलता प्राप्त होगी। यज्ञ के 3 प्रधान अंग हैं: 1. संकल्प, 2. मन्त्र और 3. आहुति। संकल्प के बिना यज्ञ नहीं हो सकता। मन्त्र के बिना भी यज्ञ नहीं हो सकता, और अग्नि में हव्य पदार्थों की आहुति दिये बिना भी यज्ञ नहीं हो सकना। इन तीनों का समन्वित कार्य यज्ञ है। संकल्प होने पर ही यज्ञ संभव है। यही यज्ञ का आधार स्तम्भ हैं। वेद कहता है—आनो **भद्रा: क्रतवोयन्तु विश्वत:**। यजुर्वेद 25/14: अर्थात् कल्याणकारी, यज्ञ करने के विचार सब ओर से प्राप्त हों। जब विचारों में निमग्न चित्त उसे करने के लिये उद्यत हो जाता है तो वह संकल्प हो जाता है।

3. यज्ञ कार्य में मन्त्र की प्रधानता—

लौकिक व्यवहार में मन्त्र का अर्थ विचार भी है, परन्तु यज्ञ की परिभाषा में इसका अर्थ वेद के ही मन्त्रों से प्रधान रूप ग्रहण किया जाता है। मन्त्र ध्वन्यात्मक होते हैं। ध्वनि का प्रभाव जड़-चेतन जगत् पर अवश्य होता है। लोक में प्रत्यक्ष दृष्ट है कि विकृत ध्वनियों के उच्चारण एवं प्रसारण से मानसिक विकृतियां उत्पन्न होती हैं। वीररस की ध्वनियों से वीरता का सञ्चार, प्रेमरस की ध्वनियों से प्रेम, शान्त रस की ध्वनियों से शान्ति, शोकभावपूर्ण ध्वनियों से शोक का प्रसारण होता है और प्राणियों के मन तत्व पर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभाव करता है। मन के प्रभावित होने पर तदनुरूप वृत्तियों की उत्पत्ति होती है और वृत्तियों के अनुरूप ही कर्मों की प्रवृत्तियां उत्पन्न होती हैं। अतः शुभ विचार पूर्ण मन्त्रों से शिव, कल्याणकारी कर्मों की विश्व में वृद्धि, समृद्धि, वाहुल्यता और व्यापकता अवश्यम्भावी है।

4. मन्त्र छन्दोमय हैं—

वेद का प्रत्येक अक्षर, चरण, पंक्ति व सम्पूर्णमन्त्र छन्दोमय है। उनमें सर्वशक्तिमान् परमात्मा की गुप्त शक्ति व सामर्थ्य निहित है जो यज्ञ कार्य में क्रियाशील हो जाती है। छन्द नियत अक्षर या मात्राओं में निबद्ध होते हैं। नियत अक्षरबद्ध छन्दों के नियत स्वरों के ध्वन्यात्मक आवर्तन से ध्वन्यात्मक मण्डल की उत्पत्ति होती है। तथा उस मन्त्र के पुनः पुनः आवर्तनक या जप से चाहे वह जप मानसिक हो या ध्वन्यात्मक, उसका मण्डल उत्तरोत्तर घनत्वपूर्ण तथा गतिमय होकर विशालता को भी प्राप्त होता है जिससे प्राणियों में उससे स्वाभावतः वृत्तियों एवं कर्ममय प्रवृत्तियों का प्रवाह चलने लगता है। अतः यज्ञ में सकल्प एव तदनुकूल मन्त्रों की पुनः पुनः आवृत्ति से मन्त्र का प्रभाव सतेज होता जाता है और छन्दात्मक मण्डलों की सृष्टि होने लगती है।

5. छन्दात्मक मण्डलों का निर्माण—

छन्द यद्यपि प्रधान रूप से 7 हैं परन्तु इन सातों छन्दों को भी प्रमुखरूप से तीन विभागों में विभक्त किया है। ये तीन विभाग ही भूः भुवः स्वः हैं। छन्द परिभाषा में ये गायत्र मण्डल, त्रिष्टुप् मण्डल, और जागत मण्डल हैं। मण्डलात्मक प्रभावों की वृद्धि के लिये-गायत्रं छन्दआरोह-, जागतं छन्दआरोह - अथवा - गायत्रेणत्वा छन्दसा सादयामि, त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा सादयामि, जागतेन त्वा छन्दसा सादयामि - अथवा - गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि, जागतेन त्वा छन्दसा मन्थामि - की प्रक्रिया का यजुर्वेद में अनेक स्थानों पर उपदेश है। इस प्रक्रिया के द्वारा पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक में अपने मनोवांछित विचारों की व्याप्ति की जाती हैं।

6. मण्डलों के दैवततत्त्वों एवं प्राणी को क्रियाशील एवं शक्ति सम्पन्न करना—

इन मण्डलों के अग्नि, वायु एवं सूर्य देवतत्व हैं। इनको भी सतेज करने के लिये अग्नि को दूत बना कर - **अग्निं दूतं पुरोदधे**—यजुर्वेद 22/17। यथार्थ अग्नि की स्थापना अपने सम्मुख भूर्भुवः स्वः मन्त्र से त्रिलोकी को प्रभावित करने के लिये करनी पड़ती है। पुनः उक्त प्रवृद्ध यज्ञाग्नि में तीनों महाव्याहृतियों से उनके देवत तत्वों के साथ उनसे संबन्धित प्राण, अपान और व्यान रूपी विश्व प्राणों के लिये आहुतियां दी जाती हैं। अर्थात् यज्ञ द्वारा समस्त ब्रह्माण्ड या त्रिलोकी के प्राणों को क्रियाशील, शुद्ध एवं पुष्ट किया जाता है। इस लिये वेद ने यज्ञ को विश्वधा असि (यजुर्वेद 1/21) कहा है अर्थात् यज्ञ संसार का धारण पोषणकर्ता है। यही यज्ञ का प्रधान लक्ष्य है। जिस यज्ञ में महाव्याहृतियों, उनके देवत तत्वों और उनके विश्व प्राणों के लिये आहुति नहीं, वह यज्ञ अपूर्ण ही है।

7. यज्ञ का त्रिलोकी में गमन —

यज्ञ की यह प्रत्यक्ष एवं अत्यन्त गूढ़ स्थिति है कि दृष्ट, अदृष्ट एवं अनुमान अर्थात् सूक्ष्म एवं व्यापक रूप से समस्त विश्व में व्याप्त हो जाता है। यजुर्वेद अध्याय 5 के 15 वें मन्त्र में यज्ञ की इस स्थिति को प्रकट किया है वहां कहा गया है कि इदं विष्णुः विचक्रमे—अर्थात् यज्ञ प्रारम्भ होने पर वह यज्ञ क्रमशः उत्तरोत्तर गति करता हुआ त्रेधानि-देधे पदम्-पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक अपने स्थान को प्राप्त करता है अर्थात्

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थिति को प्राप्त होता है। —समुदस्य पांसुरे— अर्थात् यज्ञ की यह स्थिति गायत्र मण्डल, त्रिष्टप् मंडल, आगत मण्डलों में या भू-भुर्व: स्व: लोकों में अत्यन्त गूढ़ गुप्त एवं अनुमानगम्य है, विज्ञानगम्य है तात्पर्य यह है कि यज्ञ को केवल धूम की ऊंचाई से नहीं मापा जा सकता, वायु की ऊंचाई से भी नहीं जाना जा सकता, उसकी व्यापकता विद्युत्, सूर्य, रश्मि और प्रकाश के समान व्यापक स्थिति को समझकर जानी जा सकती है।

8. यज्ञ से सुख की प्राप्ति—

यज्ञ किये जाने पर यद्यपि वह तीनों लोकों में व्याप्त हो जाता है परन्तु वह उन स्थानों से पुन: शक्तिशाली होकर हमें सुख प्रदान करता है। ऐसा वेद में स्पष्ट बताया है जैसा कि—**यज्ञो देवानां प्रत्येतिसुमनम्**। यजुर्वेद अध्याय 8, मंत्र-4। अर्थात् विद्वानों द्वारा आयोजित यज्ञ **सुख** को लाता है और **आदित्यासो भवतामृडयन्त:**—अर्थात् वह सूर्यादिलोक एवं सूर्यप्रकाश में स्थित होकर हम सभी को सुख प्रदान करता है। इसी प्रकार-**पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णापुनराचत**। यजु. 3/49। अर्थात् यज्ञ में भरकर आहुति देने से वह और अधिक पूर्ण होकर प्राप्त हो जाती है। किस प्रकार से प्राप्त हो जाती है उसके लिये मन्त्र के द्वितीय चरण में उदाहरण यह प्रस्तुत किया है कि जैसे बाजार में खरीदते हैं वैसे ही यज्ञ के द्वारा भी सुखों को खरीदते हैं। अर्थात् यज्ञ से सुखों की प्राप्ति प्रत्येक क्षेत्र में होती है अत: प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में यज्ञ का अनुष्ठान अवश्य करना चाहिये।

9. यज्ञ का महान् फल विश्व में माधुर्यता का प्रसार—

यजुर्वेद अध्याय 13 के 27 से 29 वें में बताया है कि यज्ञ के सम्पन्न होने से माधुर्य गुणयुक्त अर्थात् अनुकूल वायुओं का प्रवाह चलने लगता है। नदियों में, झरनों में **मधुर रस** का संचार होता है और अन्न वृक्ष, वनस्पति, वनादि विष रहित, रोग रहित होकर सब मधुयुक्त, जीवनदायी हो जाती हैं। यज्ञ करने से रात्रि और दिन, सुन्दर उषा ये सब **सुखकारी** हो जाती हैं। पृथ्वी के कण-कण में, धूलि में, मधुरता उत्पन्न होने में, जो विशृंखलता है वह नष्ट होकर परस्पर आकर्षण से रेगिस्तान भाग ऊसर भूमि में परिवर्तित होने लगता है और रेगिस्तान स्थिति नष्ट होने लगती है तथा द्युलोक जो अपने अतिताप से पार्थिव शक्ति का ह्रास करता है वह भी माधुर्यगुणयुक्त, प्रिय एवं अनुकूल शक्तियों से पिता तुल्य अर्थात् पालक और जनक शक्ति युक्त बन जाता है। इस प्रकार विश्व की वनस्पतियां अन्न, वृक्ष, फल, मूलकन्द एवं वन तथा समस्त पर्यावरण मधुर बन जाता है—सौर शक्तियां भी माधुर्यगुणयुक्त, अनुकूल हो जाती हैं और गौ आदि पशु भी माधुर्य गुणयुक्त अमृतमय दिव्य दूध के देने वाली हो जाती हैं अत: यज्ञ से समस्त पर्यावरण अपने अनुकूल बन जाता है ऐसा सुन्दर यज्ञ का सुगम विज्ञान है।

10. यज्ञ से फल प्राप्ति का एक अद्भूत प्रकार—

यजुर्वेद अध्याय 2, मन्त्र 25 में बताया है कि जगती छन्द के मन्त्रो से यज्ञ करने पर यज्ञ द्युलोक में पहुंचता है। त्रिष्टुप् छन्द के मन्त्रों से यज्ञ अन्तरिक्ष में पहुंचता है। और गायत्री छन्द के मन्त्रों से यज्ञ पृथ्वी में फैलता है। पुन: इन्हीं स्थानों से वह और सूक्ष्म एवं विभक्त होकर सबको फल प्रदान करता है। जगती छन्द के मन्त्रों से किया यज्ञ द्युलोक पर सूर्यप्रकाश को प्राप्त होकर जगत् को तृप्त करता है। अन्तरिक्ष में पहुंचकर वहां से सब विभाग को प्राप्त होता है तो वायु और वर्षाजल की शुद्धि करता है और

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृथ्वी पर पहुंचा यज्ञ विविध प्रकार से सुख की वृद्धि करता है। अर्थात् यज्ञ जब पृथ्वी पर किया जाता है तो उत्तरोत्तर आरोहण क्रम से सूक्ष्म तो हो जाता है, परन्तु उन तीनों स्थानों से और भी सूक्ष्म एवं सामर्थ्यवान् होकर एक नये पर्यावरण का, जीवनीय पर्यावरण का निर्माण करता है। इसी को प्रकारान्तरा से यजुर्वेद अध्याय 8, मन्त्र 60 में निम्न प्रकार कहा है—कि यज्ञ द्युलोक में पहुंचकर दिव्य भोगों को प्रदान कराता उससे हमें द्रविण, धन, सुख ऋत्वनुकूलभोग प्राप्त होवें। यह यज्ञ अन्तरिक्ष मण्डल और मनुष्यों को प्राप्त होकर उक्त फल प्रदान करता है। पृथ्वी और ऋतुओं को प्राप्त होकर यज्ञ उक्त सुख प्राप्त कराता है अतः यज्ञ जहां कहीं भी किसी लोक में पहुंचता है वहां से हमारा कल्याण ही होता है। अर्थात् यज्ञ करने से पदार्थ नष्ट नहीं होते और न क्रिया ही निष्फल होती है—अपितु सब ओर से कल्याण ही होता है।

11. आहुति शक्ति—

अग्नि हव्य वाहक है अतः इच्छित फलों की प्राप्ति के लिये हव्य पदार्थों का ज्ञान आवश्यक है। रोग, प्रदूषण, विकार आदि निवारक कार्यों में किन हव्य द्रव्यों से लाभ होता है, वायुमण्डल को पुष्टि किन द्रव्यों से होती है, अतिवृष्टि, अनावृष्टि किन द्रव्यों से दूर होती है इत्यादि हव्य पदार्थ विज्ञान का ज्ञान आवश्यक है। तथा यज्ञ कार्य मन्त्र सामर्थ्य से विशेष फलदायक होता है। यज्ञ का विज्ञान, यज्ञ पद्धति इष्ट कार्यानुकूल कर्मकाण्ड तथा हव्य पदार्थों के ज्ञान पर आश्रित है। बिना इस ज्ञान के यज्ञ करने मात्र से इष्ट फल प्राप्ति संभव नहीं। प्राचीन ऋषि महर्षि वेदों से अनेक प्रकार के यज्ञ करते थे और उनसे फल प्राप्ति होती थी इसलिये उन्होंने कहा—**सर्वेभ्यो हि कामेभ्यो यज्ञ प्रयुज्यते**—अर्थात् यज्ञ की सब कामों के लिये उपयोगिता है और प्रधानता है।

12. यज्ञों का विभाजन—

यज्ञों का विभाजन निम्न प्रकार है—

1. कालकृत विभाग से संबंधित, 2. व्यक्ति संबधित, 3. राष्ट्र संबंधित, 4. सामयिक आवश्यकतानुसार। किसी यज्ञ से किसी भी फल की प्राप्ति मान लेना यज्ञ विज्ञान का तिरस्कार करना है, विविध प्रकार के यज्ञों में सामान्य प्रणाली तो आधारभूत एक हो सकती है परन्तु प्रधान याग में तो मन्त्र भेद एवं क्रिया भेद तो पृथक् होते हैं।

कालकृत विभाग से संबंधित यज्ञों में दैनिक अग्निहोत्र सायं, प्रातः की कालसंधियों में पक्ष यज्ञ, अमावस्या और पूर्णिमाओं में, चातुर्मास्य याग, अयनयाग, सांवत्सरिक याग, पर्वयाग, नवान्नयाग ये सब कालकृत संधियों से संबधित यज्ञ हैं। इससे प्राकृतिक पदार्थों में शक्ति की वृद्धि एवं अपनी आध्यात्मिक शक्तियों की वृद्धि होती है।

13. व्यक्ति, राष्ट्र या कामना संबंधित यज्ञ—

इन यज्ञों का आयोजन व्यक्ति विशेष के आयु से संबधित होता है। जैसे विवाह संस्कार, यज्ञोपवीत, वेदारंभ गर्भाधानादि षोडश संस्कारार्थ यज्ञ होते हैं। ये व्यक्तियों से संबधित हैं तथा राष्ट्र संबधित यज्ञ राजसूय, अश्वमेधादि हैं। व्यक्तिगत कामना एवं सामूहिक कामनाओं की पूर्ति के लिये किये जाने वाले यज्ञ काम्य यज्ञ हैं व्यक्ति कामना, रोग कष्ट, निवारण, बल ऐश्वर्य प्राप्ति निमित्त काम्य यज्ञ होते हैं और सामूहिक कामना जैसे वृष्टि कराने, अतिवृष्टि निवारणार्थ आंधी, तूफान आदि की शान्त्यर्थ, सामान्य एवं विशिष्ट स्थानों में प्रवृद्ध प्रदूषण निवारणार्थ सर्वसौख्यप्रद यज्ञ आवश्यकतानुसार भिन्न-भिन्न

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रकार के यज्ञ कल्प पद्धति से होते हैं तभी उनका लाभ होता है। अर्थात् श्रोतयागों का फल अलग है। यह स्पष्ट समझना चाहिये। प्राकृतिक प्रदूषण, वैचारिक प्रदूषण तथा वैज्ञानिक, औद्योगिक, रासायनिक प्रदूषण इन सभी की शान्ति यद्यपि यज्ञ से ही सम्भव है तथापि उनका आयोजन यज्ञ विज्ञान पद्धति से ही कल्पना पूर्वक होगा तभी सफलता होगी।

14. यज्ञ का प्रधान हव्य द्रव्य-घृत—

यज्ञ के हविद्रव्यों में घृत ही प्रधान है। यदि घृत गौ का हो तो सर्वाधिक श्रेष्ठ है और प्रभावकारी है। घृत के एक नाम आज्य का अर्थ है—आ समन्तात् लोकान् जयति अनेन—अर्थात् इसके द्वारा लोक-लोकान्तरों के प्रदूषण रूपी प्रभावी तत्वों पर, आंधी, तुफानों पर विजय प्राप्त होती है इसलिये घृत की आहुतियों से समस्त पर्यावरण का शोधन होता है। घृत नाम इसका इसलिये है कि यज्ञ में इसकी आहूतियों को विशेष प्रमाण में देने से वर्षा तथा कामनाओं की पूर्ति करता है इससे दीप्ति होती है और वैद्युतिक नभोमण्डल में व्याप्त विद्युत् शक्ति को प्रदीप्त करता है। घृत का नाम सर्पि भी है। जब यह यज्ञ में प्रयुक्त होकर अन्तरिक्ष में गति करता है तो इसकी गति सर्प की गति के सदृश तीव्र होती है और अपने साथ हव्य द्रव्य के अंश को भी विविध लोकों में ले जाता है तेल आदि या भैंस, बकरी आदि के घृत में तीनों लोकों में फैलने की शक्ति नहीं है। केवल गायत्र मण्डल तक ही व्याप्ति की सामर्थ्य गौ के अतिरिक्त घृत एवं तेलों में है।

15. अन्य हवि द्रव्य—

वेद में घृत के अतिरिक्त हव्य का प्रयोग भी करने का आदेश है। अतः सुगन्धित पदार्थ, रोगनाशक पदार्थ पुष्टिप्रदाता, माधुर्य प्रसारक द्रव्य, जीवन प्रदाता द्रव्यों की हवि प्रदान करनी चाहिये अथर्ववेद में लिखा है कि जिन औषधि, वनस्पतियों का सेवन गौवें करती हैं, वराह और नकुल अर्थात् नेवला करता है उन सब को यज्ञ में प्रयुक्त करने से रोग की असाध्य स्थिति नष्ट होती है और जीवन तथा आयु प्राप्त होती है।

पता—वेद सदन, महारानी पथ,
इन्दौर-452 007

इष्टान्भोगान्हि वो देवाः, दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्योयो भुङ्क्ते स्तेन एव सः॥
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥
श्रीमद्भगवद्गीता 1/3-12 व 13॥

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

। ओ३म् ।

जिसके जलने से भोर हुआ

—श्री लाखन सिंह भदौरिया,
भोजपुरा मैनपुरी (उ. प्र.)

जिसके जलने से भोर हुआ,
जिसके बुझने से रात हुई।
वह दयानन्द थे, ज्ञान-सूर्य,
जिसके आने से प्रात; हुई।

वह दयानन्द का युग प्रभात,
जो तपा, सतत आनन्द लिए,
उतरी धरती पर प्राण-प्रभा—
उस वेद विभा का छन्द लिए।
असुरों को स्वर का ज्ञान हुआ।
स्वर-सांस खिली जलजात हुई।।

गुरु-भक्ति जगी नव शक्ति लिए,
वर्णाश्रम-धर्म सप्राण हुए।
'सत्यार्थ-प्रकाश' मिला ऐसा—
ऋषि-ज्ञान, विहान, प्रमाण हुए।
अज्ञता, रूढ़ियां क्षार हुई।
मूढता विदा बारात हुई।।

पुलकी ऋषियों की दिव्य धरा—
पितरों को प्राण दान पाया।
देवों के घर दुन्दुभी बजी—
भू ने वैदिक, विहान पाया।
तप-त्याग, तपोवन, फूल उठें—
द्यौ-अन्तरिक्ष से बात हुई।

असतो मा, गाते हुए जगे,
तमसो मा ज्योतिर्गमय छन्द।
धरती का पीकर काल कूट—
बाँटते दया - आनन्द - कन्द।
महिमामय बना मनुजता को।
मानव क्षमता अवदात हुई।

(शेष पृष्ठ 39 पर)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

प्रभु दर्शन की पवित्र लड़ी—

भक्ति ?

—महात्मा प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी

संसार में जब मानव कृत्रिमता, शृंगार, अधर्म, पाप, असत्य, भय, चटक, मटक, और सांसारिक व्यवहार से ऊब जाता है। तो प्रभु के आंचल की शरण चाहता है। क्योंकि उसकी शरण में "सुख" है, "शान्ति" है और "आनन्द" है। परमात्मा की शरण का मूल्य कोई विरला ही समझता है। जैसे बहरा कान का, गूंगा वाणी का, और अन्धा आंख का मूल्य समझता है। जीवन को श्रेष्ठतम और शान्तिमय बनाने का सब से सुन्दर और पवित्र उपाय "प्रभु भक्ति" ही है।

भक्ति एक आध्यात्मिक विवाह है। जैसे विवाह का अधिकार ब्रह्मचारी को ही है, व्यभिचारी को नहीं। ठीक यही बात भक्त पर लागू होती है, क्योंकि प्रभु भक्ति ब्रह्मचारी ही कर सकता है, अन्य नहीं। विवाह का हेतु सन्तान है। इसी लिये भक्त कहता है—कि "शान्ति" मेरी पत्नी, "ज्ञान" मेरा पिता, "सत्य" मेरी माता, "धर्म" मेरा भाई, "क्षमा" मेरा पुत्र, "दया" मेरा सखा और पितामह ईश्वर है। यह सारा परिवार नहीं तो और क्या है ? परन्तु अब उसका कर्तव्य परिवार पूजा नहीं, ईश्वर और उसके प्राणियों की पूजा है।

ईश्वर पूजा के स्थान पर बहुत लोग मूर्ति पूजा भी करते हैं। मूर्ति और पूजा का कोई भी विरोधी नहीं, परन्तु मूर्ति और पूजा में से यदि "और" निकाल दिया जाये, तथा उन्हें मिला दिया जाये, तो विरोध प्रारम्भ होता है। मूर्ति और पूजा दोनों को अलग रखना या मिला देना वैसा ही है जैसा दूध और पानी को अलग रखना या मिला देना। इसका विरोध रहीम, कबीर, गुरु नानक देव और महर्षि दयानन्द आदि ने किया। फिर मिलावट की बुराई तो सभी जानते हैं।

बन्धुओ ! यदि मूर्ति ही ईश्वर होती तो हमारे ऋषि, धारणा-ध्यान और समाधि द्वारा प्रभु दर्शन का उपदेश न देते और न ही इतने संयमी बनने का कष्ट उठाते। यदि इन्द्रियां ही "इन्द्र" को जान सकती होतीं, तो कभी के प्रभुदर्शन हो चुके होते। प्रभुदर्शन न होने में कारण; हमारा गलत मार्ग चयन है। क्योंकि इन्द्रियों के विषय भौतिक हैं, आध्यात्मिक नहीं। ईश्वर का विषय आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं। अतः हम समझ गये "ईश्वर" "आत्मा" का विषय है, इन्द्रियों का नहीं। अब स्पष्ट हो गया, "ईश्वर" इन्द्रियों से नहीं,

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आत्मा से ही जाना जाता है। अतः हमारी इतनी बात मान, उसे आत्मा से पहचान।

जिस प्रकार से कुशल रथवान् खराब मार्ग को छोड़ कर, चाहे मार्ग लम्बा भी हो, अच्छे मार्ग से जाता है। वैसे ही भक्त इस शरीर रूपी रथ को जिसके इन्द्रियां रूपी घोड़े हैं, उनको सुमार्ग से ले जाता है। क्योंकि उसका मन 'सुमन" होता है। कई हमारे भाई ऐसा समझते हैं, कि जो भक्त हैं वह संसार छोड़ जाते हैं. कहां जाते है? गंगोत्री! गंगोत्री तो संसार में ही है। बन्धुओ! वह संसार में रहते हुए भी संसार में ऐसे ही लिप्त नहीं होते, जैसे मुख में जिह्वा और जल में कमल। बस यही है संसार छोड़ना।

भक्त का आदर्श भगवान् है। आदर्श का अर्थ है, उसके गुण, कर्म और स्वभाव को जानना धारण करना। भगवान दयालु, कृपालु, रक्षक, पालक, पोषक और प्रेरक है। अर्थात् अनन्त है गुण उसके, अनन्त है शक्ति उसकी, अनन्त है ज्ञान उसका, अनन्त है धन उसका, अनन्त है दान उसका, अनन्त है प्राणी उसके अर्थात् अनन्त का सब कुछ अनन्त है। अतः गुणों के गुणो को जीवन में उतारना ही भक्ति है। जो केवल भाण्ड के समान परमेश्वर का कीर्त्तन करता चला जाता है और अपने जीवन को सुधारता नहीं, उसकी भक्ति व्यर्थ चली जाती है।

भक्ति करने के लिये आहार, विचार, व्यवहार और आचार की शुद्धि रखनी पड़ती है, तथा संयमी रहकर परिश्रम करना ही 'तप" कहा गया है। परन्तु कई पंच अग्नि तप भी करते हैं, वे चारों और उपलों की अग्नि जलाकर सूर्य की धूप में बैठ जाते हैं, वास्तव में यह तप नहीं हैं। अपितु पंच अग्नि तप का अभिप्राय: यह है, कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार यह पांच अग्नियां सब में जल रही हैं, जो इनमें रहता हुआ भी नहीं जलता, वही सच्चा साधु है।

प्रायः लोग यह समझे बैठे हैं, कि भक्त की भक्ति से भगवान् प्रसन्न होते हैं, अर्थात् भगवान् खुशामदी हैं. किन्तु उन्हें समझ लेना चाहिये, कि ईश्वर ऐश्वर्यों का निर्माता और दाता हैं, यह ऐश्वर्य मानव को शरीर के लिये "सुख" मन के लिये "शान्ति" और आत्मा के लिये "आनन्द" के रूप में प्राप्त होते रहते हैं। तथा भगवान् एक ज्योति स्तम्भ (Light House) हैं, इसी लिये भक्त कहता—"तमसो मा ज्योतिर्गमय" अर्थात् मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। सूर्य कभी इच्छा नहीं करता, कि आप उसके प्रकाश से अवश्य लाभ उठाएं। यदि आप द्वार बन्द करके बैठेंगे, तो सूर्य का कुछ नहीं बिगड़ेगा, क्योंकि लाभ पहुचाना "सूर्य" की इच्छा नहीं, स्वभाव है। जल का स्वभाव जीवन देना है, न कि इच्छा करना कि लोग मुझे पियें। अतः भक्ति से लाभ उठाओगे, तो आपको ही लाभ होगा।

भक्त अन्याय, अत्याचार व्यभिचार, असत्याचार और अधर्म का विरोध करता है, क्योंकि प्रभु भक्ति ने बना दिया है "कुन्दन" उसको। अब उसके गुण कर्म और स्वभाव भगवान् से प्रेरणा लिये हुए हैं, अतः वह अपने में एक विशेष "आत्म बल" का अनुभव करता है, क्योंकि भक्ति में "शक्ति" होती ही है। बलवान् ही पापियों और पाखण्डियों के विरुद्ध आवाज उठा सकता है, कमजोर तो बोल भी नहीं सकता, बोले तो सुनता है कौन? सचमुच "दयानन्द" की सच्ची और तीव्र पुकार ने संसार को हिला दिया था। कई समझते हैं भक्त कर्म नहीं किया करते या नहीं करने चाहियें, परन्तु जब उनका जीवन आदर्श भगवान् क्रियावान् है, तो वे कैसे निकम्मे और आलसी बने रह सकते हैं? भक्त के

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर्म और कर्तव्य घटते नहीं, बढ़ते ही जाते हैं, क्योंकि अब उन्हें अपने परिवार का नहीं, प्रभु के विशाल परिवार का निर्माण और सुधार करना होता है।

भक्ति जीवन का अमृत सोपान है। भक्त का मार्ग दर्शन भगवान् स्वयं करते हैं, भक्त के भगवान् ही "सहारा" और "किनारा" होते हैं। अत: भक्त सत्य मार्ग पर चलता ही जाता है, जबकि सत्य मार्ग में महान् विघ्न आते हैं, प्रभु प्रेरणा से वे कल्याण मार्ग पर चलते ही जाते हैं। भक्ति का अर्थ केवल अपना कल्याण नहीं अपितु प्रभु से शक्ति पाकर जनहित करना है। "ईश्वर भक्ति में यदि समाज सेवा का भाव नहीं, तो वह साधना अधूरी है" इसका प्रमाण गुरु नानक देव, महर्षि दयानन्द, स्वामी राम तीर्थ, स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि के रूप में हमारे सामने है। प्रभु से प्राप्त की हुई शक्ति को बांटो! बांटो!! बांटो!!! क्योंकि भगवान् की धरती ने किसी को "अन्न" देने से इन्कार नहीं किया, भगवान के जल ने किसी को "जीवन" देने से इन्कार नहीं किया, भगवान की वायु ने किसी को प्राण देने इन्कार नहीं किया, भगवान् के सूर्य ने किसी को "प्रकाश" देने से इन्कार नहीं किया।

भक्त की पहचान बड़ी सरल है। उसकी आकृति में आभा प्रसन्न मुद्रा, तेजस्विता और बात करने में शान्ति का अनुभव, करुणा, नम्रता और दया की मूर्ति सी इत्यादि गुण उसमें अवश्य होंगे, क्योंकि भगवान् के ये गुण है, जो सङ्गति के प्रभाव से आ जाते हैं। जब एक आस्तिक भक्त प्रेमियों को "आनन्द" विभोर देखता है, तो उसे भी भक्ति की मस्ति चढ़ जाती है, प्रभु भक्ति का मस्ताना गा-2 कर सम्पूर्ण संसार को गान मय बना देता है, उसका मन लट्टू हो जाता है और वह सब कुछ भूल जाता है, आनन्द भी इसी लिये आता है। ओ भक्त! तुझे इससे भी अधिक आनन्द चाहिये, तो जहां तू सब कुछ भूला है, वहां तू अपने आपको भी "भूल" जा। भृकुटी में जहां तिलक या बिन्दी लगाते हैं, वहां प्राणों को स्थापन कर के "ओ३म्" का ध्यान करता जा। एक समय ऐसा आयेगा कि हृदय पटल पर ज्ञान और आनन्द की वृष्टि हुआ करेगी, और तू जीवन मुक्त हो जायेगा।

भक्ति में विचित्र शक्ति है, भक्त जलती हुई आग में कूद सकता है, बहती हुई नदी में छलांग मार सकता है, विष पी-2 कर अमृत दे सकता है। शेरों अर्थात् भयंकर वनों में रहना तो वह अपना कर्तव्य समझता है, उसे घबराहट! उसे चिन्ता! उसे अशान्ति नहीं होती, क्योंकि बच्चा बलवान् "पिता" के साथ रहते हुए कभी भयभीत नहीं होता, अपितु भक्त की भक्ति के प्रबल प्रवाह और प्रभाव से शेर और बकरी, कुत्ता और बिल्ली, सर्प और न्यौला एक साथ रहने लग जाते हैं। भक्त की प्रत्येक क्रिया में शान्ति की मंगल की, और परस्पर प्रेम की छाप होती है। बन्धुओं! भक्त की भक्ति में बहुत कुछ छुपा है, पा जाओ तो बहुत अच्छा है।

पता — आर्य कुटिया, धूरी।

☐ ☐ ☐

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

। ओ३म् ।

उद्बोधन

—सियाराम निर्भय,
(प्रधान—आर्य समाज, आरा—बिहार)
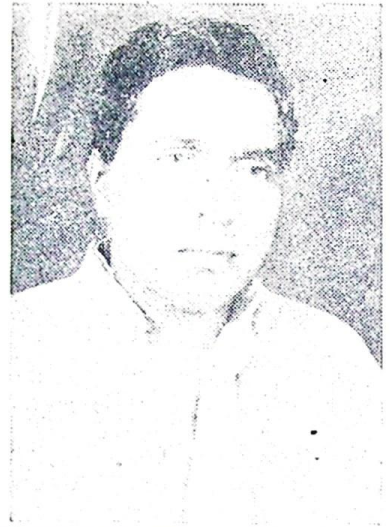
जाग जाग आर्य वीर !
जाग जाग जाग रे !!
जालिमों के जुल्म के,
जेहाद को मरोड़ दे,
भेदभाव की विषाक्त,
भावना को छोड़ दे,
देशद्रोह के कुटिल,
कंटकों को तोड़ दे,
कांप जाये गर्जना से,
तख्त और ताज रे !!!
अय ! महान् पथ-पथिक !
नेक, पाक, शुद्ध हो,
दानवी दमन को देख,
नवजवान क्रुद्ध हो,
युद्ध में प्रवीर वीर,
शांति में प्रबुद्ध हो,
त्याग से तपा हो तेज,
भारती का भाग रे !!!
तन्त्र तो बदल गया,
मन्त्र पर वही रहा,
वोट मांग भीख में,
पाके पद पलट गया,
लूटमार काट का,
काज और बढ़ गया,
ऊँच नीच भावना की,
जल रही है आग रे !!!
आपातकाल की कराल,
रात फिर न आ सके,
लेखनी जुबान पर न,
रोक कोई ला सके,
विधान में गरीब जल्द,
न्याय मुफ्त पा सके,
श्रेष्ठ राष्ट्रवाद का,
छेड़ चण्ड राग रे !!!
पाखंडियों के ढोंग के,
तू पोल-ढोल खोल दे,
सत्य है सबल सदा,
सत्यता से तोल दे,
आत्म से उठी ध्वनि,
सत्य सत्य बोल दे,
हंस के विवेक को,
न काट पाय काग रे !!!
मंदिरों की घंटियों में,
धर्म ना भटक सके,
पत्थरों पे टेक कर,
न मार्ग से भटक सके,
तीर्थों में गीध सम,
पुजारी ना झपट सकें ।
अधर्मियों से धर्म को,
बचाने दौड़ भाग रे !!!
मजहबी जनून से,
भरा हुआ कुरान है,
पंडितों की मूर्खता का,
मुख्यतम पुराण है,
फंस रहे हैं धर्म हीन,
दीखता न ज्ञान है !!!
राम में रहीम बन के,
घुस गये हैं नाग रे !!!
जाग जाग आर्य वीर !
जाग जाग जाग रे !!

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

जीवन-कला

क्या आप जिन्दगी में बस वर्ष ही जोड़ते जा रहे हैं ?

—डा. रामचरण महेन्द्र

हमारे समाज में ऐसे अनेक भाग्यवान् सज्जन हैं, जिन्हें अपने पुरुषार्थ या भाग्य, किसी भी कारण से उच्च शिक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा, धन, सम्पत्ति, पदोन्नति, सुख-सुविधाएँ आदि प्राप्त हो गई हैं। वे आराम से जिन्दगी बिता रहे हैं। गरीब और साधनहीन, बीमार, वृद्ध, विकलांग लोगों की अपेक्षा इन लोगों को अपेक्षाकृत बहुत सुविधा की जिन्दगी बिताने का अवसर प्राप्त हुआ है। ये अपनी जिन्दगी में खुशी और चहकते साल और भी जोड़ते जा रहे हैं। इन्हें लगता है जैसे अब जिन्दगी में करने लिए कुछ शेष ही नहीं रह गया है।

ऐसे लोगों को हम 'मेगसे' पुरस्कार से सम्मानित बाबा आयटे का उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। रीढ़ की हड्डी में चोट के कारण वे न तो लेट सकते थे, न बैठ सकते थे। इस कष्ट के बावजूद कुष्ठरोगियों की सेवा में उन्होंने जीवन लगा दिया।

मनुष्यता की जिम्मेदारी बड़ी भारी है। इन्सानियत के महान् गौरव की रक्षा सेवा धर्म, कष्ट पीड़ितों की सहायता-सहयोग से ही संभव है। मानवता की देवी, हमें उँगली के इशारे से उन लोगों को दिखाती है, जो हमसे छोटे, पिछड़े हुए, अशिक्षित, अविकसित और कमजोर हैं। वह पूछती है, 'क्या इन अभावग्रस्त लोगों की सहायता करने, ऊँचा उठाने और सुखी करने के लिए तुम अपने हाथ-पांव और अन्य साधनों से कुछ नहीं कर सकते ?

हम कोढ़ियों की दर्दनाक हालत देखकर करूणा से अभिभूत हो कुछ सिक्के उनके हाथ पर रख देते हैं, फकीरों, विकलांगों, सताई हुई अभाव ग्रस्त महिलाओं, निर्धन जाति के बच्चों को दान देकर अपने धार्मिक अनुष्ठान को पूरा समझ लेते हैं, किन्तु हम यह नहीं सोचते कि इससे उन्हें कुछ स्थायी लाभ हुआ या नहीं ? उनकी गरीबी, अभाव बीमारी, व्यसन दोष-दुर्गुण, बीभत्स समस्याएँ, परेशानी दूर हुई अथवा नहीं ?

भूल से भी हम यह नहीं सोच पाते कि हमने अपने निम्न अभावग्रस्त गरीब समाज की गिरी हुई जिन्दगी को बेहतर बनाने के लिए क्या किया है ?

क्या हम पूरी जिन्दगी भर खुद अपना ही अपना भला सोचते और करते रहे हैं ? देशभर में फैले हुए बहुसंख्यक दीन-हीन व्याधिग्रस्त लोगों के प्रति भी हमारा कुछ कर्त्तव्य है ?

मलेरिया, कैंसर, कुष्ठ, गुप्तरोग, पेचिश, टी. बी. हृदय रोग आदि से जो अनगिनत गरीब बिना औषधि या चिकित्सा के मर रहे हैं उनके प्रति हमारा क्या दायित्व है ? यदि हम मनुष्यता के कर्त्तव्य को धर्म के मर्म को तनिक भर भी पहचानते हैं तो हमें गंभीरता-पूर्वक विचार करना होगा कि हम अपने से कमजोरों की भलाई के लिए क्या करें ? क्या कर सकते हैं ? और क्या करेंगे ?

(शेष पृष्ठ 25 पर)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

। ओ३म् ।

योजकस् तत्र दुर्लभः

—डा. वेदप्रकाश, विद्यावाचस्पति, एम. ए., पी-एच. डी.,
सहसंचालक, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोधसंस्थान, होशियारपुर

जब मैं मुड़कर अपने बचपन की धुंधली स्मृति के झरोखे में से देखता हूँ, तो एक तेजस्वी व्यक्तित्व मेरी आंखों के सामने उभर आता है। शुभ्र खादी के पहिरावे में लम्बे डील डौल वाले वह अपनी मधुर आकर्षक वाणी में मुझसे ऐसे बतियाते, कि मैं उन्हें छोड़ना ही न चाहता। मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए वह मेरे माता-पिता से कहते—'यह बालक आपके संकल्पों को पूरा करेगा।' उन से बात करते हुए वह कभी ऐसे लगते, जैसे मेरे इस संसार में आने से भी पहिले मेरे विषय में उनसे बात करते रहे हों।

उनका स्थान मेरे ग्राम के किनारे पर ही एक सुन्दर उपवन और जलाशय से युक्त आश्रम में था। गाँव के लोग प्राय: वहां पर धर्मचर्चा के लिए जाया करते थे। एक बार श्रावणी का पर्व था। आश्रम में खूब शोभा थी। मैं तब पांच वर्ष का हो चुका था। ग्राम के लोग लगभग मेरी उमर के अपने बच्चों को वहाँ लाये थे। मैं भी उनमें था। माँ ने मुझे पिता के हाथ में सौंपते हुए कहा—'मातृमान्'। पिता ने 'पितृमान्' कह कर मुझे उस तेजस्वी व्यक्ति के सामने खड़ा कर दिया। उन्होंने मेरी उंगली पकड़ते हुए थपकी दी और कहा—'आचार्यवान्'। उस दिन से हम सब बालक उनके पास आते, उठते, बैठते, और खेलते। कथा-कहानियों में ही वे हमें शिष्टाचार, नैतिकता, साहस और ज्ञान की बातें सिखलाने लगे। हम सब उस आश्रम में ऐसे हिलमिल गये कि शाम को अपने घर में लौटना भी परदेश जाने के बराबर लगता।

हँसी-खुशी से और खेल कूद में दो वर्ष बीतने में देर न लगी। आश्रम के गुरु हमें अब ग्राम-गुरुकुल के आचार्य के पास ले गये। आचार्य ने मेरे गले में तीन सूत्र डालते हुए मुझ से बलवान्-विद्वान् सुसंस्कृत नागरिक बनने की प्रतिज्ञा कराई। वहाँ का वातावरण इतना लुभावना, शान्त और पवित्र था कि हम सभी बालक अपने-अपने घर और ग्राम को भी भूल गए। यहां पर विधिवत् हमारी शिक्षा का आरम्भ हुआ। राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से हम सभी विषयों को पढ़ने लगे। संस्कृत का भी अध्ययन बड़े रोचक और सरल ढंग से होने लगा। अ लेख्य के अतिरिक्त हस्तकला के अन्य विषयों का भी अभ्यास कराया जाता। फुलवारी, बागीचे और खेती में भी अपने हाथ से काम करते हुए हम आनन्द और गौरव का अनुभव करते। अपने अध्यापकों की देखरेख में हम अपनी रुचि के खेल खेलते और व्यायाम करते। विभिन्न विषयों के अध्यापक यद्यपि पृथक्-पृथक् थे, तो भी हम विद्यार्थी किसी न किसी एक शिक्षक के निकट सम्पर्क में रहते। जहां वह हमारी रुचियों और प्रवृत्तियों की निगरानी रखता, वहां वह हमारा समय समय पर पथ-प्रदर्शन भी करता रहता।

तीन वर्ष के बाद हमारी शिक्षा में कुछ और विषय भी जोड़ दिए गए, जिनमें हमारी रुचियों को और अधिक विकास मिला। इस कार से हमें

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपनी उच्च शिक्षा के क्षेत्र को चुनने में कोई कठिनाई नहीं हुई । हम में से कुछ भाषाओं का, कुछ दर्शन और धर्म का, कुछ विज्ञान के विशिष्ट क्षेत्र का चुनाव करके अपनी योग्यता को बढ़ाने में जुट गये । कुछ विद्यार्थी व्यावसायिक क्षेत्रों तथा शिल्पकलाओं में प्रशिक्षण पाने लगे । अपने माता-पिता- गुरु, आचार्य और शिक्षक के पथ-प्रदर्शन में किसी भी विद्यार्थी को अपना भावी कार्यक्रम निर्धारित करने में दुविधा का सामना नहीं करना पड़ा । इसलिए किसी के मन में न अनिश्चितता की स्थिति थी, और न असन्तोष । परिणामत: सर्वत्र ही अनुशासन व्याप्त था ।

मेरे सभी सहपाठी अपने निश्चित कार्यक्रम के अनुसार भिन्न-भिन्न महाविद्यालयों में प्रविष्ट हो गये । मैं भी अपनी रुचि और ध्येय के अनुकूल सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यकर्ता बनने के उद्देश्य से सामाजिकी—महाविद्यालय में प्रविष्ट हो गया । वैदिक तथा लौकिक संस्कृत साहित्य के विशेष ज्ञान के साथ दर्शन तथा स्मृति ग्रन्थों का भी अध्ययन कराया गया । मानव-समाज के उत्थान-पतन का इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, आदि शास्त्रों के अवगाहन के अतिरिक्त लेखन-भाषणादि कलाओं में खूब अभ्यस्त कराया गया । व्यावहारिक अनुभव के लिए हमें ग्रामों में ले जाकर वहां के परिवारों की समस्याओं का अध्ययन और समाधान, क्रियात्मक समाजसेवा का अवसर उपलब्ध कराया जाता ।

शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् दीक्षान्त-उत्सव में हमें आशीर्वाद देते हुए भावभीनी विदाई दी गई । सत्यं-शिवं-सुन्दरं का सुन्दर समन्वय है इस शिक्षा में । प्रत्येक विद्यार्थी के मन-बुद्धि-शरीर, तीनों पक्षों, के विकास पर पूरा पूरा ध्यान दिया गया । शरीर में क्षमता और स्फूर्ति, बुद्धि में प्रखरता और ज्ञान, मन में उत्साह और सहृदयता । सभी के व्यक्तित्व का विकास सर्वतोमुखी था । मैं और मेरे साथी अपने-अपने कार्यक्षेत्र में ऐसे जुटे हैं, जैसे कि वे कार्य हमारे लिए ही बने हों और हम भी उन्हीं कार्यों के लिए पैदा हुए हों । न हम उद्देश्यहीन, दिशाहीन और कर्महीन हैं, और न ही कोई कार्यक्षेत्र उपयुक्त कार्यकर्ता से विरहित है । उपयुक्त कार्यक्षेत्र के लिए उपयुक्त कार्यकर्ता और उपयुक्त कार्यकर्ता के लिए उपयुक्त कार्यक्षेत्र प्रस्तुत करने वाली शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है ।

अमन्त्रम् अक्षरं नाऽस्ति, नाऽस्ति तृणम् अनौषधम् ।
अयोग्य: पुरुषो नाऽस्ति, योजकस् तत्र दुर्लभ: ।।

□ □ □

(पृष्ठ 23 का शेष)

धर्म पोथी पत्रों, बड़ी भारी भरकम पुस्तकों पत्थर या धातु की मूर्तियों, मठ मन्दिर, मस्जिदों में पूजा का अभिनय करने में नहीं है, न यह कथा वार्ता में कहे सुने जाने या पूजा पाठ करने की क्रिया है । धर्म काल्पनिक नहीं, व्यवहारिक और समाज के लिए भी उपयोगी होना चाहिए ।

धर्म शब्द धृञ्धारणे' धातु से बना है । इसका अर्थ है कि जो गुण धारण किया जाए, काम में लाया जाये । व्यावहारिक प्रयोग हो, वही धर्म है । आजकल धर्म में जो बाहरी दिखावा या आडम्बर, झूठ फरेब और डरावनापन आ गया है, उसका उपयोग पण्डे, पुजारी या मठाधीशों की जीविका चला देना नाम मात्र रह गया है ।

महात्मागांधी जी का कथन है कि "जिस धर्म का हमारे दैनिक आचार व्यवहार पर कुछ असर न दिखाई दे, वह एक हवाई ख्याल के सिवाय और कुछ नहीं है । मैं तो धर्म को ही रोज मर्रा काम में आने वाली चीज मानता हूँ जैसे अन्न, जल और वायु ।" आज के सभी कार्यों में धर्म का समन्वय हो धर्म व्यवहारिक हो, जिन्दगी को चमकाएँ और ऊँचा उठाएँ ।

—रिटायर्ड प्रिंसीपल, गवर्न. कालेज,
नयापुरा, कोटा (राजस्थान)

□ □ □

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आर्यसमाज गौरवम्

(वृत्तं—शा. वि.)

—प्रा. हरिश्चन्द्र रेणापुरकरः,
साहू बिल्डिंग, ऐवानशाही रोड़, गुलबर्गा

कायाकल्पमशेषपीडितभुवः संपाद्य वेदामृतात्,
साक्षाद्भावयितुं दिवं भुवि दयानन्दर्षिसंस्थापित—
प्रख्यातार्यसमाजनामकमहासंस्थाशताब्दाततम्,
भव्योदात्तविशालकार्यपरमं किंचित् समीक्षामहे ॥1॥

शिक्षा धर्मसमाजनीतिविषये तत्रापि शिक्षाविधौ
क्रान्तिर्याऽऽर्यसमाजकार्यवशतो जाता महापावनी ।
योगश्चार्यजनैरदायि समरे यो देशमुक्तेर्महान्
नूनं तत्सकलं सदैव भविता स्वर्णाक्षरैरङ्कितम् ॥2॥

प्राचीनार्षपरम्पराविहननं स्वत्वाभिमानापहम्,
मेकालेऽभिहिताङ्ग्लनीतिपटुना बुद्ध्या समुत्पादितम् ।
लोके केवल-दास्यभावजनन दुष्टाङ्ग्लशिक्षानयम्,
मूलोत्पाटयितुं व्यजृम्भि सफलं कांग्रीस्थविद्यालये ॥3॥

कल्याणास्पदसार्वभौमनिगमज्ञानामृताद् वञ्चितान्
स्त्रीशूद्रादिचिरप्रपीडितजनान् को वा महर्षिं विना ।
मानुष्याधिकृतिप्रदानसहितं लब्धोदयानाचरत्
कोऽस्पृश्यत्वकलंकपट्टमहरद् भूभालपट्टात्खलु ॥4॥

अस्यात्यन्तविशालपाररहितब्रह्माण्डसं पादकम्
सर्वव्यापिविभुं चराचरपतिं देवं गुहासंस्थितम् ।
हित्वाऽज्ञानवशाच्छिलार्चनपरं भ्रान्तं जगन्मानवम्
सत्यामीश्वर भक्तिमर्चनविधिं कोऽशिक्षयद् वस्तुतः ॥5॥

सर्वज्ञानमयीं श्रुतिं भगवतीं विस्मृत्य सृष्टुः कृतिम्,
ग्रन्थान् मर्त्यकृतान् प्रमादबहुलान् सम्भावयन्मानवान् ।
को वेदोन्मुखमानसान् व्यरचयद् बद्धादरान् को व्यधात्
वेदज्ञानमहामहित्वमदनो कोऽतिष्ठिपत् तद्विना ॥6॥

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वर्धर्मेश्वरतीर्थयज्ञनरकश्राद्धावतारादिक—
व्याख्यां कः खलु तर्कयुक्तिसहितां विज्ञानयुक्तां व्यधात् ।
पुण्ये यज्ञमखाध्वरादिकथिते लोकोपकृत्कर्मणि
मूकप्राणिवधं प्रमाणसहितं कोऽवारयत् तद्विना ॥7॥

स्पृश्यास्पृश्य - विशिष्टपूजन - महापाखण्ड - दम्भात्मकम्,
बाह्याडम्बरमात्रसीमितसदाचारादिशून्यं विधिम् ।
धर्माचारतया मृषा गणयतो लोकांश्चिरात्तत्वतः
सत्यास्तेयदयाक्षमादिदशकं धर्मं हि कोऽदर्शयत् ॥8॥

राष्ट्राधःपतनप्रधानजनक प्रभ्रष्टजात्युद्भव—
जन्माधिष्ठितरूढवर्णसरणेः स्थाने पुनस्तां शुभाम् ।
वेदोक्तां गुणकर्मतंत्रसरणीं संचाल्य सामाजिक—
क्रान्तेर्डिण्डिमघोषमार्यविषये कः कर्तुमन्योऽभवत् ॥9॥

देशस्यार्थिकतंत्र-संस्कृतिविधानोत्तंभगोसंपदः,
रक्षार्थं युयुधे बतान्य इह को ह्यार्यैर्विना भारते ।
को दीनार्तविलाप-बालविधवाशोके समाकर्णयद्
अन्यः कोदलितार्तरावमशृणोत्कोऽसान्त्वयद्दुःखितान् ॥10॥

निःसंख्यानच-धर्मबान्धवगणान् धर्माद् बलाद् भ्रंशितान्
म्लेच्छानां गुलिकाप्रहारमनिशं सोढ्वापि नूनं मुदा ।
शुद्ध्यान्दोलनशंखवादनसमं कोऽदीक्षयत्तान् पुनर्
धर्माध्वर्युषु सञ्चरत्सु खलु कः स्नेहेन चालिङ्गत ॥11॥

हिन्दीं भारतमातृभालतिलकां राष्ट्राभिमानास्पदाम्—
आङ्ग्ल्या दास्यमुपात्तराष्ट्रपुरुषैर्मौर्व्यातिकदर्थीकृताम्
शिक्षामाध्यमगौरवान्वितपदे सस्थाप्य धीरोत्कटं
कस्तां राष्ट्रगिरो महोच्चपदवीं नेतुं प्रयेते खलु ॥12॥

पाश्चात्योज्ज्वलचाकचक्यचकितान् हीनात्मभावं गतान्
सदर्श्यात्मगतेतिवृत्तमखिलं भव्योज्ज्वलं भास्वरम् ।
स्वत्वोत्साहविवेकभावसरितान् कृत्वा जनान् भारतान्
पाश्चात्यासुरशक्तिसंस्कृतिसमास्कन्दं हि कोऽवारयत् ॥13॥

एकत्रेशुमसीहमिश्नरिगणैरन्यत्र मोहान्धकैर्
हिन्दूधर्मविनाशबद्धकटिभिरुत्पन्न-झंझामरुत् ।
रुद्धः केन बतान्यसंघसमवायेनार्यवीरैर्विना
हीरालालसमा ह्यसंख्यमणयो देशस्य संरक्षिताः ॥14॥

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भेदान् मानववर्णजातिकुलजान् प्रख्याप्य मिथ्यास्पदः,
अन्तर्जातिविवाहपद्धतिमपि प्रोत्साह्य चात्युत्तमाम् ।
विश्वान्तर्गतकृत्स्नमानवगणस्यैक्यं समुद्घोषयन्
कोऽभूदस्ति च कर्मवीरपरमैरार्यैर्विनां भारते ॥15॥

एकेष्वांग्लनृशंसशासन भयाद् यातेषु निःस्तब्धताम्,
आंग्लानां गुणगानकीर्तनपरेष्वन्येषु लाभाशया ।
अन्यः कः प्रसमं स्वराज्यपदमप्युच्चारणेऽभूत्क्षमः
संपूर्णश्रुतिशास्त्रपाण्डितदयानन्दर्षिणो भारते ॥16॥

नानाभ्रान्तविचारबुद्धिरहितश्रद्धाकुरीत्याप्लुतं
मिथ्या मूढपरम्परानिगडितं दुःखाकुलं भारतम् ।
रूढिग्रस्ततरं गतानुगतिकं यातं चिरादुत्पथं
कोऽभूत् तर्कविवेकबुद्धिलसितं कर्तुं महर्षेर्विना ॥17॥

सत्यं ब्रह्म जगन्मृषेति वितथव्यामोहवादाहतान्
मायामोहतमोऽवगुंठिततया नैष्कर्म्यवादे रतान् ।
याथार्थ्यं सुतरां प्रदर्श्य जगतो ब्रह्मात्मसाकं स्फुटं
कः कर्मप्रवणं व्यधाद् भरतभूलोकान् महर्षेर्विना ॥18॥

निष्प्राणं हिमलोहगोलसदृशं पादप्रहारोचितं
स्वत्वेनापगतं प्रकाशरहितं निर्वीर्यनष्टप्रभम् ।
दैन्येनोपहतं पराजितमनोवृत्त्याहत भारतं
चैतन्यस्फुरितं प्रभावभरितं कः कर्तुमन्योऽभवत् ॥19॥

पारावारवियद्विशालविपुलां गङ्गापयःपावनीं
सर्वोच्चाभ्युदयाधिरूढमहितां मानव्यनिष्ठां पराम् ।
प्राचीनोज्ज्वलदिव्यगौरवमयीमुर्ज्जस्वलां संस्कृतिम्,
अन्यः कः स्मरयन् बभूव खलु नः श्रीमन्महर्षेर्विना ॥20॥

एतत्सर्वमपेक्षितं यदपि तल्लक्ष्यं महर्षेर्न वै
वेदानां प्रसृतिः समस्तभुवने तस्याभवद्वांछितम् ।
तत्सिद्ध्यर्थमसौ चचार कठिनं घोरं तपो दुश्चरं
नूनं गौणतरं समस्तमितर वेदप्रचारान्मुनेः ॥21॥

यद्यप्यार्यसमाजकार्यमखिलं नूनं महत् सारवत्
किन्त्वेतन्न समाजकार्यपरमं साध्यं महर्षेर्न वा ।
शाखासेचनमेव नूनमभवद् विस्मृत्य मूलं तरोर्
मूलं त्वागमधर्मभास्वररवेर्लोके पुनर्भासनम् ॥22॥

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्वज्ञानमयी श्रुतिर्भगवती निःशेषविद्यानिधिर् —
इत्योजस्विदिगन्तगामिमहनीयोर्जस्वलोद्घोषणम् ।
धीरोदात्ततरं मनोर्भगवती वैवस्वतस्योत्तरम्,
कुर्वन् धन्यतमो बभूव हि दयानन्दर्षिवर्यो महान् ।।23।।

कृत्वोद्घोषणमेव नैव विरतस्तत्सिद्धये त्वद्भुतम्,
भाष्यं ब्रह्मकृतेः श्रुतेरनुगुणं कृत्वा प्रमाणोज्ज्वलम् ।
ध्वान्तं सायणमूलरादिविततं भित्वार्षबोधांशुभिर्
विश्वं सप्रसभं श्रुतिं प्रति दयानन्दः समावर्जयत् ।।24।।

तत्स्थानासनभुक्तिपीतिभणिति-स्वप्नाववोधाटनम्
प्राणापानशरीरधारणनिमेषोन्मेषहृत्स्पन्दनम् ।
सर्वं वेदमयं बभूव सुतरां वेदार्थमेवार्पितम्,
नूनं तस्य समस्तकार्यविसरव्यावर्तकीलः श्रुतिः ।।25।।

वेदार्थं पितरं प्रसूं प्रियतरां प्रेष्ठांश्च सम्बन्धिनः,
प्रत्याख्यातकुबेरवैभवपदं पित्रोर्धनाढ्यं गृहम् ।
अक्लेशाप्यमपीह यौवनसुखं धीरं परित्यागिनस्
तद्दिव्यार्ष दृशो दयाघनदयानन्दर्षिणः स्मर्यताम् ।।26।।

ज्ञानं विश्वगुरोः श्रुतिर्भगवती निःशेषविद्यानिधिः
पठ्या चार्यजनैः सदा सनियमैः पाठ्या ततश्चेतरान् ।
इत्याचार्यवरोत्कटाभिलषितं किं पूर्णतां प्रापितम्,
मा तावद्भुवने स्वदेशपरिधौ किं तत्प्रचारोऽभवत् ।।27।।

□ □ □

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

। ओ३म् ।

जगत् रचना का प्रयोजन

—श्री पं. सत्य प्रिय जी शास्त्री,
एम. ए. साहित्यचार्य

एक अल्पज्ञ जीव भी रचना करते समय किसी प्रयोजन को लेकर करता है, क्योंकि "प्रयोजन मनुदिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते' बिना प्रयोजन के कोई मूर्ख भी कहीं प्रवृत्त नहीं होता, ऐसी दशा में सर्वज्ञ प्रभु के द्वारा संसार की रचना में भी विशेष प्रयोजन है । वे प्रयोजन निम्न प्रकार के हैं :

1. परमात्मा के ज्ञान एवं सामर्थ्य की सफलता, परमात्मा में संसार रचना का ज्ञान तथा सामर्थ्य है, परन्तु उसकी सार्थकता तथा सफलता उस ज्ञान के कार्य रूप में परिणत होने पर ही होगी, संसार को 'दृश्य' कहा गया है । प्रत्येक कार्य रूप पदार्थ दृश्य होता है । कारण रूप अदृश्य होता है । जड़ पदार्थ स्वयमेव कारण से कार्यरूप नहीं होगा । उसमें परिवर्तन चेतन की सन्निधि से ही होगा । अत: सर्वव्यापक परमात्मा 'दृश्य' बनाता है । संसार का अदृश्य से दृश्य हो जाना ही परमात्मा के तद्विषयक ज्ञान सामर्थ्य की सफलता है । वेदों में परमात्मा को 'महादेव' 'ब्रह्मा' आदि कहा गया है । जब अन्य पदार्थ होंगे जिनकी अपेक्षा से परमात्मा बड़ा होगा । तथा अन्य देव होंगे जिनकी अपेक्षा से वह महान् होगा । तभी उक्त दोनों शब्द परमात्मा के नाम के रूप में अन्वर्थ सिद्ध होंगे, जगत् को बनाना, धारण करना इत्यादि उसके ज्ञान एवं सामर्थ्य में है । परन्तु यह तभी चरितार्थ होगा—जब वह जगत् रचना धारण करे. अतः उसके लिए संसार बनाना आवश्यक है । तभी 'धाता' 'विधाता' रूप में उसका ज्ञान और सामर्थ्य सफल होगा । जैसे—जब कोई विद्वान् अपनी विद्वत्ता प्रकट करता है, तभी लोगों की दृष्टि में विद्वान् जंचता है । अत: परमात्मा के ज्ञान एवं सामर्थ्य की सफलता की सार्थकता के लिए संसार बनाना अत्यावश्यक है । क्योंकि इसके बिना उसका ज्ञान तथा सामर्थ्य निष्फल ही कहलायेंगे ।

2. भोगार्थ—जीवों को उनके कृत कर्मों का फल देने के लिए भी संसार बनाना आवश्यक है । क्योंकि जो कर्म करता है, उसे उसका फल मिलना ही चाहिए । यदि उसे 'कर्म' का फल न मिले तो सत्कर्मों में उत्साह तथा असत्कर्म

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से घृणा नहीं होगी। वैसे भी फल प्राप्ति की इच्छा से ही कर्म किया जाता है। शास्त्र के अनुसार कर्म का फल सुख या दुःख होता है, सुख या दुःख की प्राप्ति उत्पन्न हुए संसार में ही होगी, कारण रूप विश्व की स्थिति में नहीं। अतः उसके लिए संसार रचना भी नितान्त आवश्यक है। जब परमात्मा संसार बनाकर दुःख सुख रूपी फल प्रदान करेगा, तभी उसका कर्मफल दातृत्व, नाम तथा रूप सत्य सिद्ध होगा, परमात्मा स्वयं सुख भोगने के लिए संसार नहीं बनाता, क्योंकि वह तो पूर्ण तृप्त तथा आप्तकाम है, इच्छा अपूर्ण में होती है। वह जीव है जो चेतन, ज्ञानवान् तथा इच्छा युक्त है। परमात्मा तो अन्यों के कल्याण के लिए ही जगत् बनाता है। क्योंकि न जाने कितने जीव शुभ कर्म करके सुख प्राप्त करते हैं. यह सब तभी सम्भव है, जब परमात्मा ससार बनाता है, परमात्मा यदि संसार न बनाए तो जीव अपने कर्मो का फल कैसे भोगे ? जबकि उन्हें अपने कर्मो का फल मिलना ही चाहिए। यह तभी होगा जब प्रभु संसार की रचना करते हैं, इस दृष्टि से परमात्मा के लिए संसार की रचना अत्यावश्यक है।

3. अपवर्गार्थ—तीसरा कारण है अनेक मुमुक्षु जीव संसार में शुभ कर्म करते हुए अनेक जन्मों के पश्चात् मोक्ष को प्राप्त कर जीवन सफल बनाते हैं, मोक्ष के लिए अनेक जन्मों की आवश्यकता है। जिसका आधार संसारोत्पत्ति है। जीव का जन्म नहीं हो सकता, अतः जीव के जन्म धारण के लिए संसार की उत्पत्ति होनी चाहिए। जो जीव मुक्ति से लौटते हैं, उनको जन्म देने के लिए भी संसारोत्पत्ति अनिवार्य है, इस प्रकार यह सिलसिला निरन्तर चलता रहता है, शास्त्र की भाषा में इसे "प्रवाह से अनादि" कहा जाता है, यदि परमात्मा संसार न बनाए तो कितने शुद्ध जीव मोक्ष प्राप्त करने से वंचित रह जाएंगे। जो कि जीव का अन्तिम लक्ष्य है। वैसे भी जगदुत्पत्ति, परमात्मा के द्वारा सहज स्वभाव से किए जाने के कारण मानों उसका स्वभाव है, वह नित्य है, अतः नित्य पदार्थ का स्वभाव भी नित्य होता है और संसार में परिणाम द्वारा उसकी सत्ता सिद्ध होनी चाहिए, वह तभी होगी जब परमात्मा संसार बनावेगा, वैसे भी हम देखते हैं कि जनता की कोई मांग देखकर सरकार अपना तद्विषयक विभाग खोल देती है, यही स्थिति जीवों के कृतकर्मों के फल की मांग होने पर मानों परमात्मा विश्व रचना रूपी विभाग खोलकर अपने ज्ञान, सामर्थ्य तथा गुण को चरितार्थ करता है। जिसकी चरितार्थता संसार को रचे बिना नहीं हो सकती, इन सभी कारणों से अन्तर्यामी जगदीश्वर इस भौतिक जगत् का निर्माण करता है।

प्राचार्य—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय
हिसार (हरयाणा)

□ □ □

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

। ओ३म् ।

धन्यो गुरूणां गुरुः

—श्री हरिश्चन्द्र निस्तन्द्र
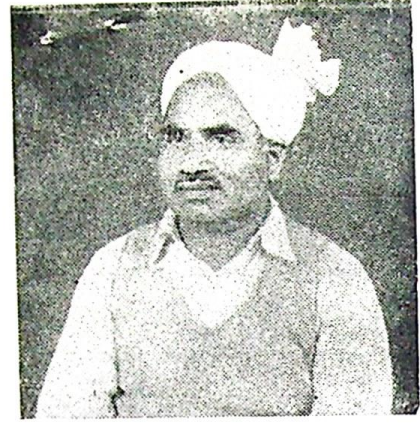
सूर्यो व्याकरणस्य भारतभुवः लब्ध प्रतिष्ठो गुरुः,
विश्वासः दृढ आर्षशिक्षणविधौ येनानुभूतोऽचिरात्।
"आर्षग्रन्थसुपाठन समुचितं" यस्येयमास्थाऽभवत्,
जातस्तस्य विधेः समर्थक इद तेनैकदा चिन्तितम्॥

मच्छिष्येषु सुबुद्धिमान् वटुदयानन्दोऽनुकूलव्रतः,
मन्येऽसौ मम लक्ष्यपूर्तिकरणे योग्यः समर्थोऽस्ति च।
शिष्याणां गुरुदक्षिणा समय इत्थं श्रीगुरुः प्राह तम्,
"देहीष्टां मम मानसे कृतगृहां त्वं दक्षिणामद्भुताम्॥

आर्षग्रन्थसुपाठनं प्रिय दयानन्द! व्रतं धारय,"
श्रुत्वा वाक्यमिदं तदा गुरुमुखाच्छिष्येण तत्स्वीकृतम्।
"आदेशप्रतिपालनं भगवतः स्याद्दीयतामाशिषः,
शेषं जीवनमर्पयामि भवदाज्ञापालने सर्वथा॥"

आर्षग्रन्थप्रचार कार्यकरणायासौ ततः प्रस्थितः,
तर्कास्त्रेण स छिन्नभिन्नमकरोत्पाखण्डजाल ततम्।
"नास्थाऽवैदिक सम्प्रदायनिखिले वेदाःप्रमाणं हि मे,
तस्माद्वैदिक धर्मविस्तरमह मन्ये स्वलक्ष्यं सदा"॥

दुष्टैः कष्ट विषप्रदान छलनास्त्रैः तद्विरोधः कृतः,
किन्त्वेषो न सुनिश्चितं हि मनसा तत्याज मार्गं स्वकम्।
वारं वारमहं नमामि विरजानन्दं गुरूणां गुरुम्,
शिष्यो यस्य गुरोः महानृषिदयानन्दोऽभवद्भारते॥

"निस्तन्द्र निवास", N.B. 199, टांडा रोड़, जालन्धर

☐ ☐ ☐

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वार्षिकोत्सव 6 से 13 अक्तुबर 1985 की झलकियां
शास्त्रार्थ महारथी पूज्य अमर स्वामी जी का सन्मान

1

2

3
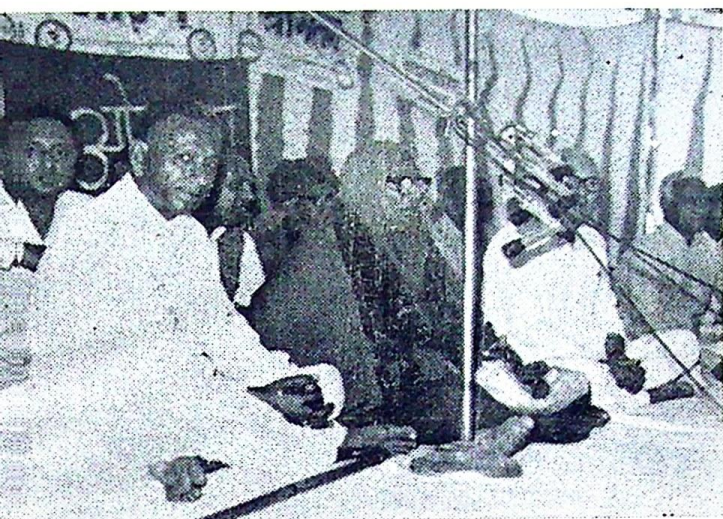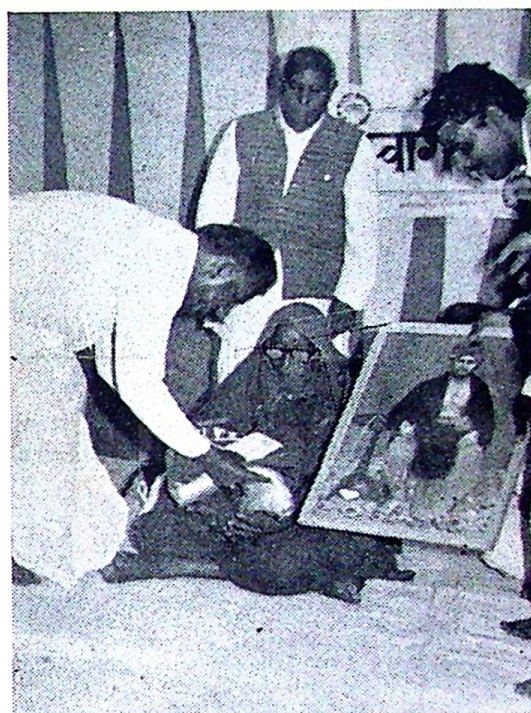
चित्र परिचय—

1. पूज्य अमर स्वामी जी महाराज, गाजियाबाद, सन्मानित होने के पश्चात् प्रवचन करते हुए। (12-10-85)
2. स्मारक के प्रधान श्री सेठ शिवचन्द जी अग्रवाल स्वामी जी को गर्म शाल, ओ३म् ध्वज, गेरुवे वस्त्र, महर्षि चित्र तथा 501 रु. नकद भेंट करते हुये। साथ में खड़े हैं विद्यालय के अधिष्ठाता चौ. ऋषि पाल सिंह एडवोकेट (मध्य में) तथा आचार्य श्री नरेश कुमार जी शास्त्री (चित्र लिये हुये)।
3. समारोह में उपस्थित विशाल जन समूह।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

योग सम्मेलन में 13-10-85 को पूज्य स्वामी मुक्तानन्द जी महाराज, संचालक योग निकेतन ट्रस्ट ऋषिकेश योग के विषय में अध्यक्षीय भाषण करते हुये ।

आर्य सिद्धान्त सम्मेलन में 13-10-85 को श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अध्यक्षीय भाषण करते हुये ।

शास्त्रार्थ केसरी पूज्य अमर स्वामी जी महाराज आर्य सिद्धान्तों पर प्रकाश डालते हुये प्रवचन की मुद्रा में ।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
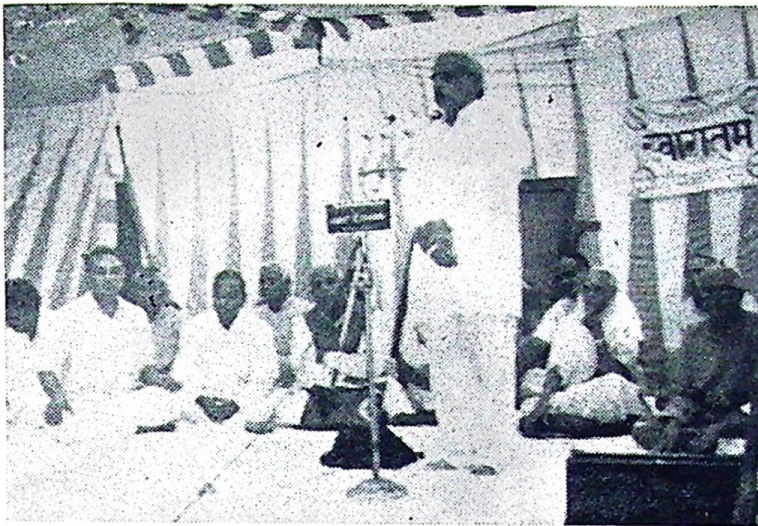
विद्यालय के पारितोषिक समारोह में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति डा. सत्यकाम जी वर्मा उद्घाटन भाषण करते हुये।
(13-10-85)

गुरुकुल के सांस्कृतिक कार्यक्रम में दो ब्रह्मचारी (बांये) संजीव कुमार कक्षा-8 व (दायें) नरेन्द्र कुमार कक्षा-9 संस्कृत में संवाद प्रस्तुत करते हुये।
(13-10-85)
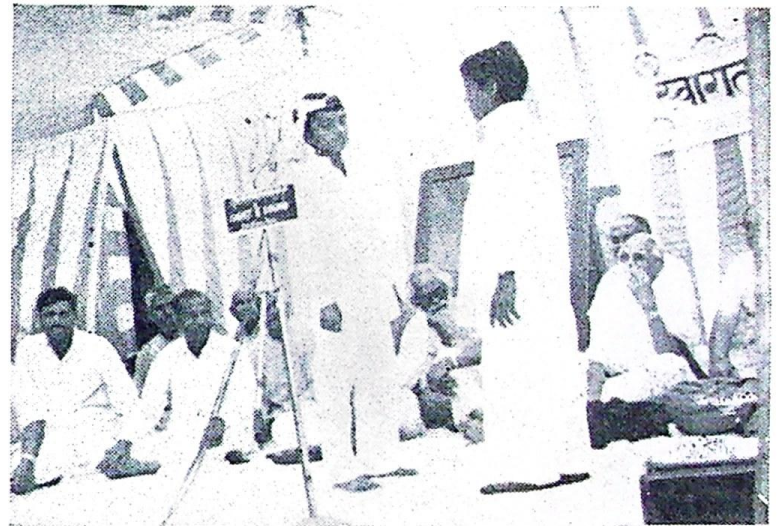
ब्र. उमेश जी के नेतृत्व में गुरुकुल के ब्रह्मचारी गीत प्रस्तुत करते हुये।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय, करतारपुर की मुक्तहस्त से सहायता में रत सेठ श्री शिव चन्द जी अग्रवाल, जालन्धर अपने परिवार के साथ

बैठे हुये—(बांये से) श्री बंगाली राम जी अग्रवाल (भाई), श्री शिवचन्द जी अग्रवाल, श्री चन्दु लाल जी अग्रवाल (भाई)

खड़े हुये—(बायें से) श्री सुभाष चन्द्र जी अग्रवाल (सुपुत्र) श्री कुन्दन लाल जी अग्रवाल (भाई)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

महर्षि दयानन्द का मार्ग दर्शन

—यशपाल आर्यबन्धु

आर्य समाज के यशस्वी संस्थापक युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती एक बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न महामानव थे। अपनी प्रखर प्रज्ञा के कारण महर्षि मानव-जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक क्षेत्र की समस्याओं को समझने में सफल हुए और उन-उन समस्याओं के निराकरण के लिए उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में बहुत से ठोस एवं व्यावहारिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। मानव-जीवन का कोई पहलू नहीं था जो उनकी पैनी दृष्टि से कभी ओझल हो पाया हो। महर्षि दयानन्द जहां एक आदर्श धर्मसंशोधक, समाज सुधारक, वेदोद्धारक, योगी, यति और ब्रह्मचारी थे। वहां एक आदर्श शिक्षा-शास्त्री भी थे। दुःख है कि महर्षि की शिक्षा नीति को व्यवहार में लाते हुए भी आर्यसमाज ने कभी भी खुल कर उन्हें शिक्षा-शास्त्री के रूप में प्रस्तुत नहीं किया। महर्षि राजनेता न थे पर वे राजनीतिक चिन्तक अवश्य थे। राजनीति के क्षेत्र में जिस प्रकार महर्षि ने अपना चिन्तन प्रस्तुत किया है। उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने अपना चिन्तन सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत किया है। उसी के आधार पर महर्षि का शिक्षा दर्शन खोजा जा सकता है।

जैसा कि पूर्व लिख चुके हैं कि महर्षि के जीवन का लक्ष्य एकांगी नहीं था अपितु सर्वांगीण था। फिर शिक्षा जैसा आवश्यक विषय उनसे कैसे छूट सकता था? महर्षि ने शिक्षा की परिभाषा भी दी है और उसका उद्देश्य भी स्पष्ट किया है। जिसे हम उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत कर रहे हैं।

परिभाषा—

"जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे, और अविद्यादि दोष छूटें, उसको 'शिक्षा' कहते हैं।" (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)

तथा

'जिससे मनुष्य विद्यादि शुभ गुणों की प्राप्ति और अविद्यादि दोषों को छोड़ के सदा आनन्दित हो सकें वह शिक्षा कहाती है।" (व्यवहार भानु)

शिक्षा का उद्देश्य—

शिक्षा का उद्देश्य महर्षि दयानन्द के ही शब्दों में इस प्रकार है—"विद्या का यही फल है कि जो मनुष्य को धार्मिक होना अवश्य है। जिसने विद्या के प्रकाश से अच्छा जानकर न किया और बुरा जान कर न छोड़ा तो क्या वह चोर के समान नहीं है? क्योंकि जैसे चोर भी चोरी को बुरी जानता हुआ करता और साहूकारी को अच्छी जान के भी नहीं करता। वैसा ही जो पढ़ के भी अधर्म को नहीं छोड़ता और धर्म को नहीं करने हारा मनुष्य है।" (व्यवहार भानु) महर्षि ने शिक्षा के उद्देश्य में केवल आर्थिक पक्ष पर ही दृष्टिपात नहीं किया है अपितु शिक्षा के पारमार्थिक तथा व्यावहारिक दोनों पक्षों को समान रूप से उजागर किया है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के यथार्थ स्वरूप को जान कर ही धार्मिक सभ्य एवं सम्यक् चरित्रवाला हो सकता

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है । महर्षि लिखते हैं कि—"पशु भी सुशिक्षा पाए हुए उत्तम कार्य सिद्ध करते हैं क्या फिर विद्या की शिक्षा से युक्त मनुष्य लोग उत्तम कार्य सिद्ध नहीं कर सकते ।" (यजुर्वेद भाष्य 20/78) तथा—"अच्छी शिक्षा के विना मनुष्यों के सुख के लिए और कोई भी आश्रय नहीं है । इसलिए सबको उचित है कि आलस्य और कपट आदि कुकर्मों को छोड़ के विद्या के प्रचार के लिए सदा प्रयत्न किया करें ।"

शिक्षा का आरम्भ कहां और किस प्रकार हो ?

महर्षि के अनुसार बच्चों की शिक्षा का आरम्भ घर से ही होना चाहिए । स. प्र. द्वितीय समुल्लास में महर्षि लिखते हैं कि—'जब पांच वर्ष के लडका लडकी हों, तब उन्हें देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें । अन्य देशीय भाषाओं का भी' "जन्म से पांचवें वर्ष तक बालकों को माता, छटे से आठवें वर्ष तक पिता शिक्षा करे और नवें वर्ष के आरम्भ में द्विज अपने सन्तानों का उपनयन करके आचार्य कुल में अर्थात् जहां पूर्ण विद्वान् और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्यादान करने वाली हों वहां लड़के और लड़कियों को भेज दें ।"

तीन उत्तम शिक्षक—

"जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है । वह कुल धन्य है और वह सन्तान बड़ी भाग्यवान् है, जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों । जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं ।"

अनिवार्य शिक्षा—

महर्षि अनिवार्य शिक्षा के प्रबल पक्षपाती थे । उनकी मान्यता है कि "ऐसा राज नियम और जाति नियम होना चाहिए कि पांचवे या आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के वा लड़कियों को घर में न रख सके । पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो न भेजें वे दण्डनीय हों ।" (स. प्र. 3) "राजा को योग्य है कि सब कन्या और लड़कों को उक्त समय से उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रखके विद्वान् करना, जो कोई इस आज्ञा को न माने, तो उसके माता-पिता को दण्ड देना, अर्थात् राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लड़का वा लड़की किसी के घर में न रहने पावे । किन्तु आचार्य कुल में रहें । जब तक समावर्तन का समय न आवे, तब तक विवाह न होने पावे ।" (स. प्र. तृतीय समुल्लास)

विद्यालय कहां पर हों ?

विद्यालय कहां पर हों ? इस विषय पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है किन्तु महर्षि दया-नन्द की पैनी दृष्टि से यह विषय बच नहीं पाया । महर्षि लिखते हैं कि—"विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त में होना चाहिए ।" इतना ही नहीं वे तो यहां तक लिखते हैं कि—"पाठशाला से एक योजन अर्थात् चार कोस दूर ग्राम व नगर रहे ।" (स.प्र. तृतीय समुल्लास) ।

लड़के लड़कियों के पृथक्-2 विद्यालय—

महर्षि सहशिक्षा के प्रबल विरोधी थे । इस लिए उन्होंने लड़के और लड़कियों की पृथक्-2 पाठशाला का विधान किया है । उनका कथन है कि—"जो वहां अध्यापिका और अध्यापक पुरुष वा भृत्य अनुचर हों, वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें । स्त्रियों की पाठशाला में पांच वर्ष का लड़का और पुरुषों की पाठशाला में पांच वर्ष की लड़की भी न जाने पावे, अर्थात् जब तक वे ब्रह्मचारी वा ब्रह्म-चारिणी रहें । तब तक स्त्री वा पुरुष का दर्शन, एकान्त सेवन भाषण, विषय कथा, परस्पर क्रीड़ा, विषय का ध्यान और संग । इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहें, और अध्यापक लोग उनको

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन बातों से बचावें, जिससे उत्तम विद्या, शिक्षा, शील, स्वभाव, शरीर और आत्मा से बल युक्त हो के आनन्द को नित्य बढ़ा सकें।''

आर्यसमाज के बम्बई वाले नियमों में नियम संख्या 20 में भी इसका स्पष्ट शब्दों में उल्लेख मिलता है कि—''स्त्री और पुरुष, इन दोनों के विद्याभ्यास के पृथक्-2 आर्य विद्यालय, प्रत्येक स्थान में यथा सम्भव बनाये जावेंगे। स्त्रियों की पाठशाला में अध्यापिका आदि का सब प्रबन्ध स्त्रियों द्वारा ही किया जावेगा और पुरुषों की पाठशाला में पुरुषों द्वारा इससे विरुद्ध नहीं।'' सहशिक्षा के विरुद्ध इससे बढ़कर और स्पष्ट निर्देश और क्या हो सकता है?

अध्यापक और आचार्य कैसे हों ?

विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण के लिए अध्यापकों का केवल विद्वान् होना ही पर्याप्त नहीं किन्तु उनका स्वयं भी चरित्रवान् होना आवश्यक है। इस सम्बन्ध में महर्षि लिखते हैं कि—''जो अध्यापक पुरुष वा स्त्री दुष्टाचारी हो। उनसे शिक्षा न दिलावें। किन्तु जो पूर्ण विद्यायुक्त और धार्मिक हों। वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने के योग्य हैं।'' (स. प्र. तृतीय)। आचार्य के लक्षण बताते हुए संस्कार विधि, उपनयन संस्कार में महर्षि फुटनोट के अन्तर्गत लिखते हैं कि—''आचार्य उसको कहते हैं कि जो सांगोपांग वेदों के शब्द, अर्थ, सम्बन्ध और क्रिया का जानने हारा, छल-कपट रहित अति प्रेम से सबको विद्या का दाता, परोपकारी, तन-मन और धन से सबको सुख बढ़ाने में तत्पर, महाशय, पक्षपात किसी का न करे और सत्योपदेश से सबका हितैषी, धर्मात्मा और जितेन्द्रिय होवे।'' इसी प्रकार आर्योद्देश्य रत्नमाला में वे लिखते हैं कि—''जो श्रेष्ठ आचार को ग्रहण कराके सब विद्याओं को पढ़ा देवे, उसको आचार्य कहते हैं।'' महर्षि ने इनके अतिरिक्त भी व्यवहार भानु, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश आदि में इस विषय पर बहुत कुछ लिखा है। उन सबका निचोड़ यही है कि आचार्य वही है कि जो अपने आचरण से विद्यार्थियों को शिक्षा देवे।

पठनपाठन विधि तथा पाठ्यक्रम—

महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में पठनपाठन विधि विस्तार पूर्वक लिखी है। प्रथम क्या पढ़ाया जावे? उसके बाद क्या? आदि पाठ्यक्रम पर भी इसमें विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। विस्तार भय से हम उसे यहां नहीं दे पा रहे। किन्तु इतना अवश्य लिख देना चाहते हैं कि महर्षि वर्णोच्चारण शिक्षा से प्रारम्भ कर क्रमश: धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं। वर्णोच्चारण पर जितना महर्षि ने जोर दिया है। उतना आज के इस उन्नत कहे जाने वाले युग में भी नहीं दिया जाता। ''अर्थात् इस अक्षर का यह स्थान। यह प्रयत्न, यह करण है। जैसे 'प' इसका ओष्ठ स्थान स्पृष्ट प्रयत्न और प्राण तथा जीभ की क्रिया करनी करण कहाता है। इसी प्रकार यथायोग्य सब अक्षरों का उच्चारण माता, पिता, आचार्य सिखलावें।''

पठन-पाठन के सम्बन्ध में सबसे प्रमुख एवं विशेष बात जो महर्षि ने बताई है वह यह है कि सदैव ऋषिकृत ग्रंथों को ही पढ़ाना चाहिए। महर्षि लिखते हैं कि—'ऋषि प्रणीत ग्रन्थों को इसलिए पढ़ना चाहिए कि वे (ऋषि) बड़े विद्वान्, सब शास्त्रवित् और धर्मात्मा थे, और अनृषि अर्थात् जो अल्प शास्त्र पढ़े हैं और जिनका आत्मा पक्षपात सहित है। उनके बनाये हुए ग्रंथ भी वैसे ही हैं।'' यह इसलिए भी कि महर्षि लोगों का आशय, जहां तक हो सके, वहां तक सुगम और जिसके ग्रहण में समय थोड़ा लगे, इस प्रकार होता है, और क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी है कि जहां तक बने, वहां तक कठिन रचना करनी, जिस

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को बड़े परिश्रम से पढ़के अल्प लाभ उठा सकें। जैसे पहाड़ खोदना कौड़ी का लाभ होना और आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना। (स. प्र. तृतीय)

महर्षि ने त्याज्य ग्रन्थों का भी वर्णन कर दिया है। यह इसलिए कि जैसे अत्युत्तम अन्न विष से युक्त होने से छोड़ने योग्य होता है। वैसे ही यह असत्य मिश्रित ग्रंथ भी त्याज्य हैं। इस सम्बन्ध में सत्यार्थ प्रकाश का पढ़ना अत्यन्त आवश्यक है। वहां महर्षि इन्हें "विषसम्प्रक्तान्नवत् त्याज्या:" बता रहे हैं। फिर त्याज्य ग्रंथों में भी कुछ तो सत्य होगा ही। उसे क्यों न ग्रहण किया जाये? इसके उत्तर में महर्षि का यह दावा है कि उनमें जो जो सत्य है वह वेदादि सत्य शास्त्रों का ही है और जो जो मिथ्या है वह उनका अपना है। जो कोई इन मिथ्या ग्रन्थों से सत्य का ग्रहण करना चाहे तो मिथ्या भी उसके गले लिपट जावे। इसलिए 'असत्यमिश्रं सत्यं दूरतस्त्याज्यमिति' अर्थात् असत्य से युक्त ग्रंथस्थ सत्य को भी वैसे ही छोड़ देना चाहिये जैसे विषयुक्त अन्न को।

अर्थ सहित पढ़ना चाहिए—

महर्षि का यह भी कथन है कि सदैव अर्थ-ज्ञान सहित पढ़ना चाहिए। उनका कथन है कि "जो वेद का स्वर और पाठमात्र पढ़ के अर्थ नहीं जानता। वह जैसा वृक्ष, डाली, पत्ते, फल, फूल और अन्य पशु धान्य आदि का भार उठाता है। वैसे भारवाह अर्थात् भार को उठाने वाला और जो वेद को पढ़ता और उनका यथावत् अर्थ जानता है, वही सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त होके देहान्त के पश्चात् ज्ञान से पापों को छोड़ पवित्र धर्माचरण के प्रताप से सर्वानन्द को प्राप्त होता है।"

पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार सबको—

महर्षि वेद के आधार पर "स्त्रीशूद्रौ नाधीयतामिति श्रुतेः"; जैसे पाखण्ड वाक्यों का प्रबल प्रतिवाद करते हुए वेद के पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार सबको देते हैं। महर्षि का तर्क है कि "जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि के पढ़ाने सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथिवी, जल, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाए हैं, वैसे ही वेद भी सब के लिए प्रकाशित किए हैं।' (सं.प्र. तृतीय समुल्लास)

वेदारम्भ और समावर्त्तन—

महर्षि ने विद्या के आरम्भ और अन्त दोनों, एक विशेष संस्कार द्वारा किये जाने का विधान किया है। प्रारम्भ में वेदारम्भ संस्कार और विद्या समाप्ति पर समावर्तन संस्कार।

विद्यार्थियों के भोजन आदि का प्रबन्ध—

विद्या ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों के भोजन छादन का कैसा प्रबन्ध हो? इस विषय में महर्षि के विचार आधुनिक समाजवादियों को भी पीछे छोड़ जाते हैं। महर्षि लिखते हैं कि—"सबको तुल्य वस्त्र, खानपान और आसन दिये जायें। चाहे वह राजकुमार वा राजकुमारी हो। चाहे दरिद्र के सन्तान हों, सबको तपस्वी होना चाहिए।"

महर्षि ने एक व्यवस्था और भी दी है। वह यह कि "उनके माता पिता अपने सन्तानों से, व सन्तान अपने माता पिताओं से न मिल सकें और न किसी प्रकार का पत्र व्यवहार एक दूसरे से कर सकें। जिससे संसारी चिन्ता से रहित होकर केवल विद्या पढ़ने की चिन्ता रखें। जब भ्रमण करने को जावें, तब उनके साथ अध्यापक रहें। जिससे किसी प्रकार की कुचेष्टा न कर सकें और न आलस्य प्रमाद करें।" (सं. प्र. तृतीय समुल्लास)।

मूल्यांकन—

महर्षि दयानन्द के शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन किया जाना अभी शेष है। फिर भी कुछ शिक्षा

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शास्त्रियों ने महर्षि के शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने पाया है कि महर्षि का शिक्षा दर्शन अपने समय से बहुत आगे था। यदि शताब्दियों आगे कहें तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। विशेष करके बच्चों की प्रारम्भिक अवस्था पर उनके विचार तो आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों से भी बढ़ चढ़ कर हैं। बच्चों को संस्कृत-हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के सिखाने की उनकी बात बहुत ही महत्व रखती है। लोग उनकी दिव्य दृष्टि एवं दूर दृष्टि पर आश्चर्य व्यक्त कर रहे हैं। जो भी हो इतना तो हम निःसंकोच कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द का शिक्षा दर्शन ही एकमात्र ऐसा शिक्षा दर्शन है। जिसे भारत अपना कह सकता है। अन्य तो सभी विदेशियों की झूठन हैं—यही एक मात्र ऐसा है जिस पर विदेशी छाया का कहीं भी कोई प्रभाव नहीं दिखाई देता।

अन्त में डा. कीर्ति देवी सेठ के शब्दों में यह कह कर लेख को समाप्त करते हैं कि—"इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि स्वामी जी वैदिक शिक्षा पद्धति, शिक्षा प्रसार और जीवनोन्नति के महान् प्रवर्त्तक एवं मार्ग-दर्शक थे। जिनके जीवन और आदर्शों से प्रेरणा लेकर शिक्षा और जीवन के क्षेत्र में क्रान्तिकारी सफलताएं प्राप्त की जा सकती हैं।" (द्रष्टव्य-शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त, पृष्ठ 3?5)

॥ इत्योम् शम् ॥

पता—आर्य निवास, चन्द्र नगर,
मुरादाबाद-244032

महर्षि दयानन्द द्वारा संस्थापित आर्यसमाजरूपी—

एक दीपक जल जल रहा है

—श्री उत्तम चन्द शरर, एम.ए.
पानीपत।

एक दीपक जल रहा है।
पी रहा है नैश तम को, ज्योति का सम्बल रहा है॥
कब न वर्षा ने किया उपहास, झंझा ने न रोका?
कब अंधेरे ने इसे बढ़ने से पग-पग पर न टोका?
रास्ता बीहड़ सही पर, पथिक सन्तत चल रहा है।
एक दीपक जल रहा है॥ 1॥

स्वयं विष पी विश्व को अमृत पिलाना कठिन है रे!
स्वयं तिल-तिल जल के भी, देना उजाला कठिन है रे!

कौन जग की वेदना में, दीप सम विह्वल रहा है?
एक दीपक जल रहा है॥ 2॥

हां! निशा बीतेगी आखिर, ध्वस्त होगा यह अन्धेरा,
रश्मिरथ चमकेगा नभ पर, जग उठेगा नव सवेरा,
सूर्य के इस सजग प्रहरी, का यही सम्बल रहा है।
एक दीपक जल रहा है॥ 3॥

☐ ☐ ☐

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओम्

गुरुवर विरजानन्द से प्रथम साक्षात्कार

(गुरु शिष्य भेंट)

—श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'

आदिकाल फिर से लौटा था, लेकर अपनी थाती।
कठिन तपस्या से बच पायी, थी प्रज्ञा की बाती।
देख रही थी, बाट प्रतीक्षा, बहिर्नयन पट मूँदे।
जाग रहे थे, कई जन्म से, अन्तर्नयन उनींदे।
मरणासन्न, अमृता-संस्कृति, विस्मृत लुटी पड़ी थी।
तम ने सूरज के घर आकर किरण-2 जकड़ी थी।

अन्धतिमिर की महा निशा में, पन्थ न सूझ रहा था।
एक दीप का तेज तिमिर से, तिलतिल जूझ रहा था।
मेरे ऋषियों का गुरुत्व था, भरे नयन में पानी।
सौंपें किसे ज्ञान-गंगा को, अमर-तृषा अकुलानी।
विरजानन्द गुरुवर की कुटिया, अपलक नयन बिछाये।
जोह रही थी बाट ज्योति का चिर अधिकारी आये।
धन्य हुआ वह भोर, तपस्या फूली नहीं समायी।
एक दिवस प्यासे अधरों ने, जब आवाज लगायी।

जिसके लिए विकलता गुरु की रात-रात जागी थी।
आज उसी ने गुरु चरणों में, स्वयं शरण मांगी थी।
दस्तक सुन, कुटिया के भीतर से यह प्रश्न जगा था।
"तुम हो कौन" प्रश्न का उत्तर प्राणों से उमगा था।

"मैं हूँ कौन ?" जानने को ही आई है जिज्ञासा।
अमृत-सिन्धु के द्वार खड़ा है कोई मरुस्थल प्यासा।
ज्ञान-सूर्य, उत्तर पाकर यह गद् गद् छलक उठे थे।
मुक्ति-तृषा से तृषित प्राण, अमृत पी पुलक उठे थे।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आदि-अन्त का मिलन देखकर जैसे चकित गगन हो।
वह था दृश्य अपूर्व, धेनु का जैसे वत्स मिलन हो।
भरे अमृत को मेघ, मरुस्थल से ज्यों आन मिले हों।
उदित सूर्य के किरण स्पर्श से, शतदल प्राण खिले हों।

शायद इससे कहीं अधिक सुख उतरा हो उस क्षण में।
'भूमा' की महिमा फीकी थी, उस गुरु शिष्य मिलन में।
चिर कृतार्थ हो गया समर्पण, गुरु चरणों में आकर।
गुरुता थी कृतकृत्य, शरण में, सौम्य शिष्यता पाकर।
आज तृप्ति ही स्वयं, तृषा पर हो बलिहार रही थी।
जन्म जन्म की प्यास कि या निज भार उतार रही थी।

किसने किसको पाया, किससे, कौन मिला था आकर?
किसने देखा दृश्य, कौन कैसे बतलाये गाकर?

क्या अपूर्ण को बाँहों भरकर पूर्ण हुआ था कोई?
याकि पूर्ण ने ही लय होकर आत्म-विकलता खोई?
धन्य हुई गुरुता, या उस दिन सहज शिष्यता पाकर?
युग-युग की आलोक, धरोहर या मनुष्यता पाकर?

भोजपुरा, मैनपुरी
(उ. प्र.)

(पृष्ठ 18 का शेष)

द्यौ-सूर्य लोक भेदन करके,
भू पर दी रवि-किरणें उतार।
माँ की पीड़ा-क्रन्दन से द्रुत—
तुमने पुकार पर दी पुकार।

बनकर अतीत का उदाहरण—
युग वर्तमान से बात हुई। ''सौमित्र'' भोजपुरी

☐ ☐ ☐

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

स्वामी दयानन्द और गोरक्षा

—डा. भवानी लाल भारतीय

विभिन्न राष्ट्रीय और मानवीय समस्याओं के प्रति स्वामी दयानन्द की दृष्टि कैसी दूरदर्शिनी थी, यह उनके गोरक्षा, कला कौशल प्रसारण आदि के लिये किये गये उद्योगों से विदित होता है। उनकी यह स्पष्ट धारणा थी कि दूध देने वाले गौ आदि पशुओं का क्रूर वध देश की आर्थिक अवस्था को विनष्ट करने वाला था। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में गाय, बैल आदि की उपयोगिता सर्व-विदित है। यही कारण है कि आर्य संस्कृति में गौ वर्ग के पशुओं की महत्ता सर्वत्र स्वीकार की गई है। वेदों में उसे अघ्न्या-अहननीय न मारने योग्य कहा है। कालान्तर में जब विदेशी शासन में गोवध प्रारम्भ हुआ तो उससे देश के करोड़ों निवासियों को आन्तरिक वेदना अनुभव हुई। कई मुसलमान शासक अपनी हिन्दू-प्रजा के प्रति सद्भावना प्रदर्शित करने हेतु गोवध पर प्रतिबन्ध भी लगाते थे, परन्तु ब्रिटिश शासन में गोवध निर्बाध गति से होने लगा गोरी सेनाओं में गोमांस भक्षण का प्रचलन था अत: यत्र तत्र बूचड़ खानों में सहस्त्रों की संख्या में निर्मम गौसंहार होने लगा।

स्वामी दयानन्द ने गोरक्षा के प्रश्न को विशुद्ध आर्थिक दृष्टि से देखा था। उनका दृष्टि-कोण पूर्णतया जीव दया प्रसूत एवं उपयोगिता-वादी था। उनकी यह स्पष्ट धारणा थी कि गोवध को रोके बिना देश को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध नहीं बनाया जा सकता। गोवध निवारण के लिए स्वामी जी ने अपने जीवन काल में जो प्रयत्न किये वे सर्व विदित हैं। उनके एतद् विषयक प्रयत्नों को निम्न प्रकार से विवेचित किया जा सकता है—

1. ब्रिटिश अधिकारियों से भेंट कर गोवध रोकने हेतु प्रार्थना करना 2. गोकरुणानिधि पुस्तक की रचना द्वारा गोरक्षा के लाभ को सार्वजनिक रूप से प्रचारित करना तथा गोकृष्यादिरक्षिणी सभाओं का संगठन 3. भारत की सर्वोच्च प्रशासिका इंग्लैण्ड की महारानी तथा ब्रिटिश पार्लियामैंट की सेवा में करोड़ों भारतीयों से हस्ताक्षर कराकर गोवध पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु आवेदन पत्र भेजना।

स्वामी जी के जीवन का अध्ययन करते समय हम देखते हैं कि जब भी उनकी अंग्रेज अधि-कारियों से भेंट होती, वे गोरक्षा की चर्चा अवश्य करते। जब 1866 ई. में वे अजमेर गये तो राजपूताना के ए. जी. जी कर्नल ब्रुक से उन्होंने गोरक्षा की उपयोगिता तथा महत्व पर विस्तार से चर्चा की। कर्नल को यह स्वीकार करना पड़ा कि गोरक्षा की महत्ता निर्विवाद है, परन्तु उसने स्वयं इस सम्बन्ध में कुछ करने में अपनी असमर्थता प्रदर्शित की। परन्तु उसने स्वामी जी को भारत के गवर्नर जनरल के नाम एक पत्र देते हुए यह कहा कि वे इस सम्बन्ध में उनसे भेंट करें। इसी प्रकार 1873 में फर्रुखाबाद निवास के समय उन्होंने पश्चिमोत्तर प्रदेश के लैफ्टिनेंट गवर्नर श्री म्यूर से भेंट की तथा उनसे निवेदन किया कि राज सेवा से अवकाश लेकर जब वे इंग्लैंड जायें तो वहां इंडिया

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आफिन के अधिकारियों को गोवध पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु प्रेरित करें।

परन्तु स्वामीजी यह भी जानते थे कि केवल अधिकारियों के समक्ष प्रार्थना और निवेदन मात्र ही पर्याप्त नहीं हैं। शासकों को लोकोपयोगी कार्य करने हेतु बाध्य करने में जनमत की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। अत: स्वामी जी ने गोरक्षा के महत्व को सर्वत्र प्रचारित करने का यत्न किया इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए उन्होंने गो करुणानिधि नामक एक लघु ग्रन्थ की रचना की। इस पुस्तक के तीन खण्ड हैं। प्रथम, समीक्षा प्रकरण में युक्ति एवं तर्क पूर्ण ढंग से गोरक्षा के महत्व का विवेचन किया गया है। गणित करके सिद्ध किया है कि एक गाय की रक्षा से ही असख्य लोगों को लाभ पहुंचता है जबकि उसके मांस से कुछ ही लोगों की क्षुधा मिटती है। हिंसक रक्षक संवाद के अन्तर्गत मांस भक्षियों के विभिन्न तर्कों का खण्डन किया गया है। इस विवेचन के अन्त में लेखक अत्यन्त भावुक होकर परमात्मा से गो आदि मूक पशुओं की रक्षा के लिए प्रार्थना करते हुए लिखता है— "हे महाराजाधिराज जगदीश्वर जो इनको कोई न बचावे तो आप इनकी रक्षा करने और हमसे कराने में शीघ्र उद्यत हूजिए।" स्वामी जी ने गोरक्षा को विशुद्ध आर्थिक और उपयोगिता वादी दृष्टि से ही देखा था, यह हम ऊपर लिख चुके हैं। यदि गोरक्षा को एक धार्मिक प्रश्न बना दिया जाय तो यह निश्चित है कि हिन्दुओं से इतर मुसलमान ईसाई आदि की इस महत्वपूर्ण समस्या के प्रति कोई सहानुभूति नहीं रहेगी। स्वामी जी तो यह मानते थे कि गो आदि पशुओं के नाश से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है। इसी प्रकार स्वामीजी ने तो गायों के ही तुल्य भैंस, बकरी आदि दुधारू पशुओं की उपयोगिता भी स्वीकार की है वे तो यह भी मानते हैं कि इसी प्रकार सुअर, कुत्ता, मुर्गा, मुर्गी और मोर आदि पशु पक्षियों से अनेक उपकार होते हैं परन्तु वे यह भी जानते थे कि कि 'सबका पालन उत्तरोत्तर समयानुकूल होवेगा, वर्त्तमान में परमोपकारक गो की रक्षा में मुख्य तात्पर्य है। इस प्रकार गोरक्षण के सर्वोपरि महत्व को स्वीकार कर उसके लिए सामूहिक प्रयत्न पर जोर देना स्वामी जी की विशेषता रही। गोरक्षा के लिए सुसंगठित प्रयास आवश्यक है, यह भी वे जानते थे। फलत: उन्होंने गोकृष्यादिरक्षिणी सभायें स्थापित करने की प्रेरणा दी तथा उसके नियमों का संकलन इसी पुस्तक के तृतीय खण्ड में दिया।

लोकमत की शक्ति को स्वामीजी भली भांति समझते थे। यदि करोड़ों की संख्या में भारत-वासी एक प्रार्थना पत्र पर हस्ताक्षर कर तत्कालीन शासकों को प्रेषित करें तो सम्भवत: उनकी फरियाद की सुनवाई हो और प्रबल जनमत को देखते हुए गोवध पर प्रतिबन्ध लगाया जा सके, इस विचार को क्रियान्वित करने के लिए स्वामीजी ने एक आवेदन पत्र तैयार कर उस पर देशवासियों के हस्ताक्षर कराने का अभियान चलाया। हस्ताक्षर किस प्रकार कराये जाएं इस सम्बन्ध में स्वामीजी के शिष्य रामानन्द ब्रह्मचारी ने श्री रूपसिंह जी के नाम अपने पत्र में लिखा इसमें सही इस प्रकार करानी होगी कि जिस महाशय के मेल (प्रभाव) में जितने आर्य पुरुष हों उन सबकी ओर से वह एक पुरुष अपने हस्ताक्षर करदे कि इतने 100 इतने 1000 इतने 100000 वा इतने 10000000 करोड़ पुरुषों की ओर से मैं अमुक नामापुरुष अपने हस्ताक्षर करता हूँ। इस प्रकार सही करके पश्चात् जितने पुरुषों की ओर से उसने सही की हो उन सबके हस्ताक्षर कराके अपने पास रख लें। स्वयं स्वामीजी ने अपनी इस योजना को मन्त्री आर्यसमाज दानापुर के नाम प्रेषित अपने पत्र मे इस प्रकार व्यक्त किया— 'मैं आप परोपकार प्रिय धार्मिक जनों को सब जगत् के उपकारार्थ गाय, बैल और भैंस की हत्या के निवारणार्थ दो पत्र एक तो सही करने और दूसरा जिनके अनुसार सही करनी है दो पत्र भेजता हूँ। इसको आप प्रीति और उत्साह पूर्वक स्वीकार कीजिए, जिससे आप महाशय लोगों

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की कीर्ति इस संसार में सदा विराजमान रहे। इस काम को सिद्ध करने का विचार इस प्रकार किया गया है कि दो करोड़ से अधिक राजे महाराजे और प्रधान आदि महाशय पुरुषों की सही कराके आर्यावर्तीय श्रीमान् गवर्नर जनरल साहेब बहादुर से इस विषय की अर्जी करके उपरि लिखित गाय आदि पशुओं की हत्या को छुड़वा देना। इस पत्र के साथ स्वामी जी द्वारा, सही करने का पत्र तथा दूसरा जिसके अनुसार सही करनी है दोनों भेजे गये थे।

स्वामीजी के शिष्य रामानन्द ब्रह्मचारी ने पूर्वोक्त महाशय रूरसिंह को अपने पत्र में प्रेरणा दी कि आप पुनः दो एक मास की छुट्टी लेकर पंजाब द्वाबा, पटियाला और काश्मीर आदि अच्छे अच्छे राजस्थानों में गोवध के नुकसान व्याख्यान द्वारा विदित कर बड़े बड़े प्रधान राज पुरुष तथा राजा महाराजाओं की सही करावे तो बस आप आर्यावर्त में सर्वोत्तम प्रतिष्ठा और महापुण्य के भागी होवें। ब्रह्मचारी के ही एक अन्य पत्र से विदित होता है कि गोरक्षा हेतु यह हस्ताक्षर आन्दोलन द्रुततर गति से प्रगति कर रहा था। कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले भारत मित्र पत्र ने भी इस आन्दोलन का समर्थन किया था। बम्बई और गुजरात से सहस्त्रों लोगों के हस्ताक्षर कराये गए। शाहपुरा के राजाधिराज ने 40000 मनुष्यों से हस्ताक्षर कराकर स्वामीजी की सेवा में प्रेषित किये। ब्रह्मचारीजी ने यह भी शिकायत की है कि इस महोपकारक काम में डाक वालों ने बहुत दुष्टता की है। रजिस्टर्ड पत्र भी गायब होने लगे क्योंकि मेरठ के लाला रामशरणदास के पास 300 रजिस्टर्ड पत्र भेजे गए थे किन्तु वे उन्हें नहीं मिले। उदयपुर से फर्रुखाबाद के लाला कालीचरण के नाम भेजे गए अपने पत्र में स्वामीजी ने गोरक्षा तथा राजकार्य में आर्य भाषा के प्रवृत्त होने विषयक दो मुख्य कार्यों का उल्लेख किया है तथा निर्देश दिया है कि गोरक्षार्थ सही और आर्यभाषा के राजकार्य में प्रवृत्त होने के अर्थ शीघ्र प्रयत्न कीजिए।

इसी प्रकार के पत्र पं. गोपालराव तथा बम्बई के श्री सेवकलाल कृष्णदास को लिखे गये हैं। भारत मित्र के सम्पादक को पत्र लिखकर स्वामीजी ने पूछा है कि जो एक पत्र बहुत दिन हुए मैंने लिखा था, जिसमें गोरक्षार्थ अर्जी देने का मसौदा वहां के वकील बैरिस्टरों से पूछ के आप लिखें, उसका क्या हुआ? अब उसमें अधिक विलम्ब करना मैं उचित नहीं समझता। इस प्रकार हम देखते हैं कि गोरक्षा हेतु स्वामीजी प्रबल जनमत तैयार कर रहे थे। उनके द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले इस प्रार्थना पत्र पर महाराणा उदयपुर, महाराजा जोधपुर तथा महाराज बूंदी आदि स्वदेशी राजाओं ने भी हस्ताक्षर किए थे। यह खेद की बात है कि असमय में ही स्वामीजी के दिवंगत हो जाने के कारण उन्हें अपने इस संकल्प की पूर्ति में सफलता नहीं मिली और गोरक्षा का उपयोगी प्रश्न सदा के लिए पिछड़ गया।

—अध्यक्ष, दयानन्द अनुसंधानपीठ,
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़-14

□ □ □

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

"दयानन्द ऋषिराज तुम्हीं ने..."

—राधेश्याम आर्य 'एडवोकेट'
एम. ए., साहित्यरत्न
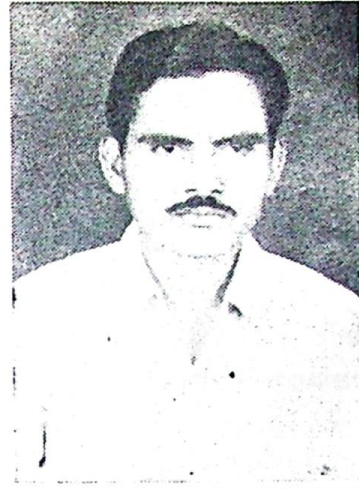
तुम्हें दया आगार कहें, या मनुष्यता का उद्धारक,
तुमको दिव्य प्रकाश कहें, या दिव्य प्रभा के पुण्य प्रसारक,
दयानन्द ऋषिराज तुम्हीं ने, भारत को दी नवल सांत्वना।
तुम थे निश्चय ही वेदों की गरिमा के सन्देश प्रवाहक।

ऋषि परम्परा का अग्रदूत या तुम्हें कहें संस्कृत प्रहरी,
देश-धर्म का रक्षक या हम तुम्हें कहें भारत-तरणी,
दयानन्द ऋषिराज तुम्हीं ने किया महाउपकार जगत का।
गीत तुम्हारे त्याग-तपों का, गाती गंगा-कावेरी।

तेज पुंज हम तुम्हें कहें या ज्ञान-सत्य के मृदु आलोक,
तेजस्वी-ओजस्वी थे तुम, विद्या-बुद्धि-विवेक विलोक,
दयानन्द ऋषिराज तुम्हीं ने, जन-जन का कल्याण किया—
सद्यत्नों से दिव्य तुम्हारे, वसुन्धरा हो उठी विशोक।

अपराजेय यती तुम थे, या हिमगिरि से भी अधिक महान,
राष्ट्र चेतना के स्वरूप थे, तुम थे भारत के अभिमान,
दयानन्द ऋषिराज तुम्हीं ने, शौर्य-शक्ति-संकल्प दिया—
नव जागृति का, नव्य क्रांति का, चला दिया तुमने अभियान।

नष्ट किया अबलाओं का, विधवाओं का दारुण क्रन्दन,
हुआ विशृंखलित से समाज में, नव्य चेतना का स्पंदन,
दयानन्द ऋषिराज तुम्हीं ने, सोता देश जगाया था—
दानवता हो गयी पराजित, हुआ मनुजता अभिनन्दन॥

पता : मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर

□ □ □

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

मनुस्मृति में तप का एक विवेचन

—प्रा. भद्रसेन, होशियारपुर

मनुस्मृति में जहां वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं एवं पक्षों का विवेचन है, वहां जीवनोपयोगी अन्य बातों [तत्वों] की तरह [तप] का भी अनेकत्र वर्णन आता है। जैसे कि भारतीयों और उनके साहित्य की धारणा है कि किसी बड़े कार्य की सिद्धि के लिए प्रथम तप करना चाहिए। क्यों कि तप से ही महान् कार्य सिद्ध होते हैं। यही धारणा मनुस्मृति में भी कई स्थलों पर दिखाई देती है। जैसे कि—तपस्तप्त्वाऽसृजद्यं तु. 33 [तप तप करके जिसको उत्पन्न किया।] अहं प्रजाः सिसृक्षुस्तु तपस्तप्त्वा सुदुश्चरम् 1,34—विविध प्रकार की प्रजा को उत्पन्न करने की इच्छा वाले मैंने अति कठिन तप तप करके। तपो योगात्सृष्टम् स्थावर जङ्गमम् 1,41 तप के द्वारा ही स्थावर-जंगम सृष्टि को रचा। तपः परं कृतयुगे 1,86—सत्य युग में तप ही अन्यों की अपेक्षा महान् था। तं हि स्वयम्भूः स्वादास्यात्तपस्तप्त्वादितोऽसृजत् 1,94—स्वयम्भू ने अपने मुख से ही सबसे पहले तप-तप कर ब्राह्मण को बनाया।

प्रजापतिरिदं शास्त्रं तपसैवासृजत्प्रभुः।
तथैव वेदानृषय. तपसा प्रतिपेदिरे ॥11,244॥

तप से ही प्रजापति ने इस शास्त्र को बनाया और तप के द्वारा ही ऋषियों ने वेदों को प्राप्त किया।

तप की महिमा और उपयोगिता को बताते हुए मनुस्मृतिकार ने बड़े मार्मिक शब्दों में कहा है—विद्यातपोभ्यां भूतात्मा (शुद्ध्यति) 5,159 जैसे जल से शरीर की शुद्धि होती है, ऐसे ही विद्या और तप से प्राणियों के अन्तर आत्मा की प्रगति, विकास, तथा संशुद्धि होती है। अर्थात् आत्मिक उन्नति का तप एक प्रमुख साधन है।

किसी महान् कार्य के सम्पादन के लिए जहां तप को आवश्यक बताया गया है। वहां अनेक स्थलों पर महान् कार्यों की सिद्धि का श्रेय भी तप को ही दिया गया है अर्थात् जो कोई भी जिस किसी क्षेत्र में सफल हुआ है या किसी ने कोई उच्च पद पाया है, वह सब तप का ही फल है।

ऋषयः संयतात्मानः फलमूलानिलाशनाः।
तपसैव प्रपश्यन्ति त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥11,237।

फल, मूल और वायु पर निर्वाह करने वाले संयमी ऋषि भी तप के द्वारा ही चर-अचर सहित तीनों लोकों के यथार्थ दर्शन करते है।

औषधान्यगदो विद्या दैवी च विविधा स्थितिः।
तपसैव प्रसिद्ध्यन्ति तपस्तेषां हि साधनम् ॥11,372।

औषधि, नीरोगता, विद्या और अलौकिकता की प्राप्ति या इनमें प्रखरता तप से ही होती है, क्योंकि इनमें सिद्धहस्त होने का मार्ग तप [अभ्यास] ही है। दिवं यान्ति तपो बलात् 11,241 मनुष्यों की तो बात ही क्या वृक्ष, पशु, पक्षी भी तप के बल से स्वर्ग पहुंच जाते हैं। तप की महिमा तो बहुत ही अधिक है—यदि इसको सार रूप में कहें तो, ऐसे कहना चाहिए।

यद्दुस्तरं यद्दुरापं यद्दुर्गं यच्च दुष्करम्।
सर्वं तु तपसा साध्यं तपोहि दुरतिक्रमम् ॥11,238॥

जिसका पार पाना कठिन है, जो अप्राप्य है, जहां पहुंचना मुश्किल है और जिस कार्य का करना

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कष्ट साध्य है, वह सब तप [सतत अभ्यास] से सिद्ध किया जा सकता है, क्योंकि तप में अजेय शक्ति है। इसलिए—

तपोमूलमिदं सर्वं दैवमानुषकं सुखम् ।
तपोमध्यं बुधैः प्रोक्तं तपोऽन्तं वेददर्शिभिः ।11,235।

बुद्धिमानों और वेद के विद्वानों के विचार से हर प्रकार के दैनिक और लौकिक सुखों की प्राप्ति का मूल तप ही है। मनुस्मृति की धारणा के अनुसार बड़े बड़े पापों और दोषों से तप के द्वारा प्रायश्चित्त करके मुक्ति पाई जा सकती है और इससे पाप का नाश हो जाता है। शुद्ध्यन्ति जप्येन तपसैव च 11,144, —तपसा अध्ययनेन। पापकृन्मुच्यते पापात् 11,228, 240। तत्सर्वं निर्दहन्त्याशु तपसैव तपोधनाः 11,242, तपसा किल्बिषं हन्ति, 12,104। यहीं तक ही नहीं अपितु तपसश्चरणैश्चोग्रैः साधयन्तीह तत्पदम् 6,75 संन्यासी लोग उपवास आदि उग्र तपों से परमपद मोक्ष को प्राप्त करते हैं, का भी विधान है। अर्थात् मनुस्मृति के वर्णन के अनुसार सब प्रकार के लौकिक-अलौकिक कार्यों की सिद्धि का तप एक रामबाण है।

तप की इतनी महान् महिमा देखकर मन में एक स्वाभाविक जिज्ञासा होती है कि मनुस्मृति की दृष्टि में तप का क्या अभिप्राय है अर्थात् किन-किन बातों, व्यवहारों का नाम तप है। जब तप के स्वरूप को जानने के लिए हम मनुस्मृति का परिशीलन करते हैं तो बहुत ही ज्ञानवर्धक बातों का परिचय मिलता है। जिससे स्पष्ट होता है कि मनुस्मृति की दृष्टि में तप बहुत ही व्यापक तत्व है। तपो विशेषैः 2,165 [विशेष प्रकार के तपों से] सर्वस्व तपसो मूलमाचारं जगृहुः परम् 1.110 [सब प्रकार के तपों का आधार आचार ही माना गया है] इत्यादि उद्धरणों से यही भावना पुष्ट होती है।

पहले अध्याय के अन्तिम श्लोकों में सारे ग्रन्थ की विषय सूची दी गई है। जिसमें वानप्रस्थ के लिए तापस्यं 1,114 शब्द का प्रयोग किया गया है, इसी प्रकार तापसेष्वेव 6,27; तापसैः 6,51; तापसा 12,48 शब्द वानप्रस्थ के लिए आए हैं, क्योंकि वह अपने व्रतों, नियमों का विशेष पालन करता है।

दूसरे अध्याय में कई बार तप शब्द का विवेचन आया है, जिसमें प्राणायाम, वेदाध्ययन और माता-पिता और आचार्यजनों की सेवा को ही तप का नाम दिया गया है। यह सारा वर्णन बहुत ही सुन्दर है। प्राणायामं परमं तपः 2, 83; प्राणायामा... विज्ञेयं परमं तपः 6,70 प्राणायाम की विधि से प्राणों का व्यवस्थीकरण महान् तप है। प्राणायाम के लाभ बताते हुए स्वयं मनुस्मृतिकार ने भी कहा है—

दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः ।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात् ।।6,71

जैसे अग्नि में धातुओं को तपाने से उनके मल कट जाते हैं। ऐसे ही प्राणायाम से इन्द्रियों के दोष दूर हो जाते हैं।

गुरौ वसन् संचिनुयाद् **ब्रह्माधिगमिकं तपः 2,164**—ब्रह्मचारी आचार्य कुल में रहता हुआ वेदाध्ययन रूपी तप को इकट्ठा करे। इस श्लोक में तप का ब्रह्माधिगमिक विशेषण बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। जिसका स्पष्ट ही अभिप्राय है कि **वेद के ज्ञान की प्राप्ति तप है** और वह केवल साधारण तप नहीं है अपितु सर्वोत्कृष्ट तप है, इसी का वर्णन करते हुए कहा गया है—

वेदमेव सदाभ्यसेत्तपस्तप्स्यन् द्विजोत्तमः ।
वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते ।।2,166।।

द्विजों में श्रेष्ठ ब्राह्मण तप तपता हुआ सदा वेद का अभ्यास [अध्ययन] करे। वेद का अध्ययन ही ब्राह्मण का यहां सबसे बड़ा तप कहा गया जाता है।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ हैव स नखाग्रेभ्यः परमं तप्यते तपः ।
यःस्त्रग्व्यपि द्विजोऽधीते स्वाध्यायं शक्तितोऽन्वहम्
॥2,167॥

जो ब्राह्मण माला आदि धारण करके अर्थात् सुविधापूर्ण जीवन बिताता हुआ, यदि प्रतिदिन अपनी शक्ति के अनुसार वेद का अध्ययन करता है तो वह सर्वोत्कृष्ट तप तपता है । अर्थात् **वेदाध्ययन महान् तप है,** वह भी विशेष करके ब्राह्मण के लिए । संनियम्येन्द्रियग्रामं तपोवृद्ध्यर्थमात्मनः 2,175 से इन्द्रिय-संयम तप या तप में सहायक है की भावना झलकती है ।

तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्यस्य च सर्वदा ।
तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु तपः सर्वं समाप्यते ॥2,228॥
तेषां त्रयाणां शुश्रूषा परमं तप उच्यते ।2,229॥

माता-पिता और आचार्य की सदा सेवा तथा आज्ञा पालन करे, क्योंकि इन तीनों की सेवा या प्रसन्नता में ही सारे तप अथवा उनका फल आ जाता है, इन तीनों की सेवा ही सबसे बड़ा तप है । अर्थात् **माता-पिता और आचार्य की सेवा और आज्ञा पालन महान् तप है ।**

क्रमशो वर्धयंस्तपः 6,23; तपश्चरंश्चोग्रतरं शोषयेद्देहमात्मनः 6,24
इन दोनों श्लोकों से शरीर शोषी वर्षा सर्दी-गर्मी का सहन और कठोर उपवास आदि तप के रूप में माने गए हैं । जैसे कि आजकल तप का प्रायः भाव लिया जाता है ।

ब्राह्मणस्य तपो ज्ञानं तपः क्षत्रस्य रक्षणम् ।
वैश्यस्य तु तपो वार्ता तपः शूद्रस्य सेवनम्
॥11,236॥

ज्ञान की प्राप्ति ब्राह्मण का तप है, प्रजा की रक्षा क्षत्रिय का तप है । व्यापार वैश्य का तप है पूर्व वर्णों की सेवा ही शूद्र का तप है । अर्थात् **अपने अपने कर्त्तव्य को निष्ठा से पालन करना तप है** । तपसैव प्रपश्यन्ति 11, 237; तपसैव प्रशुध्यन्ति 11,238 इत्यादि वचनों से तप का अर्थ अभ्यास ही सिद्ध होता है ।

संनिम्येन्द्रियग्रामं तपोवृद्ध्यर्थमात्मनः 2,175।

अपने तप की वृद्धि के लिए इन्द्रियों का संयम करे अर्थात् तप की सिद्धि के लिए इन्द्रिय संयम अत्यावश्यक है । सर्वस्य तपसो मूलमाचारं जगृहुः परम् 1,110 हर प्रकार की तपस्यायों का कारण आचार है अर्थात् तप तभी सिद्ध होता है जब आचार का पालन किया जाता है ।

इस प्रकार तप का बहुत ही भावपूर्ण वर्णन हमें मनुस्मृति में प्राप्त होता है, जो कि तप के विवेचन की दृष्टि से जहां उपयोगी है, वहां व्यवहार की दृष्टि से भी उपादेय है । यह वर्णन आधुनिक जीवन के लिए भी सर्वथा उपयोगी है । आवश्यकता है केवल उसको अपने व्यवहार में ला कर अपने और समाज के जीवन को सुखी बनाने की ।

पता : — साधु आश्रम,
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान,
होशियारपुर-1446021

□ □ □

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

आर्यसमाज के प्रति

अनन्तराम मिश्र 'अनन्त'

धर्मधन, अध्यात्म-जीवन, कृषि-विधायक,
शूरता-सीमन्त का सिन्दूर पावन—
वेद की संस्कृति लिये जो हँस रहा था,
देश अपना नीति-वसुधा-हेतु सावन ।
है दिया उद्गीथ[1] खग-मुख से उषा ने,
लाजवन्ती साँझ ने दी ह्री सुहावन ।
दी सुधी तप ने, जयश्री साधना ने,
प्रकृति ने अर्पित किये आनन्द-साधन ।

देश भारतवर्ष वह अपना मनोरम—
दासता के पंक में आकण्ठ डूबा ।
पूर्व की लाली प्रतीची से प्रभावित—
जब हुई, रवि का न भी मन रंच ऊबा ।

आचरण-कर्त्तव्यनिष्ठा की धरा पर—
मत्त भ्रष्टाचार के गजवृन्द झूमे,
रक्त-शोषण, द्रव्य-दोहन में निपुण जब—
थे विदेशी भी यहाँ स्वच्छन्द घूमे ।

विस्मरण की कुटिल विकराली कुहू ने
वेद-पूनम पर किया धावा अशोभन—
और नाना ग्रन्थ, नाना पन्थ उपजे—
पा गया छल-छद्म जब उद्दण्ड यौवन ।

धूर्त, दम्भी, स्वार्थनिष्ठ बने पुजारी—
जब विकल होकर बहुत भगवान रोए ।
मोह की आँधी भयंकर बिलखिलायी,
आर्य-वसुधा के सभी सौभाग्य सोए ।

पुण्य के ही नाम पर जब पाप पनपा,
शील-रवि को राहु ने पूरा ग्रसा जब ।
धर्म का अस्तित्व, अन्धाधुन्धियों की—
कर्कशा मँझधार में जाकर फँसा जब ।

फोड़ डाले नेत्र नैतिकता-वधू के—
निन्द्य कृत्यों के अमंजुल सायकों से—
राष्ट्र के ही कुछ निगोड़े दानवों ने,
जो हुए थे आधुनिक खलनायकों-से ।

दुष्प्रथाओं ने किया उत्पात दारुण—
रूढ़ियों का ज्वर न जाना चाहता था ।
घोर तामस वृत्ति को उत्थान देकर,
गाल अवनति के बजाना चाहता था ।

जब कला-संगीत नत, साहित्य-नीरज—
था दुःखी अवहेलना की साँझ पाकर ।
नारियों पर, हरिजनों पर वज्र टूटे,
सभ्यता अकुला उठी सर्वांग जर्जर ।

तब प्रभामय पूज्य सात्त्विक चेतना के—
बन्ध ले अँगड़ाइयाँ, फिर कसमसाए ।
विश्व-सागर में उठे वे ज्वार बनकर,
क्रान्ति ने संकल्प जो भी थे बनाए ।

संघटित उनका अजरतम रूप शाश्वत—
'मूलशंकर' 'दया का आनन्द' आया ।
अप्रतिम जिस ब्रह्मचारी ने उमङ्गित—
वल्लभा अपनी तपस्या को बनाया ।

पुत्ररत्न सुदिव्य उपजाया प्रिया ने—
मान्य 'आर्यसमाज' जो जग को सुहाए ।
बम्बई-सा सूतिकागृह सूत्र सुख का,
कौन है, दाम्पत्य जो ऐसा निभाए ?

सूनु[2] के दशगुण[3] विदित सारे जगत् को,
प्रौढ़ता जिनमें कि शैशव से भरी है ।
सूक्ष्म तन अमरत्व के इतिहास-जैसा,
दृष्टि पाकर, हो गयी संस्कृति हरी है ।

1. सामगान 2. पुत्र 3. आर्यसमाज के दस नियम

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'सत्य अर्थों का प्रकाशक' ग्रन्थ प्यारा—
इस तनय का मित्र है प्रारम्भ से ही।
है कलेवर राष्ट्रभाषा का मनोहर—
विश्व-जागृति-भाव जिसका पूर्ण देही[1]।

अद्रिनायक-सा महान् गुरुत्व-मण्डित,
प्रेरणा-गंगा निरन्तर वह रही है।
स्नान कर होता कृतार्थ न कौन जिसमें ?
प्रगति की पावन कथा-सी कह रही है।

हँस रही शिक्षा सुधान्वित चन्द्रिका-सी,
गुरुकुलों के चन्द्र से उत्पत्ति पाकर।
छात्र जिसके कोक[2], शोकविहीन दिन-से,
नम्रतामय ज्ञान की सम्पत्ति पाकर।

कौन-सा वह क्षेत्र, जिसमें बीज इसने –
है नहीं बोए परिष्कृत और पूरे ?
अंकुरित फिर कन्दलित होकर जिन्होंने—
कर दिए हैं साफ सब पाखण्ड घूरे।

सत्य-दृढ़ता का महा अध्याय खोला—
है यथार्थ-निमित्त, आन्दोलन महत्तम।
ज्योति, जीवन की जगाने में समुद्यत,
समन्वय के हेतु कर उद्दाम उद्यम।

क्षीर-नीर-विवेककारी हंस है जो,
विश्व के उपकार में सन्तत लगा है।
कर अविद्या का दिया अहिवात[3] खण्डित,
वेद-विद्या का बसीठी[4] जो सगा है।

ढोंग की सब खाँइयों को पाट डाला,
जो मनुजता का रहा है केन्द्र सुन्दर।
स्वप्न आशाएँ सँजोती ही रही हैं—
युग-दृगों में दिव्य जिसके गति-उजागर।

तर्क-पटुता को दिया मधुमास नूतन,
ढह गयीं प्राचीन धूमिल मान्यताएँ।
स्वाभिमान जगा, भगा हीनत्व का तम,
जगमगायी शिष्ट साहस की उषाएँ।

आननों के कुवलयों[5] पर ऋत[6]मधुर मधु—
प्राप्त करने मन्त्र-मधुकर गुनगुनाये।
कर्म-दिनमणि से सदा खिलते रहे जो—
शान्त जीवन में गले से छवि लगाये।

आर्य-धरती के सरल सस्कार, जिनको—
डस रहे थे बहु विधर्मी नाग-जैसे,
क्रूर केकी[7]-कल्प आर्यसमाज के स्वर—
बन चले उनको जलाने आग-जैसे।

ओ महर्षि-सुपुत्र ! तुम आते नहीं तो—
देश का इतिहास ही कुछ और होता।
ज्ञान के मन्दिर न दिखलाते कहीं पर,
सब जनेऊ-चोटियों का स्वत्व सोता।

अर्थ वैज्ञानिक किए सब युक्ति-संगत,
बुद्धि-सम्मत 'शुद्धि' का डंका बजाया।
प्रज्वलित जो प्रीति का था दीप, उसमें—
भीति का झंझा, न भर चाञ्चल्य पाया।

शंख फूँका साम्य का है, गूँज जिसकी—
रुधिर-सी धावित शिराओं में समुत्तम।
रूप व्यापक 'त्रैत दर्शन' का दिया है,
भ्रान्त अब न मरीचिका में मन-कुरंगम।

छन्द-अक्षत, पुष्प-निष्ठा, काव्य-दीपक—
दीप्त श्रद्धा-थालिका में ले, तुम्हारी—
आरती मैं कर रहा सन्ध्या-सकारे,
शान्ति शोधक आर्य, आर्यसमाज ! प्यारी।

---

1. आत्मा 2. चक्रवाक।
3. सधवात्व, सुहाग
4 दूत 5. कमलों
6. दैवी सत्य।
7. मोर

पता : केन ग्रोअर्स नेहरू पी. जी. कॉलेज,
गोला गोकर्णनाथ, लखीमपुर-खीरी
(उ. प्र.)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

"वेद हैं आदि शक्ति के मूल"

—श्री विश्वमित्र गुप्त
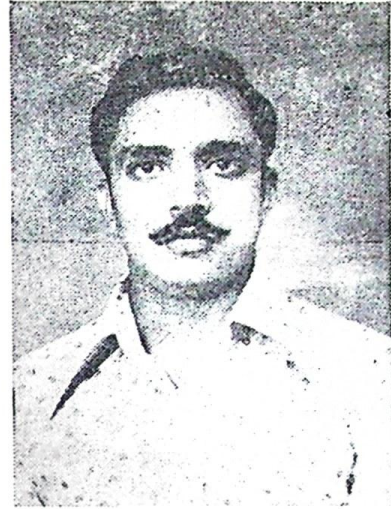
भरा जिसमें जीवन संदेश, ज्ञान का जो अकूत भण्डार ।
वेद हैं आदि शक्ति के मूल, ईश! का सर्व प्रथम उपहार ॥
दूर जो करते हैं अज्ञान, सभी मानव हैं एक समान ।
सिखाया करते है सौहार्द, सूक्तियां सुन होता कल्याण ॥
व्यथित मानव का करते त्राण, सुखों का जो बतलाते भेद ।
विश्व के सब धर्मों के मूल) हमारे हैं ये पावन वेद ॥
वेद हैं सब धर्मों के स्रोत, सृजन के सर्व प्रथम ये ग्रन्थ ।
दिया विभु ने हमको था ज्ञान, सिखाया मानवता का पन्थ ।
मनीषी करते हैं दिन रात, वाचते शोधित से संवाद ।
न कोई पा पाया है पार, वेद करते हैं दूर विवाद ॥
मान्यता जगती में सब ओर, विदित जगती भर में विख्यात ।
दर्शनों के होने संवाद, दार्शनिक पाते सुखद प्रभात ॥
गूढ़ जीवन के तत्व विशेष, द्वेष का मेटा करते क्लेश ।
आर्य होवें जगती के लोग, वेद यह देते हैं उपदेश ॥
कर्म का जिनमें बड़ा महत्व, कर्म में बटे हुए हैं वर्ण ।
(सभी का पालन हारा ईश नही है कोई वर्ण-कुवर्ण) ॥
ज्ञान की बहती निर्मल गंग नहाते उसमें जन जो विज्ञ ।
दिया करते पावन सन्देश, उजाला जग में देते दिव्य ॥
ज्ञान के अक्षय हैं ये पुंज, बिखेरा करते है आलोक ।
जगत् में जिनकी पावन ज्योति मिटाया करती है सब का शोक ॥
सभी हैं मानव मात्र समान, नही है ऊंच-नीच का भेद ।
परस्पर करो सदा ही प्रीत, सिखाते हैं ये हम को वेद ॥
चलो दोहराएँ यह संकल्प बनायेंगे हम जग को आर्य ।
वेद मन्त्रों पर मनन विचार, कर्म हो आर्यों का अनिवार्य ॥

पता — दिलेर गंज, शाहबाद, हरदोई

☐ ☐ ☐

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

समय को पहचानो

—श्री सत्यदेव विद्यालंकार

सन् 1883 की 30 अक्तूबर को ऋषि दयानन्द का निर्वाण हुआ। 8 नवम्बर 1883 को लाहौर में ऋषि की पुण्य स्मृति में दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक स्कूल बनाने का विचार आर्यसमाज में उपस्थित किया गया। जून 1-1-1886 के दिन आर्यसमाज मन्दिर लाहौर में हाई स्कूल की स्थापना हुई। म. हंसराज जी ने अपना जीवन इस कार्य के लिए अर्पण कर दिया। 5 दिन में 300 विद्यार्थी प्रविष्ट हो गए। 1 जनवरी 1889 तक संस्था की स्थिर निधि में एक लाख पांच हजार चार सौ छः रुपए जमा हो गए।

1898 ई. में प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल का प्रस्ताव स्वीकार किया। 1902 ई. में तपस्वी म. मुन्शीराम जी ने तीस हजार रुपया एकत्र कर, हरिद्वार से लगभग तीन मील दूर गङ्गा के किनारे खैर और बेर के घने जंगल में थोड़ी सी भूमि साफ कर छप्पर डालकर गुरुकुल का प्रारम्भ किया। गुरुकुलका विचार आंधी की तरह फैला। 25 वर्ष के अन्दर-2 समस्त भारत में सत्ताईस गुरुकुलों की स्थापना हो गई।

उस प्रारम्भ के समय डी. ए. वी. आन्दोलन को तथा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को देश की समस्त शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का समाधान समझा गया। एक अपूर्व उल्लास और उत्साह का वातावरण था।

आज लगभग एक सौ वर्ष बीत गए। अब न वह वातावरण है न वह उल्लास। नीति शास्त्र में कहा गया है—"राजा कालस्य कारणम्"—समय परिवर्तन राजा के आधीन होता है। अब परिभाषा बदल गई है। अब ठीक यह है "अर्थं कालस्य कारणम्"। धन की व्यवस्था समय को बदल देती है। महर्षि वेद व्यास जी ने जो कहा है उसे थोड़ा बदल कर कहा जाय तो यह होगा—

ऊर्ध्वबाहु विरौम्येतत् सर्व एव शृणोति माम्।
अर्थात् धर्मश्च कामश्च सोऽर्थः सर्वत्र सेव्यते॥

अभिप्राय यह है कि मैं हाथ उठाकर घोषणा करता हूँ कि सब मेरी बात मान रहे हैं। धन की शक्ति से ही धर्म और काम सिद्ध होते हैं। अतः धन की शक्ति को सब प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं।

यह धन और राजनीति का युग है। सम्पूर्ण देश में उथल पुथल हो रही है। पंजाब में तो इस उथल पुथल ने उग्र रूप धारण कर लिया है। राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं का आक्रोश वर्तमान है। कुछ चालाक राजनीतिज्ञों ने उस आक्रोश का मुख, धर्म का नाम लेकर, निरंकारियों की ओर कर दिया था। वह दल आर्य संस्थाओं और आर्य जनों की ओर भी हो सकता है।

इसीलिए इस छोटे से लेख में आर्यसंस्थाओं के लिए 2-3 व्यावहारिक बातों की ओर संकेत करना चाहता हूँ।

पहली बात तो यह है कि आर्य संस्था, या प्रत्येक शिक्षा संस्था के विद्यार्थी को आत्म रक्षा में समर्थ होना चाहिए। आत्म रक्षा के लिए अस्त्र-शस्त्र का प्रशिक्षण तथा शरीर का समर्थ होना

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बहुत आवश्यक है। कुछ वर्ष तक यह होता रहा, जैसे भेड़िया भेड़ों के झुण्ड से एक भेड़ को खींच ले जाता है। बाकी भेड़ें विटर-विटर देखती रहती हैं। यह अब न होना चाहिए। आर्यसंस्थाओं के विद्यार्थियों में शक्ति उत्पन्न कर इसका उपाय अवश्य करना पड़ेगा। आर्य समाज ने आज तक किसी पर प्रहार नहीं किया। पर आत्म रक्षा का प्रबन्ध तो आवश्यक है।

दूसरी बात आर्थिक दृष्टि से कहना चाहता हूँ। नौकर क्रमश: इतने मंहगे हो जाएंगे कि केवल दान से चलने वाली संस्थाओं के लिए इन्हें रखना असम्भव हो जाएगा। घरों में ऐसा ही हो रहा है। म. गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में फोनिक्स आश्रम में एक प्रयोग किया था। आश्रम की भूमि विस्तृत थी। अत. यह प्रयोग किया गया कि आश्रमवासी अपने लिए अन्न, शाक तथा फल स्वयं उत्पन्न करें उन्होंने तो निवास स्थान बनाने का भी स्वयं प्रयत्न किया।

एक छोटा सा ग्रामीण घर में घिया, करेला, फली तथा कद्दू की बेल लगा कर अपने लायक शाक उत्पन्न कर लेता है। एक आधे अमरूद और पपीते का पौधा भी लगा लेता है। जहां 40-50-60 विद्यार्थी हों वहां क्या यह कठिन है? कि वे अपने लायक सब्जी उत्पन्न न कर सकें। पपीते जैसे फल के वृक्ष न लगा सकें जो 9-10 मास में ही फल देता है। दिन में केवल एक घण्टा समय देना पर्याप्त है। पर हम इस दरिद्र देश में, संस्थाओं में, मालियों की सेनाएं रखकर फूल लगाते हैं और हजारों रुपयों की साग-सब्जी बाजार से मंगाते हैं। खेलों में जो Non-Productive परिश्रम है और समय धन व्यय करते हैं। मैं खेलों के विरुद्ध नहीं पर समय विभाग बन सकता है।

एक और बात गोशाला की है। एक ग्वाला दो भैंस रखकर अपने परिवार को पालता है। प्राय: हिन्दू संस्थाएं कुछ गउएं रख कर चन्दे के आधार पर गऊशाला चलाना शुरू कर देती हैं और बीसियों वर्ष गुजरने पर भी गोशाला घाटे का सौदा रहता है। ऐसी हिन्दू धर्म की गोरक्षा पद्धति कब तक चलेगी? गुजरात की प्रसिद्ध "आणन्द डेयरी" No Profit No Loss की पद्धति पर चल रही है। हमारे गुरुकुलों की प्रायः हर संस्था के साथ गोशाला होती है। मैंने आज तक नहीं सुना कि किसी गोशाला में लाभ हो। ऐसा क्यों? दूध का हिसाब ठीक हो—आय-व्यय पर नियन्त्रण भी, अच्छी दुधारू गऊवें रखने आदि के यत्न हों, जो लाभ न हो तो घाटा भी तो न होना चाहिए। [लिखक का संकेत ऐसी गऊशालाओं की ओर विशेष है जो कि गोपालन दूध मात्र के लिए करते हैं, फिर भी घाटे में जाती हैं। जो गऊशालायें मात्र गोसेवा के उद्देश्य से खोली गई हैं, उनमें तो आय का प्रश्न ही नहीं उठता और उनके पोषण का आधार भी दान वा राजकीय सहायता के अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकता—सम्पादक]

इस अर्थ प्रधान युग तथा विस्फोट प्रधान पंजाब के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव हैं। एक निवेदन मात्र है।

मैंने जो सुझाव ऊपर दिए हैं वे इस दृष्टि से नहीं दिए कि श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय में कुछ अभाव है। मैं जानता हूँ कि इस विद्यालय के कार्यकर्ता कुशल हैं, यह भी जानता हूँ कि संस्था पर इसके प्रधान सेठ शिव चन्द जी भामाशाह का वरद हस्त है तथा सुयोग्य मन्त्री श्री चतुर्भुज जी की प्रेरणा और दान इसके आधार हैं। पर सुझावों का आधार यह है:

1. पंजाब की प्रत्येक आर्य संस्था का प्रथम कर्त्तव्य है कि पंजाब के नवयुवकों के मन से

(शेष पृष्ठ **56** पर)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

दयानन्द उद्‌बोध

स्व: पं. हुकम चन्द जी 'निर्मुक्त'
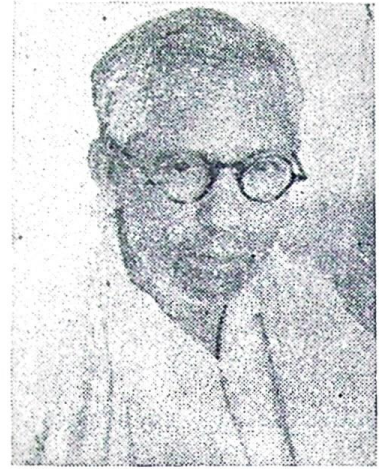
जब अनाचार का जग में,
होता है ताण्डव नर्तन ।
जब मानवता का होता,
दानवता में परिवर्त्तन ।।
जब पाप ताप बढ बढ कर,
करते अपनी मन मानी ।
जब धरा धाम पर होती,
शुभ धर्म कर्म की हानि ।।
जब महाशान्त सागर में,
आ उठता ज्वार भयंकर ।
जब कण कण जगती तल का,
हो उठता है प्रलयङ्कर ।।
अवतार तभी होता है,
युग पुरुषों का युग युग में ।
उद्धार धरा का होता,
उन के सक्षम कर युग में ।।
करुणाकर ने जब हम पर,
करुणा कण थे बरसाये ।
दयनीय दु:खी भारत में,
तब दयानन्द थे आये ।।
जो पहले भी आती थी,
शिवरात वही थी आई ।
पर आज पात्र को पाकर,
उद्‌बोध साथ थी लाई ।।

मानो युग युग का अर्चन,
था आज सफल हो आया ।
पत्थर ने भी शंकर का,
आभास उसे दिखलाया ।।
अनुकूल दिवस जब आते,
पत्थर भी हैं समझाते ।
प्रतिकूल दिनों में भारी,
व्याख्यान व्यर्थ हो जाते ।।
मूषिक शिव पिण्डी पर था,
निर्माल्य कुतरता फिरता ।
यह देख ऋषि था जागा,
था महादम्भ से भागा ।।
पा वेद ज्ञान वह ज्ञानी,
था परब्रह्म में लागा ।
सच्चा शंकर था पाया,
भारत का ताप मिटाया ।।
वह भक्त एक ईश्वर का,
था सच्चे शिव शंकर का ।
वह चेतन था ऋषिवर था,
वह स्वयं मूलशंकर था ।।
वह वेद भाष्य का कर्त्ता,
क्यों ओस चाटता फिरता ?

(शेष पृष्ठ 56 पर)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

वैदिक संगीत और आर्यसमाज

लेखक—श्री सिया बिहारी शरण

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के नियमों में से प्रथम नियम में ही यह घोषणा कर दी है कि "सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।" इसके अनुसार भारतीय संगीत विद्या जिसकी परम्परा प्रत्यक्षत: सामवेद से जुड़ी हैं, का आदिमूल भी परमेश्वर ही है। वैदिक युग की संस्कृति प्रचीनतम है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद आदि में संगीत के उल्लेखों की संख्या इतनी विशाल है कि उससे वैदिक कालीन संगीत की महत्ता का पता चलता है।

वेद में संगीत का स्वरूप—

ऋग्वेद वैदिक साहित्य का प्राचीन ग्रन्थ है। इसमें संगीत माध्यम से ही ईश्वरोपासना की गई है:—"स्वरन्ति त्वा सुतो नरो वसो निरेक उक्थिन:" अर्थात्—हे सर्वान्तिर्यामी जगदीश्वर, अपना उत्थान चाहने वाले मानव अपने हृदय स्थित भक्तिभाव को सुस्वर द्वारा आपसे प्रार्थना करते हैं।

"अभिस्वरन्ति बहवो मनीषिणो राजनमस्य भुवनस्य निंसतो"

अर्थात्:—असंख्य नर नारी इस विश्व के सृजनहार पर—ब्रह्म परमेश्वर के प्रति संगीत द्वारा प्रार्थना कर उन्हें प्रसन्न करते हैं।

वैदिक काल में संगीत का स्वरूप पवित्रतम था। यह सामान्यजनों के मनोरंजन के लिए न था। वैदिक ऋचाओं का ज्ञान आत्म विनोद या जन-चित्तरंजनार्थ न था अपितु यज्ञों में ईश्वर आराधना के लिए महान् ऋषियों द्वारा इसका प्रयोग होता था। सभी धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक संस्कारादि कार्यों के शुभअवसरों पर कुछ एक सदाचारी वेदज्ञों द्वारा वेदगान की परम्परा थी। सभी को वेदगान करने का अधिकार प्राप्त न था ऐसे वेदज्ञ ब्राह्मण जिन्हें स्वाभाविक मधुर, कण्ठस्वर, वेदज्ञान के अनुकूल स्वभाव, कार्य कुशल और चतुर समझा जाता था, उन्हें ही वेदगान का योग्य अधिकारी माना गया था और उन्हें ही उद्गात्री (वेदगान) की मौखिक शिक्षा दी जाती थी। वेदगान शिक्षा की यह परिपाटी वैदिक युग से पौराणिक काल पर्यन्त समग्र भारत में प्रचलित रही। संगीत मोक्ष प्राप्ति का साधन माना जाता था। याज्ञवल्क्य शिक्षा के निम्नलिखित श्लोक से इसकी पुष्टि होनी है:—

वीणा वादन तत्वज्ञ: श्रुति जाति विशारद:।
तालज्ञश्च प्रयासेन मोक्षमार्गं निगच्छति॥

संगीत दिव्य है—

वेद में सूर्य को दिव्यगन्धर्व कहा है—

"दिव्यो गन्धर्व: केतन्न: पुनातु वाचस्पतिबाचिना स्वदतु" यजु० 9/1

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्थात् :—हे देव मेरे घर में आलस्य निराशा और थकावट आदि अनेक प्रकार का कूड़ा करकट जमा हो गया है। आप अपने दिव्य गन्धर्व को भेज कर इसे साफ कर दीजिए।

निश्चय ही उत्तम संगीत का श्रवण करने से हृदय का कलुष दूर होकर उसमें एक नवीन आनन्द की ऊर्जा भर जाती है ठीक उसी प्रकार सूर्य रश्मियाँ तम को दूर कर अपने दिव्य आलोक से समस्त भूमण्डल को आलोकित कर देती हैं।

वैदिक गान का विश्लेषण—

'ऋचायें', 'युजुस्' तथा 'सामगीति' ये तीन प्रकार के मन्त्र वेदों में आये हैं। सामवेद में गेय ऋचायें तथा युजुस् दोनों ही हैं। ऋचाओं के पद्य भाग को गेय युजुस् कहतें हैं और इन सबके समूह को 'साम' कहा गया है। सामवेद की ऋचाओं को आर्चिक और युजुस् को 'स्तोम' कहा गया है।

'आर्चिनो गायन्ति' 'गाथिनो गायन्ति' और 'सामिनो गायन्ति' ऐसा गान दो स्वरों का और 'सामगान' एक स्वर का, 'गाथा' गान दो स्वरों का और सामगान तीन स्वरों का होता था। 'आर्चिक' को ऋचागान 'गाथिक' को गाथागान और 'सामिक' को सामगान कहा गया है। बाद में सामगान को चार स्वरों में गाया जाने लगा। इसी चतुः स्वरक सामगान को 'स्वरान्तर' कहा गया।

गान्धर्व और वेद—

वेदों के चार उपवेद बताए गए है। यथा:—

तत्र वेदानामुपवेदाश्चत्वारो भवन्ति।
ऋग्वेदस्यायुर्वेद उपवेदो, यजुर्वेदस्य धनुर्वेद उपवेदः।

सामवेदस्य गान्धर्व वेदः, अथर्ववेदस्यार्थ शास्त्रं चेत्याह व्यासः स्कधो वा। (चरण व्यूह)

'ऋग्वेद' का 'आयुर्वेद' यजुर्वेद' का 'धनुर्वेद', 'सामवेद' का गान्धर्ववेद' और अथर्ववेद का अर्थ शास्त्र।

'गान्धर्व' का अर्थ है वाणी को धारण करने वाला। यही 'गान्धर्व' शब्द जो वैदिक साहित्य में 'संगीत' के लिए प्रयुक्त होता था, आगे चलकर पौराणिक साहित्य में संगीत का व्यवसाय करने वाली एक जाति विशेष के लिए व्यवहृत होने लगा। इसी जाति ने गान्धर्ववेद की रक्षा की। अतः इस जाति का नाम भी 'गन्धर्व अथवा 'गान्धर्व' पड़ गया। वेद का 'गन्धर्व' शब्द ईरान में 'गन्देखा तथा यूनान में 'केन्टाराल' के रूप में पाया जाता है। वेद का 'अप्सरा' शब्द मिश्री भाषा में 'नर्तिका' के अर्थ में पाया जाता हैं। भारत की 'वीणा' को मिश्र में 'बैनी' तथा 'करनाल' को 'कोटोलेन' के नाम से जाना जाता रहा है।

सामवेद—

सामवेद को चारों वेदों में श्रेष्ठ माना गया है गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने अपनी विभूतियों की गणना करते हुए कहा है, वेदानां सामवेदोऽस्मि' अर्थात् वेदों में साम वेद हूँ। महाभारतकार व्यास भी—'सामवेदश्च वेदानाम्' कहकर सामवेद को सर्वश्रेष्ठ घोषित करते हैं। इसका कारण यह है कि 'साम' की रचना गान-वेद के रूप में ही हुई है और 'गान' एक ऐसा आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक साधन है जो मानव जीवन को सर्व सम्पन्न बनाकर उसे सर्वश्रेष्ठ बनाता है।

'साम' को वाणी का रस कहा गया है। यथा :—

वाचः ऋग्रसः ऋचः सामरसः। साम्नः उद्गीथोरस
छ० छा० १/१/२

अर्थात् :—वाणी का रस 'ऋचा' है, ऋचा का रस 'साम' है और साम का रस 'उद्गीथ' अथवा आलाप' है। साम की व्युत्पत्ति देते हुए कहा गया है, सा+अमः=साम। सा का अर्थ है ऋचा और 'अमः' का अर्थ है 'आलाप' इस प्रकार

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साम का अर्थ है 'आलाप से युक्त ऋचाओं का गान'।

सामवेद के ही 'मन्त्र' में उसे काव्य की संज्ञा दी गई है :—"देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति" अर्थात् :...हे मानवो, भगवान् के इस काव्य को देखो, जो न कभी क्षीण या पुराना होता है और न ही कभी मरता है। भगवान् को इसी लिए 'कवि' भी कहा गया है कि उसने इस ऋचा रूपी काव्य की रचना की। इसीलिए वेदों को सर्वोत्तम 'काव्य' और भगवान् को सर्वश्रेष्ठ 'कवि' कहा गया है।

वैदिक छंद—

वेदगान में चौदह प्रकार के छन्दों का उल्लेख भी मिलता है, जिनके नाम हैं :—गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती, अतिजगती, शक्वरी, अतिशक्वरी, अष्टी, अत्यष्टि, धृति, अतिधृति। 'गायत्री' वेद का पवित्रम छन्द है।

इस प्रकार भारत में समस्त कलाओं और विद्याओं का मूल स्रोत 'वेद' को ही माना जाता है। अन्य कलाओं के विषय में चाहे कुछ भी कहा जाए परन्तु भारतीय संगीत विद्या के सम्बन्ध में तो यह अवश्य ही सत्य है।

आर्य समाज और संगीत—

आर्य समाज प्रत्यक्ष रूप से वेदानुगामिनों का ऐसा संगठन है जिसके लिए वेद की शिक्षायें ईश्वरीय आदेश हैं। कम से कम स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा पवित्र आर्य समाज की स्थापना के पीछे यही उद्देश्य था जिसकी उद्घोषणा उन्होंने संसार के समक्ष 'सत्यार्थ प्रकाश महाग्रंथ को रचना करके की।

ऐसी ईश्वरीय वाणी, वेदमंत्रों, वैदिक ऋचाओं के सस्वर 'गान' का विधान है, उन्हें केवल बांचा नहीं जाता। गायत्री मंत्र गाया जाता है इसलिए उसको संज्ञा 'गायत्री' है। कहने का अभिप्राय: यह है 'गान' या 'संगीत' की परम्परा वेद से प्रारम्भ से ही जुड़ी है, जैसा कि प्रस्तुत लेख में पूर्व वर्णन से स्पष्ट है। वेद और 'गान' की इस अभिन्नता का सम्बन्ध शरीर और वस्त्र जैसा है। समाज में हम निर्वस्त्र शरीर की कल्पना भी नहीं कर सकते। अब देखना यह है कि 'वैदिक गान की इस अभिन्न सांगीतिक परम्परा का पालन आर्य समाज में आज कैसा, कितना और किस प्रकार हो रहा है?

वर्तमान व्यवस्था—

यह ठीक है कि आज वैदिक ऋचाओं का मूल-रूप में गान करने वाले उद्गाता अत्यल्प हैं और इन्हें समझने समझाने वाले तो उससे भी कम हैं। आज हमारे उपदेशक और भजनोपदेशक जन सामान्य में संस्कृत भाषा के ज्ञान के अभाव के कारण वैदिक संदेश का प्रचार जन भाषा में ही करते हैं। किन्तु भाषा चाहे वैदिक हो या आधुनिक, वह प्रभावी तभी हो सकती है जब उसे संगीत का उचित सान्निध्य प्राप्त हो जैसा कि वैदिक गान में है। यह लिखने में आज कोई संकोच नहीं कि 'वेदोपदेश' और 'संगीत' का शाश्वत सम्बन्ध आज खंडित हो रहा है। आर्य समाज में संगीत रूपी वस्त्र आज जीर्ण-शीर्ण और अनुपयुक्त हो गए है। आज सक्षम वा असक्षम भजनोपदेशकों को तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों जितने वेतन पर उन्हें 'मुलाजिम' रखकर हम यह समझ बैठे हैं कि वैदिक प्रचार कार्य के मूल उत्तरदायित्व से हम उऋण हो गए हैं भजनोपदेशक भी अल्पज्ञता के कारण फिल्मी धुनों पर शब्दों की जोड़ गाँठ करके प्रबुद्ध समाज में जहां स्वयं उपहास के पात्र बनते हैं वहीं आर्य समाज की स्थिति भी कम हास्यास्पद नहीं बनाते।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुछ सुझाव—

संगीत के माध्यम से सशक्त व सरस वेद प्रचार के लिए निम्नलिखित सुझावो की ओर ध्यान देने का निवेदन है।

(1) समर्थ, सुरुचिपूर्ण और संगीत में सुशिक्षित भजनोपदेशकों का चुनाव होना चाहिए।

(2) उपदेशक महाविद्यालयों में भजनोपदेशकों के प्रशिक्षणों की भी उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

(3) कार्यक्रमों में शास्त्रीय रागों पर आधारित या अन्य आकर्षक धुनों पर आधारित भजनो पदेश ही हों। मात्र फिल्मी धुनों पर आधारित बनावटी गानों का पूर्ण बहिष्कार होना चाहिए।

(4) निवास आदि की सुविधाओं के अतिरिक्त उपदेशकों वा भजनोपदेशकों काकम के कम वेतन एक कालेज लेक्चरर् के बराबर तो होना ही चाहिए, यदि उन्हें वेतन पर रखा जाना हो तो अन्यथा स्वतन्त्र रूप से अच्छे प्रभावशाली भजनोपदेशकों को कार्यक्रमों पर अच्छी दक्षिणा देकर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(5) उपदेशकों/भजनोपदेशकों को 'नौकर', 'कर्मचारी' या आदेशानुसार 'जलसा भुगताने वाले' न समझ कर उनमें श्रद्धाभाव रखना चाहिए कि वे पवित्र वेदी पर बैठ कर हमें सन्मार्ग का दर्शन कराते हैं।

(6) उन्हें वे सभी प्रकार की सुविधायें व साधन उपलब्ध करते रहना समाज को अपना उत्तरादायित्व समझना चाहिए जिससे भजनोपदेशक अपने कर्त्तव्य को उचित रूप से निभाने में समर्थ हो सकें :

☐ ☐ ☐

(पृष्ठ 51 का शेष)

हीनता और हीन वीर्यता की भावना को समाप्त कर दे।

2. प्रत्येक जनता की सहायता से चलने वाली संस्था में अधिक से अधिक स्वावलम्ब की भावना जागृत होनी चाहिए।

3. गोरक्षा-आन्दोलन आयोजन-आन्दोलन में बदलना चाहिए तथा गोपालन को आर्थिक दृष्टि से लाभकारी सिद्ध किया जाना चाहिए यही ऋषि की गोशाला निधि की मूल भावना है।

पता—शान्ति सदन 145/4 सैंट्रल टाऊन
जालन्धर

(पृष्ठ 52 का शेष)

क्यों कमठ-उरोजों से पय,
    लेने के हेत उतरता ?
क्यों मृगमरीचिका भीतर,
    पानी की आशा करता ?
क्यों ईंट पत्थरों में वह,
    भगवान्-भावना भरता ?
पा दिव्य ज्ञान वह ज्ञानी।
    था लगा बाँटने दानी।
थे कितने कष्ट उठाये,
निजव्रत से टला न मानी ॥
    विष पान कर गया शंकर,
पर उगला उसे सुधाकर।
    सत्पुरुष काम करते है,
विघ्नों से नहीं डरते हैं ॥

भूतपूर्व-आचार्य श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत
महाविद्यालय करतारपुर (जालन्धर)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

सुधा-सिन्धु आर्याभिविनय का मंथन

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र "जिज्ञासु" अबोहर

ईश्वर से कुछ भी माँग लेने का नाम प्रार्थना नहीं है। किसी विशेष वेश-भूषा को धारण करने से कोई उपासक नहीं बन जाता। शरीर पर राख रमा लेने से कोई आध्यात्मिक व्यक्ति नहीं बन पाता। फारसी के सूफ़ी कवि मौलाना रोमी की एक मसनवी में एक उदाहरण दिया गया है। भेड़ें चराने वाला एक बालक भक्ति भाव से एक दिन अल्लाह को पुकार कर कहने लगा कि यदि तू मेरे सामने आ जाये तो मैं तेरी कबा को (कोट को) झाड़ दूँ। कहा तो यह सब कुछ भक्ति भाव से, परन्तु बालक की इस विनती से पता चलता है कि उसमें ईश्वर-विश्वास तो है पर उसे ईश्वर के स्वरूप का तनिक भी ज्ञान नहीं। वह ईश्वर को एक देहधारी व्यक्ति समझता है। अल्लाह भी मानवीय शासकों की भाँति (कबा) कोट आदि पहनता है। आँधी आने पर जैसे हम धूलि झाड़ते हैं ऐसे ही अल्लाह के वस्त्र झाड़ने की आवश्यकता है। जब तक हमें किसी वस्तु के स्वरूप का ज्ञान ही नहीं, तब तक हम उसका कोई लाभ नहीं उठा सकते।

महर्षि दयानन्द ने आर्याभिविनय के रूप में मानव समाज को सुधा-सिंधु दिया है। यह एक उच्च कोटि का आध्यात्मिक ग्रंथ है। इसका बारम्बार पाठ करने से एक पौष्टिक आध्यात्मिक भोजन मिलता है। कल्याण-मार्ग का बोध होता है। व्यक्ति भटकने से बचता है। महर्षि ने स्वयं ही इस ग्रन्थरत्न की भूमिका में लिखा है कि इसकी रचना का क्या प्रयोजन है। महर्षि ने चार प्रयोजन बताए हैं।

1. ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान 2. भक्ति 3. धर्मनिष्ठा 4, व्यवहार शुद्धि।

इसको और स्पष्ट करते हुए लिखते हैं—

1. जिससे नास्तिक और पाखण्ड मतादि अधर्म में मनुष्य लोग न फँसे।
2. सब मनुष्य अत्युत्तम हों।
3. सब पर जगदीश्वर की कृपा हो।
4. मनुष्य दुष्टता को छोड़कर श्रेष्ठता को स्वीकार करें।

एतद् विषयक ऋषि की कामना क्या थी ?

"यह मेरी परमात्मा से यही प्रार्थना है, सो परमेश्वर अवश्य पूरी करेगा।" इससे पता चला कि ऋषिवर मनुष्यों को ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान कराना परमावश्यक समझते थे। इस ज्ञान के उपरान्त ही भक्ति का आनन्द आ सकता है। भक्ति भाव के ज्ञान से ही धर्मनिष्ठा होगी तभी व्यवहार शुद्धि सम्भव है।

वैदिक धर्म व्यवहार शुद्धि की मुख्यता देता है। व्यक्ति का आचरण उसकी उच्चता की कसौटी है, न कि उसकी विश्वास की कथनी। वैदिक

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अध्यात्मवाद साधना से व्यक्ति को बड़ा मानता है साधनों से नहीं। ऋषि ने इसी उद्देश्य से व्यवहारभानु नाम से एक पृथक् उत्तम पुस्तिका की रचना की है।

सुधा सिंधु आर्याभिविनय की भूमिका से ऋषि के भावों को उधृत करते हुए ऊपर बताया है कि ऋषि चाहते थे कि लोग दुष्टता तज दे और मनुष्य अत्युत्तम हों। आज लोग नगरों को तो Holy पवित्र बनाना चाहते हैं, मानवों के हृदय पवित्र करने का अभियान कोई नहीं चलाना चाहता मानव पवित्र होंगे तभी नगर व राष्ट्र पवित्र बन सकेंगें। ऋषि की ईश्वर से यही प्रार्थना थी। वह इसके लिए ईश्वर की कृपा का आह्वान करते हैं।

ऋषि के इस अद्भुत ग्रन्थ का मनन करने से वैदिक अध्यात्मवाद के गूढ़ रहस्यों का सहज ज्ञान प्राप्त होता है। ऋषि एक विनय में लिखते हैं :—

जो आप का मित्र और जिसके आप मित्र हों, उसको दु.ख क्योंकर हो।"

यह एक ऐसा मार्मिक वाक्य है जिस पर किसी भी टिप्पणी की आवश्यकता नही। हम यदि यह कह दें कि यह एक प्रभु भक्त की उच्चतम अवस्था का चित्र है, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं।

मनुष्य को क्या चाहिए, "आप मुझको ऐहिक तथा पारमार्थिक इन दोनों सुखों का दान शीघ्र दीजिए, जिससे सब दु:ख दूर हों, हमको सदा सुख ही रहे।" ऋषि का यह वाक्य बताता है कि वैदिक धर्म लोक व परलोक दोनों का सुधार चाहता है। राज्य कैसे बढ़ता है? ऋषि एक ही विनय में दो बार यह विनती करते है :—

'हमको भी सत्यविद्या से युक्त सुनीति दे के साम्राज्याधिकारी सद्यः कीजिए"। फिर लिखते हैं, "हम पर सहाय करो, जिससे सुनीति युक्त हो के हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढ़े।" अनीतियों से अनैतिकता से व्यक्ति व समाज दोनों डूबते हैं। सुनीति से ही यश बढ़ता है।

प्रभु कृपा से स्तुति प्रार्थना—

"आपकी कृपा से हम लोग सदैव आपकी ही स्तुति प्रार्थना और उपासना करें।" वेद केवल ईश की उपासना का उपदेश आदेश देता है। ईश्वर के स्थान पर जड़ की पूजा, नदी, सरिता, सागर, वृक्ष, कबर आदि की पूजा पाप है। केरल में तो वरकला में समुद्र को भी 'पाप नाशम्" कहा जाता है।

होड़ किस लिए?

पद, प्रतिष्ठा, धन, सत्ता आदि को प्राप्त करने की होड़ सी लगी हम देखते हैं। ऋषिवर एक विनय में एक निराली होड़ लगाने की कामना करते हैं—"हे सुख और मोक्ष की इच्छा करने वाले जनो! उस परमात्मा को ही "हूमहे" हम लोग प्राप्त होने के लिए अत्यन्त स्पर्धा करते हैं कि उसको हम सब मिलेंगे।" आर्यसमाज ऋषि की इस चाहना को लेकर कुछ करे तो संसार का बेड़ा पार हो जावे। स्पर्धा ईश प्राप्ति की ही चाहिए। मात्र स्कूल खोलने से देश का कुछ विशेष बनने वाला नहीं।

ईश्वर की आज्ञा का प्रणय—

यह भी वैदिक अध्यात्मवाद की एक निराली देन है। ऋषि की विनय है,

"आपकी आज्ञा का प्रणय अर्थात् उत्तम न्याययुक्त नीतियों में प्रवृत्ति"

Wedded to Divine Will यह कामना ऋषि ने शब्दों में ही व्यक्त नहीं की।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हम कह सकते हैं कि यह ऋषि की प्रतिज्ञा थी जिसको ऋषि ने सर्वांश में पूर्ण कर दिखाया। जैसे कविवर 'प्रकाश' की रचना है :—

जब कि बुझने लगा शहर अजमेर,
देह दीपक दयानन्द ऋषिराज का।
तेरी इच्छा हो पूर्ण हे प्यारे प्रभु,
बोलकर वाक्य यह मुस्कराने लगे॥

इसको ईश्वर की आज्ञा का प्रणय कहेंगे। वैदिक धर्म में वही बड़ा है जो प्रभु की आज्ञा का पालन करता है। अवैदिक मतों में वही बड़ा है जो प्रभु के अटल सृष्टि के नियमों को तोड़कर दिखाने की बात करे। इसे यह लोग चमत्कार Miracles कहते हैं।

हम सब पुरुषार्थी हों—

वैदिक दर्शन वा वैदिक अध्यात्मवाद की एक विशेषता यह है कि यह पूजा व पुरुषार्थ का मूल है। महर्षि प्रार्थना से पूर्व पुरुषार्थ का होना अनिवार्य घोषित करते हैं। आर्याभिविनय में आता है, "आपके अनुग्रह से हम सब लोग परस्पर प्रीतिमान्, रक्षक सहायक, परम पुरुषार्थ हों।" 'सह वीर्यं करवावहै' इस आर्ष वचन की व्याख्या में भी "परस्पर परम पुरुषार्थ से प्राप्त करें", ऐसा वाक्य में लिखा है।

'अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम' ऐसी उक्तियां वैदिक धर्म में अमान्य है।

"परमेश्वर की आज्ञा का विरोध—परमेश्वर का विरोध है" :—"इससे सब मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर और उसकी आज्ञा से विरुद्ध कभी नहीं हों।" इस विनय से स्पष्ट है कि प्रभु के नियमों का पालन करना न करना प्रभु का विरोध है। ऋषि का यह वाक्य इस ग्रंथ की भूमिका से लिया गया है।

आनन्दघन ईश्वर से कदापि दूर न हों :

श्री महाराज दयानन्द भाव विभोर होकर प्रभु से विनय करते हैं, "उस आनन्द से हम लोगों को क्षणमात्र भी अलग न रखें।" जीव इस स्थिति को एकदम तो प्राप्त नहीं कर सकता। प्रभु से ऐसा अनुराग तो जन्मों की साधना का फल है।

गद्गद् होकर प्रभु को पुकारें—

"इन्द्र परमात्मा को सखा होने के लिए अत्यन्त प्रार्थना से गद्गद् होके पुकारें।" मनुष्य की उच्चतम आध्यात्मिक स्थिति तो यही है कि गद्गद् होकर प्रभु चरणों में उपस्थित हों। त्रय ताप से पीड़ित रो-धो कर तो सब पुकारते हैं। इसमें तो कोई विशेषता नहीं है, जो अत्यन्त विनयी गद्गद् होकर ईश्वर की उपासना करता है, ऐसा तो कोई विरला ही दयानन्द महर्षि जैसा विमल आत्मा हो सकता है। हमारा आदर्श तो यही है। भक्त अमीं चन्द जी ने ऋषि के अन्त समय का ध्यान कर एक मार्मिक पद्य रचा था।

परिव्राजकार्थ स्वामी दयानन्द।
पधारा है परलोक डके बजाता॥

नित्य सत्योपदेश :

ईश्वर सब जीवों के हृदय में नित्य अपना सत्योपदेश करता है। यह अनूठी बात ऋषि ने कही व दुहरा-2 कर लिखी है। "स्वशक्ति से सब जीवों के हृदय में सत्योपदेश नित्य ही कर रहे हों।"

पाप मुक्त होने के लिए और कल्याण मार्ग का पथिक बनने के लिए ऋषि ने इस सत्योपदेश के सुनने पर बल दिया है। क्या हमें प्रभु का यह फोन सुनाई देता भी है? यदि नहीं देता तो हम मन्दभागी है।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुक्ति मार्ग और कोई नहीं है ;

"बिना परमेश्वर की भक्ति और उसके ज्ञान के मुक्ति का मार्ग कोई नहीं है।" यह है वैदिक आध्यात्मिक दृष्टिकोण। यहां ज्ञानपूर्वक भक्ति पर बल है। उस ज्ञान का भी कुछ महत्व नहीं जिसे पाकर व्यक्ति में ईश्वर भक्ति की प्रवृत्ति न जगे।

अखण्ड उपासना :

ईश्वर भजन कभी कर लिया और कभी न किया, इससे प्रवृत्ति आध्यात्मिक नहीं बन सकती महर्षि लिखते हैं,

"आपकी अखण्ड उपासना में सदा रहें"

इन शब्दों पर सब प्रभु प्रेमियों को मनन करना चाहिए।

एक आध्यात्मिक महारोग से बचिए :

जीव अपने आप को ब्रह्म जाने अथवा ब्रह्म को जीव माने किंवा जीव को ब्रह्म का अंश या वंश मानना यह एक आध्यात्मिक रोग है। इससे परमेश्वर का तिरस्कार होता है और जीव अभिमानी बनता है। ऋषि एक विनय में लिखते हैं—"जीव अविद्या आदि दोष युक्त है, ब्रह्म अविद्यादि दोष युक्त कभी नहीं होता। इससे यह निश्चित है कि जीव और ब्रह्म एक न थे, न होंगे और न हैं ही —इससे जीव ब्रह्म में एकत्व मानना किसी मनुष्य को योग्य नहीं।

वैदिक आध्यात्मिक जीवन कैसा होता है? आर्य जीवन की पहचान है पात्रता और पवित्रता। जप-तप साधना किस लिये? पवित्रता शुद्धता के लिए ताकि हम ईश्वर के निकट पहुंचें। पवित्रता की प्राप्ति के लिए पात्रता चाहिए। पात्रता के लिए पवित्रता चाहिए। हम लोग यज्ञवादी है। यज्ञ हवन बिना पात्रों के सम्भव ही नहीं। अग्निहोत्र के लिए पात्र चाहियें। जीवन यज्ञ की सफलता के लिये भी पात्र चाहिए। पात्र कौन है? जिस पर ईश्वर की कृपा हो। ईश्वर की कृपा किस पर होगी? जो पात्र होगा। प्रत्येक मार्ग पर चलेगा। उसकी आज्ञा से जिसका प्रणय होगा।

ऋषि ने आर्याभिविनय में 64 बार ईश्वर की कृपा का आह्वान किया है। नास्तिक मुंशी राम को ऋषि का यही कहना था कि तेरे मस्तिष्क में मैंने मनवा दिया। तेरे मन में प्रभु निष्ठा और विश्वास की आस्तिकता की ज्योति तो प्रभु की कृपा से ही जगेगी। यह भी सम्भव है कि उपर्युक्त संख्या 64 से भी चार ऊपर हों। दो तीन वर्ष पूर्व मैंने शोध किया तो यह संख्या 56 लगी अब और ध्यान से अध्ययन किया तो यह 64 निकली।

> ऋषि जी ने 8 (आठ) बार इस ग्रंथ में, ईश्वर के अनुग्रह को पुकारा है।
>
> ईश्वर की सहाय को ही सात बार पुकारा है।
>
> ईश्वर के कृपा कटाक्ष का तीन बार आह्वान किया।

ईश्वर के करुण कटाक्ष की भी एक बार कामना की गई। प्रभु की करुणा को भी एक बार पुकारा है। ऋषि ईश्वर को कृपा सिंधु, कृपा सागर करुणामय, कृपानिधि कहकर पुकारते हैं। यह अद्भुत भक्ति भाव किस उद्देश्य से है? ऋषि का वचन है, "आपकी कृपा से हे ईश्वर! सदैव सुखी हो के आपकी आज्ञा और उपासना में तत्पर रहूँ।" यदि हम उपासना में तत्पर नहीं, उसकी आज्ञा पालन की प्रवृत्ति नहीं तो सुख क्यों कर सकता है? इसका अर्थ यह हुआ कि प्रभु की कृपा के पात्र नहीं बने। उसकी कृपा कैसी? यदि पात्रता ही नहीं बनी है। यह है वैदिक अध्यात्म सुधा।

□□□

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

कोटि कोटि तुझको प्रणाम

श्री नरेश कुमार शास्त्री, व्याकरणाचार्य, साहित्यचार्य

हे युगद्रष्टा ! हे युगस्रष्टा ! युगपरिवर्त्तक ! युग-ऋषि महान् !
जन-जन-मानस के मान्य-ऋषे ! हों कोटि कोटि तुझको प्रणाम।
थी व्याप्त चर्तुदिक् पापमयी, अज्ञान-तिमिर-घनघोर-घटा।
बन दिव्य-दिवाकर तमस् मिटा, फैला दी श्रुति की भव्य छटा।

कुछ धूर्त्त दुष्ट चालाकों ने, अपने कल्पित आलापों में॥
'नारी ही नरक का द्वार' कहा, 'पद-त्राण', 'विषय-व्यापार' कहा॥
'नारी निर्माता माता है, जन-जन की भाग्य विधाता है॥
कह 'शीर्ष मुकुट' दे उचित मान, तूने पाया गौरव-वितान।

मत-पन्थ-गढों को तोड़ दिया, जड़-पूजा-घट को फोड़ दिया।
आलोकित कर जन मानस को, सत्पथ दर्शा नव-मोड़ दिया।
पी गरल-विषम-विष के प्याले, तूने वेदामृत दान दिया।
बन शङ्कर, शङ्करमूल ! मुने ! तूने जन-जन-कल्याण किया॥

हा ! हन्त ! दयालो ! देवदूत ! भारत मां के सच्चे सपूत !
असु-हारी को दे प्राण-दान, कर लिया परम पद को प्रयाण।
हे शान्ति-शील ! हे क्रान्ति-दूत ! उत्तुङ्ग-हिमालय-सम-महान् !
हे देव-दयालो ! दयानन्द ! हों कोटि कोटि तुझको प्रणाम॥

आचार्य—श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय,
करतारपुर, 144801 (जि० जालन्धर)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

वैदिक संस्कृत साहित्य का नि:शुल्क शिक्षण संस्थान

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय, करतारपुर

अन्तर्गत—श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर

प्रगति—परिचय 1985

प्रस्तुकर्त्ता—चौ० ऋषिपाल सिंह, 'एडवोकेट', अधिष्ठाता—विद्यालय

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक भवन का शिलान्यास महाशय बद्रीनाथ जी द्वारा प्रदत्त 52000/- की राशि से 10 मार्च 1956 को हुआ तथा विधिवत् ट्रस्ट का निर्माण एवं पन्जीकरण प्रभु आश्रित जी महाराज के नेतृत्व में 1966 में हुआ श्री गुरु विरजानन्द जी के शताब्दी वर्ष 1970 में पूज्य स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज के उद्यम से श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय की स्थापना हुई। वर्ष 1979 तक विद्यालय का परीक्षा सम्बन्ध श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्या पीठ गुरुकुल झज्जर रोहतक से था परन्तु कुछ न्यूनताओं को देखते हुए वर्ष 1980 से इस विद्यालय को गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार के साथ जोड़ दिया गया, जिसे 1983 में विश्वविद्यालय ने स्थाई मान्यता प्रदान कर दी।

विद्यालय के उद्देश्य :

1. वैदिक धर्म तथा आर्य समाज के प्रचारार्थ उच्चकोटि के पण्डित, योग्यतम विद्वान् पुरोहित तैयार करना इस विद्यालय का मुख्य उद्देश्य है।
2. संस्कृत साहित्य की उन्नति करना।
3. वैदिक वाङ्मय का प्रचार-प्रसार करना।
4. संस्कृत तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में जनता की अभिरुचि उत्पन्न करना।
5. समाज सेवक एवं राष्ट्र भक्त आस्तिक युवक तैयार करना।

विद्यालय के उद्देश्य :

1. यहाँ छात्र परस्पर मैत्रीपूर्ण एवं यथायोग्य व्यवहार से आवद्ध रहते हैं।
2. मात्र रु. 30 मासिक के अत्यल्प व्यय पर विद्यालय भोजन, शिक्षण, तथा आवास की व्यवस्था करता है।
3, यदि कोई छात्र सेवाव्रत में, अध्ययन में अथवा धार्मिक गतिविधियों में विशेष भाग लेता है तो उसे पुरस्कृत किया जाता है।
4. संस्कृत भाषण में छात्रों की अभिरुचि पैदा करने के लिये परीक्षा में विशेष अंक दिये जाते हैं।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

5. भोजन शाला में अपनी गऊशाला की गउओं से प्राप्त घी, दूध का ही प्रयोग होता है।

6. ब्रह्मचारियों के दैनिक भोजन में दूध तथा दूध से बने घी, पनीर, मक्खन, लस्सी आदि पदार्थों की औसतन मात्रा एक किलो प्रति छात्र है। जबकि सामान्यतया घरों में भी प्रति इकाई दूध की इतनी मात्रा नहीं हो पाती।

7. ब्रह्मचारियों की भावनाओं का आदर करते हुए उन्हें विनम्र तथा स्वाभिमानी बनाया जाता है।

8. गुरुकुल में नित्य प्रति प्रातः व सांय यज्ञ गोघृत से ही होता है।

9. शारीरिक उन्नति हेतु व्यायाम तथा योगासनों की शिक्षा ब्रह्मचारियों को दी जाती है।

10. सत्र ब्रह्मचारियों को शुद्ध वेदपाठ सिखाया जाता है और यहाँ के छात्र किसी भी वेद को ऋचा को धारा प्रवाह गति से शुद्ध पाठ करने में सक्षम हैं। इसका हमें गौरव है। इस वर्ष विश्वेश्वरानन्द साधु आश्रम, पंजाब विश्वविद्यालय की ओर से होशियारपुर में आयोजित हुई संस्कृत श्लोक—उच्चारण प्रतियोगिता में हमारे बृहमचारी संजीव ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर, इस गुरुकुल के कृतित्व को चार चाँद लगाये।

11. छात्रों को हिन्दी टाईप सिखाने का प्रबन्धकर हम ने एक और मील पत्थर इस दिशा में गाड़ा है। हमारा प्रयास है कि जहाँ जहाँ अंग्रेजी का प्रयोग होता है। वहाँ वहाँ

    हिन्दी का प्रयोग किया जाए। जिस से राष्ट्रीय एकता को अधिक से अधिक बल मिले।

परीक्षा परिणाम :

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की विद्याधिकारी परीक्षा में परीक्षा सत्र 1984-85 में हमारे कुल 6 छात्र सम्मिलित हुए परिणाम शत प्रतिशत रहा। दो छात्रों ने प्रथम श्रेणी के अंङ्क प्राप्त किये तथा शेष छात्रों ने 56 से 59% तक अङ्क लेकर उच्च द्वितीय श्रेणी प्राप्त की। इस प्रकार परीक्षा परिणाम बहुत अच्छा रहा। जिसका श्रेय महाविद्यालय के आचार्य जी तथा उनके सहयोगी अध्यापकवर्ग को जाता है। मैं उन्हें अपनी ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ।

संस्कृत सम्मेलन :

सरकार की 10+2 पाठ्य प्रणाली के अन्तर्गत पंजाब के शिक्षा विभाग ने संस्कृत को एक प्रकार से बहिष्कृत करने का निश्चय कर लिया तो आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपना उत्तर दायित्व समझते हुए इसके प्रति रोष प्रकट करने हेतु तथा संस्कृत को उचित स्थान दिलाने के उद्देश्य से एक संस्कृत सम्मेलन द्वाबा कालेज में 20 जनवरी 85 को रखा और दूसरा सम्मेलन दातारपुर के महन्त श्री रामप्रकाश दास जी की अध्यक्षता में गुरुकुल करतारपुर में 24 फरवरी 1985 को रखा गया। जिसमें पंजाब, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू के 100 से भी अधिक विशेष प्रतिनिधियों, संस्कृत शास्त्रियों शिक्षाविदों तथा संस्कृत प्रेमी समाज सेवियों ने भाग लिया।

पंजाब सरकार की संस्कृत विषयक नीति की खुलकर आलोचना हुई। इस विषय में पंजाब सरकार तथा आवश्यकता पर केन्द्र सरकार से भी सीधा सम्पर्क करने हेतु डा. श्री वेद प्रकाश जी विद्यावाचस्पति, सह संचालक साधु-आश्रम होशीयारपुर, श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार, श्री शम्भुनाथ जी शास्त्री कपूरथला, श्री धर्म प्रकाश जी दत्त--प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् पंजाब तथा प्रा.

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री सत्यपाल जी रणदेव अध्यक्ष पंजाब संस्कृत परिषद् की एक उपसमिति बना दी गई।

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी तथा अन्य नेताओं ने संस्कृत को देश की एकता तथा भारतीय संस्कृति का मूलाधार बताते हुये इसकी रक्षा में प्रत्येक भारतीय को तत्पर रहने का आह्वान किया।

इस सम्मेलन के संयोजक श्री चतुर्भुज जी मित्तल (मन्त्री—संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर) ने सभी संस्कृत प्रेमियों, संस्कृत संस्थानों के संचालकों तथा संस्कृतज्ञों से निवेदन किया कि वे अपने अपने क्षेत्र में संस्कृत के प्रचार प्रसार में जितना भी योगदान दे रहे हैं वह सराहनीय है परन्तु इसमें अभी और अधिक गति की आवश्यकता है। मैं चाहता हूँ कि संस्कृत विद्यालयों के छात्रों को केवल कर्मकाण्ड और शिक्षा तक ही सीमित न रखकर उनके कार्य क्षेत्र में विस्तार लाया जाना चाहिये, जिसके लिये संस्कृत विद्यालयों में हिन्दी टाईपिंग, हिन्दी आशुलिपि और हिन्दी में अकाऊण्टैंसी तथा बुककीपिंग की कक्षायें शुरू की जानी चाहिये, आश्चर्य है कि हमारा नाम देवनागरी में होता है परन्तु लिखते हम उसे अंग्रेज़ी में हैं। हमें अपना हिसाब किताब तथा दफतरी कार्यों को हिन्दी प्रधान बना कर संस्कृत के छात्रों को आगे लाना चाहिये ऐसा करने से संस्कृत की रक्षा के साथ साथ यह भाषा अर्थंकरी भी हो जाएगी तथा अंग्रेजी के बहिष्करण का भी केवल यही एक समुचित मार्ग है परीक्षण के लिये हम गुरुकुल करतारपुर में उक्त कक्षाएँ आरम्भ कर रहे हैं और मैं आशा करता हूँ कि दूसरे संस्कृत विद्यालय भी इसका अनुकरण करेंगे।

साथ ही श्री मित्तल जी ने सभी संस्कृत विद्यालयों को एक श्रृंखला में बंध कर कार्य करने के लिये भी प्रेरित किया।

अन्त में सम्मेलन के सह संयोजक श्री नरेश कुमार जी शास्त्री आचार्य श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर ने सभी अभ्यागतों का हार्दिक धन्यावाद करते हुए सम्मेलन के संयोजक श्री चतुर्भुज जी मित्तल का भी अतिशय आभार प्रकट किया जिन्होंने इस सम्मेलन के संयोजन का भोजनादि के व्यय सहित सम्पूर्ण व्यय स्वयं वहन करते हुये संस्कृत के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की।

इस प्रकार यह संस्कृत सम्मेलन सर्वांशत: सफल रहा।

भवन निर्माण कार्य में प्रगति—

बाढ़ के कारण पिछले दिनों जो हानि हुई उसका प्रभाव हमारे भवन निर्माण पर भी कुछ सीमा तक पड़ा और उसकी पूर्ति के साथ साथ निर्माण कार्य पूर्व वर्षो की भांति इस वर्ष भी चलता ही रहा। दानी महानुभावों के सहयोग तथा प्रभुकृपा से गुरुकुल उभर कर क्रियाशीलता की मुंह बोलती निशानी के रूप में आप के सामने प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है।

कमरों के पलस्तर, पक्के फर्श, गौशाला में सुव्यवस्थित ढंग से निर्माण, गऊशाला में बिजली के पंखे व समूह रूप में 6 नये शौचालय तथा स्नानागारों का चालू निर्माण आपके समक्ष प्रगति में है। पानी की बड़ी टंकी बनाने का कार्य भी चला रहा एक भव्य द्वार बनाने की योजना बन चुकी है। जिसके बनने से स्मारक की शोभा में और भी वृद्धि होगी। ट्रस्ट इस बात के लिये आभारी है कि है कि इस महान् कार्य का कार्यभार ट्रस्ट के अन्तरंग सदस्य दानवीर **श्री रोशनलाल जी गुप्ता** जालन्धर ने अपने सबल कन्धों पर लेकर समिति का हाथ बटांया है। वैसे भी श्री गुप्ता जी का सहयोग ट्रस्ट को निरन्तर प्राप्त है। यह और भी

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर के पदाधिकारी
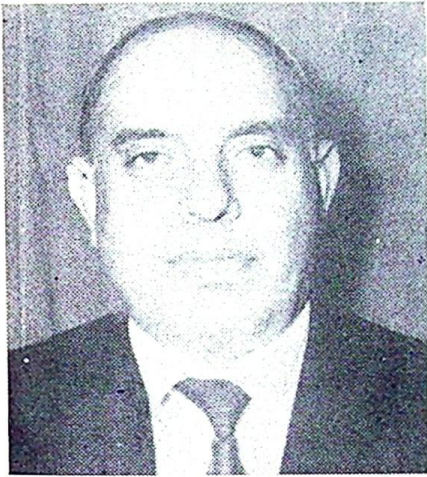
अधिष्ठाता
चौ. ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट
जालन्धर
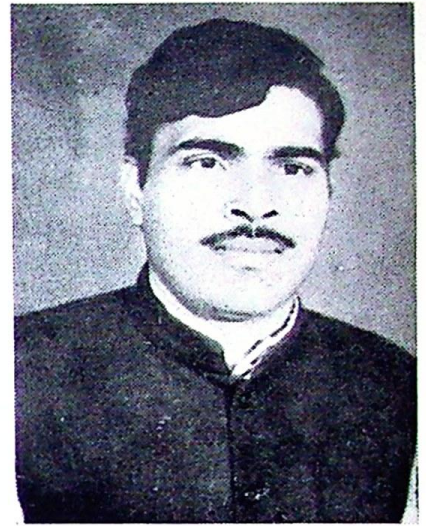
प्राचार्य
श्री नरेश कुमार जी शास्त्री
व्याकरणाचार्य

प्रबन्धक
श्री प्रेम कुमार जी अग्रवाल
करतारपुर
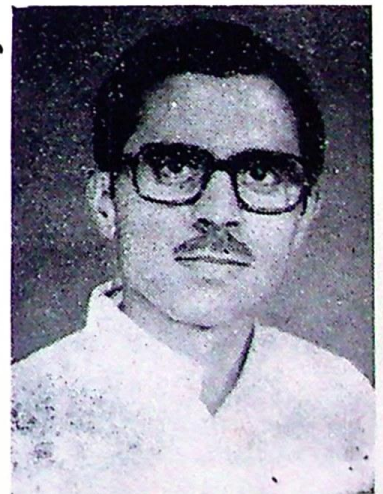
स. अधिष्ठाता
श्री सुखदेव राज जी शास्त्री
विद्यावाचस्पति

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

श्री गुरु विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर के निष्ठावान् सहयोगी

पूज्य बाबा मोहन दास जी महाराज

प्रसिद्ध गायत्री-निष्ठ, यज्ञप्रेमी व महायोगी **पूज्य बाबा श्री मोहन दास जी महाराज,** श्री रघुनाथ मन्दिर, (मिल्क प्लांट के पीछे) बाईपास मकसूदां (जालन्धर) जो कि जब तब गुरुकुल भूमि में पधार कर ब्रह्मचारियों के मध्य बैठकर अपार हर्ष अनुभव करते हैं तथा तन, मन व धन से संस्कृत के प्रचार प्रसार के लिये अपना पूर्ण योगदान देकर गुरुकुल व ब्रह्मचारियों पर अपना वरद हस्त बनाये रखते हैं।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रसन्नता की बात है कि इस पुण्य कार्य में सर्वप्रथम श्री गुप्ता जी ही अपनी ओर से रु. 10,000/ की राशि दान दे रहे हैं ।

स्मारक के बाहर के भाग को भी वृक्षों की चार दीवारी करके उपयोग में लाने का प्रावधान है । जहाँ ब्रह्मचारी मिलजुल कर विविध खेलों में निपुणता प्राप्त करते हैं और स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क के सिद्धान्त को चरितार्थ करते हैं ।

आवश्यकता :

पंजाबी में कहावत है कि "ऊँट अडिंगदे ही लद हुंदे हन्" इस प्रकार जहां प्रगति होती है वहाँ आवश्यकताएँ भी बढ़ती हैं और जिनका समाधान धनादि द्वारा ही होता है । इस कार्य में स्मारक के मंत्री जी व प्रधान जी की ओर से धनाभाव नाम की तो कोई वस्तु है ही नहीं और सोने पर सुहागा पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान जी और महा मंत्री जी के आशीर्वाद हैं विद्यालय की प्रवन्ध कर्तृ सभा भी बजट को ध्यान में रखते हुए अति कुशलता से सारा काम निभा रही है । जब कि गुरुकुल के सहायक अधिष्ठाता श्री सुखदेव राज शास्त्री व आचार्य श्री नरेश कुमार शास्त्री तो यहां की गतिविधियों के प्राण हैं जो कि आय के अनुरूप ही विद्यालय के व्यय को सन्तुलित रखते हैं ।

आवश्यकताओं में जो आगामी वर्ष के निर्माण में मुख्य रूप से मुख्य द्वार का निर्माण है उसका भार तो **श्री रोशन लाल जी गुप्ता** ने संभाल ही लिया है । इसके अतिरिक्त कुछ अन्य आवश्यकताएं इस प्रकार हैं—

1. श्रेणी के कमरों का निर्माण तो पूरा हो गया परन्तु छात्रों के लिए छात्रावास का निर्माण अभी शेष है जो कि व्यय साध्य है । इसमें एक कमरे के निर्माण का उत्तर दायित्व तो स्व. राजाराम जी सोनी समराला की पुण्य स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सत्यभामा जी सोनी तथा उनके पुत्र व पौत्रों ने ले लिया है तथा उसके लिये रु. 10,000/- अग्रिम विद्यालय कोष में भी जमा करा दिये हैं, अभी ऐसे ही कम से 18 और दानियों की आवश्यकता है जो कि इस पुण्य कार्य में अपना योगदान दे सकें और इसे पूरा कर सकें ।
2. इसी के साथ एक अतिथिशाला
3. भोजन भण्डार (जहाँ सभी छात्र एक ही साथ बैठकर भोजन कर सकें) ।
4. विज्ञान-प्रयोगशाला कक्ष (जहाँ छात्र अपने पाठ्यविषयों के अन्तर्गत विज्ञान सम्बन्धि-प्रयोग कर सकें) ।

ये सब आवश्यकतायें आपके पवित्र दान की प्रतीक्षा में हैं ।

हार्दिक शोक समवेदना

1. स्व. श्री आर्यभिक्षु जी वानप्रस्थी देहली
2. स्व. श्री जगदीश राय जी सर्राफ, अमृतसर
3. स्व. श्री शोरी लाल जी, अमृतसर
4. स्व. श्री ओम प्रकाश जी वैद, अमृतसर

स्व. श्री आर्यभिक्षु जी वानप्रस्थी देहली
(अन्तरंग सदस्य)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार आर्यसमाज तथा श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर की आजीवन सेवा करते रहे, जो अब हमसे विदा होकर प्रभु को प्यारे हो गये।

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट एवं श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर उक्त दिवंगतों को हार्दिक श्रद्धाञ्जली तथा इनके परिवारजनों के साथ हृदय से सहानुभूति एवं शोक समवेदना प्रकट करता है।

कृतज्ञता प्रकाशन :

यह विद्यालय एक सार्वजनिक परन्तु विशिष्ट संस्कृत शिक्षा शिक्षण संस्थान है वह प्रत्येक व्यक्ति हमारे धन्यवाद का पात्र है जो कि आत्मिक, शारीरिक अथवा आर्थिक रूप में इस विद्यालय की सहायता करता है।

करतारपुर के कार्यकर्त्ताओं का यद्यपि हमें काफी सहयोग प्राप्त है। परन्तु स्थानीय सहयोग जितना प्रबल होगा संस्था उतनी ही अधिक और द्रुत गति से प्रगति करती है। इस उद्देश्य से हमारा इस वर्ष प्रयत्न होगा कि हम स्थानीय आर्य बन्धुओं का और आर्थिक सहयोग प्राप्त कर सकें तथा सम्पर्क का क्षेत्र और अधिक विस्तृत कर स्मारक एवं विद्यालय की गतिविधियों को और अधिक सुव्यवस्थित तथा तीव्र कर सकें।

प्रति वर्ष उत्सव पर लंगर का सुप्रबन्ध करने वाले नवयुवक श्री श्रीकृष्ण बाँसल करतारपुर तथा उनके समस्त सहयोगियों का जो कि उन्हें इस कार्य में सहायता देते हैं का भी हम हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

मोगा के श्री जगदीश राय जी बांसल जो कि प्रति वर्ष मोगा से तथा श्री यमुना दास जी, जो कि सुलतान पुर लोधी से गेहूँ चावल इकठ्ठा करवा कर लंगर खर्च की पूर्ति करवाते हैं, का भी हम धन्यवाद करते हैं।

विद्यालय के म. अधिष्ठाता श्री सुखदेव राज जी शास्त्री भी विशेष धन्यवाद के पात्र हैं जिनके विशेष श्रम, प्रेरणा, योजना, प्रयत्न, उत्साह तथा लग्न से विद्यालय का आर्थिक एवं प्रशासनिक ढांचा सुदृढ़ रहता है उनके सहयोगी आचार्य श्री नरेश कुमार जी शास्त्री तथा अन्य अध्यापकों का भी हम हृदय से धन्यवाद करते है जिनके प्रयत्नों से शैक्षणिक विभाग सुचारु एवं व्यवस्थित रहता है।

उन सभी उद्योगपतियों तथा दानी महानुभावों का भी धन्यवाद करते जो कि हमें स्मारिका में विज्ञापन देकर मासिक या वार्षिक दान देकर विद्यालय का व्यय वहन करने में आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं या एतदर्थ दान एकत्रित करते और करवाते हैं।

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर के प्रधान श्री सेठ शिव चन्द जी अग्रवाल तथा कोषाध्यक्ष श्री यशफूल चन्द जी अग्रवाल, उपमन्त्री श्री ज्ञानी गुरदियाल सिंह जी, श्री देवराज जी खुल्लर तथा उपप्रधान-- बहिन श्री कमला जी आर्या व श्री सत्यानन्द जी मुन्झाल, उप कोषाध्यक्ष श्री राम लुभाया जी नन्दा, विद्यालय के अधिष्ठाता श्री. ऋषि पाल सिंह जी एडवोकेट, श्रीमती सरोज जी ओहरी होशियारपुर, श्री देशराज जी छाबड़ा फगवाड़ा तथा समिति के अन्य समस्त अन्तरंग —विशेष—आमन्त्रित एवं साधारण सदस्यों के प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते है जो कि प्रत्येक दिशा में विद्यालय को प्रगति की ओर अग्रसर करने में सहायक रहते हैं।

इसके अतिरिक्त श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का भी धन्यवाद किये बिना हम नहीं रह सकते जिनका मार्ग दर्शन हमें निरन्तर मिलता रहता है।

विनिम्र निवेदन :

अन्त में सभी दानी महानुभावों से मेरा विनम्र निवेदन है कि आप द्रुत गति से वेद तथा संस्कृत के प्रचार एवं प्रसार के लिए **'कम से कम'** अथवा **अधिक से अधिक"** तन, मन, धन व समय का दान देकर श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर (जिला जालन्धर) पंजाब, की श्रद्धा और विश्वास से सहायता कीजिये।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

करतारपुर के– कथावशेष महाशय रघुनन्दनलाल जी

प्रस्तुति—श्री सुखदेवराज शास्त्री

(स्व. श्री रघुनन्दन लाल जी)

आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के सभी कर्मठ कार्यकर्त्ता, नेता तथा श्रद्धालु जिन्होंने आर्य समाज के शास्त्रार्थ भरे और संघर्षमय युग में भावना व विवेक रखते हुये अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया, धीरे धीरे एक एक करके काल के क्रमिक चक्र के अर्पित हो रहे हैं। ऐसे ही थे स्व. महाशय रघुनन्दन लाल जी, जिन्होंने अपनी युवावस्था से लेकर अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक आर्यसमाज की महान् सेवा की।

आज से पाँच छः वर्ष पूर्व जब हमें करतार पुर व गुरु विरजानन्द स्मारक की पृष्ठ भूमि के विषय में जानकारी एकत्रित करने का अवसर मिला तो उनमें सर्वाधिक सामग्री हमें श्री महाशय जी से ही प्राप्त हुई। महाशय जी की स्मृति इतनी पुष्ट थी कि लगभग 90 वर्ष की आयु में भी उन्हें आर्यसमाज के सम्मेलनों, विशेष क्रियाकलापों की तिथियाँ तथा व्यक्तियों के नाम व स्थान अविकल रूप में याद थे।

आर्यकन्या पाठशाला करतारपुर के निर्माण व उसके चलाने में आपने उस समय भी जबकि लड़कियों का पढ़ाना साँप के सिर से मणि उतारने के समान था, इसके विरोधियों का डटकर सामना किया। पाठशाला के आरम्भ करने के दिनों में महाशय जी स्वयं अपने अन्य सहयोगिओं के साथ लोगों के घरों में जाकर लड़कियों को पढ़ाने के लिये लाते तथा वापस छोड़ने जाया करते थे। इतना ही नहीं नगर में कन्या पाठशाला का प्रबल विरोध होने के कारण स्कूल के मुख्य दरवाजे पर उन्हें पूरे दिन प्रहरी भी बनना पड़ता था।

1925 में दयानन्द शताब्दी में भी आप आर्यसमाज करतारपुर के अन्य सदस्यों के साथ सम्मिलित हुये थे। जहाँ शाहपुराधीश जी की अध्यक्षता में गुरु विरजानन्द जी के जन्म स्थान की खोज करने बारे विचार हुआ था। बाद में 1929 में करतारपुर आर्यसमाज के उत्सव पर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महाशय कृष्ण जी के सुझाव पर आर्यसमाज करतारपुर ने स्वामी विरजानन्द जी के जन्म स्थान को खोजने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इन दोनों विभूतियों ने करतार के निकट के धीरपुर, डोगरां वाला, कुछोवाल मल्लियां, म्यानी, मानातलवण्डी बृहमवाल, सकराला मुस्तापुर हमीरा आदि गांवों में घूम घूम कर वहाँ के वृद्ध लोगों से स्वामी विरजानन्द जी तथा उनके परिवार बारे जानकारी इकठ्ठी की जो कि लिखित रूप में उन्होंने ट्रस्ट के भूतपूर्व संचालक पूज्य स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज को बाद में सौंप दिये थे और स्वामी जी ने उन बयानों को 'यज्ञयोग ज्योति' (मासिक पत्रिका, रोहतक) में प्रकाशित भी किया था।

परन्तु केवल उन बयानों से उन्हें कुछ निश्चित क्रम न मिल पाने से नवम्बर 1929 में अपने प्रिय सहयोगी बाबू यमुनादास जी को साथ लेकर हरिद्वार गये तथा स्वयं को शारदा ब्राह्मण बतलाकर तीर्थ पण्डों से कहा कि जो हमारे पूर्वजों का पता देगा उसे हम भारी दक्षिणा देंगे। पण्डों में होड़ लग गयी तथा अपनी अपनी पुरानी बहियों को टटोलने लगे परन्तु एक सप्ताह तक भी कोई सुराग नहीं मिला, एक सप्ताह बाद 60-65 वर्षीय पण्डे पं. ज्वाला-प्रसाद जी ज्वालापुर निवासी ने विरजानन्द जी के पूर्वजों की क्रमिक जानकारी दी। इस वंशावली को प्राप्त कराने में श्री पं. चमूपति जी एम.ए. ने भी महाशय जी को बहुत सहयोग दिया। यह वृत्तान्त 15 नवम्बर 1929 के दैनिकप्रताप जालन्धर में भी प्रकाशित हुआ था। इस प्रकार महाशय जी ने स्वामी के पूर्वजों की वंशावली प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परन्तु खेद से लिखना पढ़ता है कि श्री महाशय जी द्वारा प्राप्त की गयी वंशावली ही अब तक प्रकाशित स्वामी विरजानन्द जी की जीवनियों में मिलती हैं, परन्तु किसी भी लेखक ने औपचारिकतावश भी खोज करने वालों (श्री महाशय रघुनन्दन लाल जी तथा बाबू यमुनादास जी करतारपुर) का नाम जीवनी में दर्शाने का कष्ट नहीं किया।

श्री महाशय जी का सम्पूर्ण जीवन इसी प्रकार की निष्ठा तथा विचित्रता से भरा है, अपनी मृत्यु से 2 वर्ष पूर्व भी लगभग 92-93 वर्ष की आयु में महाशय जी गुरुकुल कांगड़ी का उत्सव देखने गये तथा पुराने गुरुकुल कांगड़ी में जाकर भावविभोर होकर वहाँ के चप्पे चप्पे की कथा अपने साथ गये परिवारजनों को सुनायी, कांगड़ी ग्राम के कई वृद्धों से भी भेंट की। यह थी उनकी लगन और आर्यसमाज के प्रति श्रद्धा। श्री महाशय जी ने अछूतोद्धार में भी काफी योगदान दिया। स्मारक तो उन्हें कभी भूलता ही नहीं था।

श्री महाशय जी महर्षि दयानन्द के कट्टर भक्त, निष्ठावान् आर्यसमाजी, वाणी के धनी, सन्तोषी तथा मधुर भाषी थे। आपका जन्म विक्रमाब्द 1948 में श्री आसाराम जी अग्रवाल के घर कस्बा मुलाना जि. अम्बाला तहसील जगाधरी में हुआ था। आपके पिता जी सन् 1949 अर्थात् जन्म के एक वर्ष बाद ही परम पिता को प्यारे हो गये थे और सन् 1951 में आपकी माता जी भी स्वर्ग सिधार गई थी। लगभग 95 वर्ष की आयु में हमारे आदर्श श्री महाशय रघुनन्दन लाल जी भी 10 जनवरी 1986 को हमें सदा सदा के लिए छोड़कर परलोक सिधार गये।

श्री महाशय जी के कार्य तथा उनका अतिशय प्रेम हमें निरन्तर उनकी स्मृति कराता रहेगा। यह प्रसन्नता की बात है कि श्री महाशय जी के तीनों पुत्र व दोनों पुत्रियाँ भी अपने पूज्य पिता जी के चरण चिन्हों पर चलते हुये आर्य समाज के लिये तन मन व धन के साथ पूरा समय भी देते है।

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट तथा श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर श्री महाशय जी के शोकाकुल परिवार के साथ हृदय से सहानुभूति प्रकट करते है।

स. अधिष्ठाता—श्री गुरु विरजानन्द
वैदिक संस्कृत महाविद्यालय,
करतारपुर, 144801

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

महर्षि दयानन्द के जीवन का एक प्रेरक प्रसंग

उदयपुर का एक प्रसंग है। एक दिन श्री मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या ने ऋषि से पूछा कि "भगवन् ! भारत का पूर्ण हित कब होगा ? यहां जातीय उन्नति कब होगी ?" ऋषि ने उत्तर दिया कि "एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारतका पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है। सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहां भाषा, भाव और भावना में एकता आ जाये, वहां सागर में नदियों की भांति, सारे सुख एक एक करके प्रवेश करने लगते हैं। मैं चाहता हूँ कि देश के राजे महाराजे अपने शासन में सुधार और संशोधन करें। अपने राज्य में धर्म, भाषा और भावों में एकता पैदा करें। फिर भारतभर में आप ही आप सुधार हो जायेगा।" फिर पंड्या जी ने कहा कि "जब आपका उद्देश्य और आदर्श, एकता का सम्मान करना है, तो आप मतमतान्तरों का कठोर खण्डन क्यों करते हैं ? इससे तो उल्टा वैर, विरोध और वैमनस्य बढ़ता है।" ऋषि ने उसका समाधान करते हुये कहा कि 'एक तो मेरा धार्मिक लक्ष्य सार्वजनिक है। उसे संकुचित नहीं किया जा सकता। दूसरे भारतवासी लम्बी तानकर ऐसी गहरी नींद सो रहे हैं कि मीठे शब्दों से तो आंख तक खोलने को तैय्यार तक नहीं होते। सुधार का ये नाम तक नहीं लेते। कुरीतियों और कुनीतियों के खण्डन रूप कड़े कोड़े की तड़ातड़ ध्वनि से यदि यें जाग जावें, तो ईश्वर का कोटि-कोटि धन्यावाद करूंगा।" ऋषिने आगे कहा कि "धर्म गुरुओं और सामाजिक नेताओं की असावधानी, प्रमाद और आलस्य से भावना, भाव और भाषा आदि एकता के चिन्ह बदल जाते हैं। जाति के आचार-विचार बिगड़ जाते हैं। रहन-सहन के ढंगों में भेद आ जाता है। ठीक ऐसा ही समय इस देश पर उपस्थित है। यदि इसे संभाला न गया, तो आर्य जाति परिवर्तन के चंचल-चक्र में पड़कर अतिशय उतावली से अपने पूर्व पवित्र स्वरूप को बिगाड़ डालेगी। इसके पिछले प्रमाद के कारण करोड़ों मुसलमान बन गये। अब प्रतिदिन ईसाई बनते जा रहे हैं। ऐसे समय में तो कड़े हाथों से उनकी चोटियां पकड़ कर जगाना होगा। मैं इस कटु कर्त्तव्य का पालन कुछ अपने स्वार्थ से तो नहीं कर रहा। मुझे तो इसके लिये अवहेलना, निन्दा, कुवचन, ईंट, पत्थर और विष; स्थान स्थान पर मिलता है। लेकिन, बन्धुवात्सल्य की भावना मुझे विपत्तियों के जटिल और विकट जाल में समाज-सुधार के लिये प्रोत्साहित कर रही है।" पण्ड्या जी ने हाथ जोड़कर कहा कि "यदि दो-चार धर्माचार्य भी आपके विचार के हो जायें, तो थोड़े समय में ही आर्य जाति का बेड़ा पार हो सकता है।" लेकिन, दुर्भाग्य है आर्य जाति का कि उसका बेड़ापार करने के लिये प्रगट हुये महापुरुष को विष का प्याला पिला कर उसने उसका जीवन हर लिया।

(राष्ट्रवादी दयानन्द से समुद्धृत)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

। कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।

कर्मशील होकर ही सौ वर्ष जीने की इच्छा कर ।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

VIMAL®
A RELIANCE PRODUCT

मै. फैब्रिक

जी. टी. रोड़,
जालन्धर शहर
दूरभाष : 76486

गोबिन्द टैक्सटाइल्स

जी. टी. रोड़,
जालन्धर शहर

ओ३म्

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर में

अपने बच्चों को प्रवेश दें तथा अन्यों को प्रेरित करें

हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, समाजशास्त्र के साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा अनिवार्य, उत्तम भोजन व आवास की व्यवस्था, शुल्क केवल 30/- रू. मासिक, योग्य एवं अनुभवी अध्यापक, हिन्दी माध्यम । शीघ्र सम्पर्क करें ।

आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय, करतारपुर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इदमापः प्रवहत यत्किंच दुरितं मयि ।
यद्वाहमभि दुद्रोह यद् वा शेप उतानृतम् ।।

ऋ० 10 । 9 । 8 ।।

(मयि) मुझमें (यत्+किंच) जो कुछ (दुरितम्) दोष [है] (इदम्+आपः) इसको जल (प्रवहत) उत्तमता से बहा ले जाएं (यद्वा+यत्) अथवा जो (अभिदुद्रोह) मैंने द्रोह=सृष्टि-नियम का उल्लंघन किया (उत+वा) और अथवा (यत्+अनृतम्) जो झूठ (शेपे) गाली दी, गिला किया अर्थात् इन सब दुरितों के लिये जल ही औषध रूप हो जावे ।
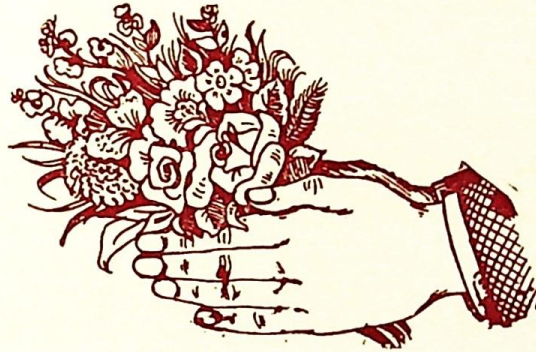
हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

मित्तल उद्योग

स्टेनलैस स्टील इन्गट्स
तथा
पलेट्स के निर्माता

मेन रोड़, गगरेट (हि. प्र.)

दूरभाष :— कार्यालय : 37 आवास : 31

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो यः ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥

अ० 19 । 15 । 6 ॥

(मित्रात् अभयम्) मित्र से अभय, (अमित्रात् अभयम्) शत्रु से अभय, (ज्ञातात् अभयम्) ज्ञात पदार्थ से अभय, (यः पुरः) [और] जो सामने [है] (अभयम्) [उससे] अभय, (नः) हमारे लिए (नक्तम् अभयम्) रात्रि में निर्भयता, (दिवा अभयम्) दिन में निर्भयता, (सर्वाः आशाः) सब दिशाएं (मम मित्रम् भवन्तु) मेरे मित्र, स्नेही होवें ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

शान्ति स्टील कार्पोरेशन

जी. टी. रोड़,

मण्डी गोबिन्दगढ़ – 147301

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

।। विद्ययाऽमृतमश्नुते ।।

विद्या से अमृत-तत्त्व की प्राप्ति होती है।

★★
★
★★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

आर्य माडल स्कूल

गली नं. 2, न्यू टाऊन,

मोगा (पञ्जाब)

।। सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते ।।

सभी दानों में विद्या दान श्रेठ है

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

★ उज्ज्वल भविष्य ★ उत्तम शिक्षा ★ श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम

आर्य गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल

पुराना बाजार, लुधियाना।

प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसिपल
कमला आर्या	विजय लक्ष्मी शर्मा	कान्ता सूरी

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।
अभिवीरो अभिषत्वा सहोजिज्जैत्रमिन्द्र रथमातिष्ठ गोविदन् ।।

अ० 19 । 13 । 5 ।।

(इन्द्र) हे इन्द्र ! (बलविज्ञायः) शक्ति को जानने वाला (स्थविरः प्रवीरः) स्थिर, दृढ़ श्रेष्ठ वीर (सहस्वान् वाजी) बल सम्पन्न वेग वाला (सहमानः उग्रः) सहनशील, धैर्य्य वाला उग्र (अभिवीरः) वीरों से घिरा हुआ (अभिषत्त्वा) सम्मुख आए हुओं को नाश करने वाला (सहोजित्) बलवानों को जीतने वाला (गोविदन्) [और] पृथिवी की प्राप्ति की कामना वाला तू (जैत्रम् रथम् आ + तिष्ठ) जयशील रथ पर बैठ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

एक्सपोर्ट क्वालिटी के उत्तम परमल, बांसमति चावल
तथा
चावलों की अन्य उत्तम किस्मों के निर्माता एवं निर्यातकर्त्ता

कल्याण राईस एण्ड जनरल मिल्ज़

प्लथ रोड, करतारपुर

एवं

कल्याण राईस ट्रेडिंग कम्पनी

जी. टी. रोड, करतारपुर (जालन्धर)

दूरभाष : मिल : 172, 165 आवास : 9

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृता: ।
तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जना: ॥ यजु०. 40.3 ॥

3. To those region where evil spirits dwell and utter darkness prevails, surely go, after death, all such men as destroy the purity of their own souls.

With best compliments from :

MUNJAL SALES CORPORATION

SOLE SELLING AGENTS TO

HERO CYCLES PVT. LIMITED, LUDHIANA.
ROCKMAN CYCLE INDUSTRIES PVT. LTD., LUDHIANA.
HIGHWAY CYCLE INDUSTRIES LTD., LUDHIANA.

AND

MAJESTIC AUTO LIMITED, LUDHIANA.

Munjal Sales Corporation

G. T. Road, LUDHIANA-141003.

Tele : 28000 Grams : MUNJSALES Telex : 0386-205

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सक्तु मिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ॥

ऋ० 10 । 71 । 2 ॥

(यत्र) जब (धीराः) मेधावी महात्मा (मनसा) मनन से, मन से (वाचम्) वाणी को [पुनन्तः=पवित्र करते हुए] (अक्रत) करते हैं, बोलते हैं, (इव) [तब] मानो [वि] (तितउना) चालनी से (सक्तुम्) सत्तू को (पुनन्तः) साफ कर रहे थे । (अत्र) इस विषय में (सखायः) मित्र (सख्यानि) मैत्री के नियमों को (जानते) जानते है (एषाम्) [क्योंकि] इनकी (वाचि अधि) वाणी पर (भद्रा) कल्याणी (लक्ष्मीः) शोभा (निहिता) रखी हुई है ।

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

हैण्डपम्प के सामान तथा पाईप फिटिंग के
उत्कृष्ट निर्माता व निर्यातकर्त्ता

किशोरी लाल सुदेश कुमार

बाजार नौहरियां, जालन्धर शहर

दूरभाष : 76806

अन्य सम्पर्क सूत्र :

मैसर्स ए. एस. इन्जीनियरिंग कार्पोरेशन
अमन नगर, बाई पास,
जालन्धर नगर ।

मै. जगदम्बे स्टील ट्यूब्स्
151, बन्दा बहादुर नगर,
जालन्धर शहर ।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम् ।
उतो त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः ॥

ऋ० 10 । 71 । 4 ॥

(त्वः) कोई एक (पश्यन्) देखता हुआ (उत) भी (वाचम्) [वेद] वाणी को (न) नहीं [ददर्श] देखता है (त्वः) कोई एक (शृण्वन्) सुनता हुआ (उत) भी (एनाम्) इस [वेदवाणी] को (न) नहीं (शृणोति) सुनता है (त्वस्मै) किसी के लिए (उत्तो) तो (पत्ये) पति के लिए (उशती) कामना करती हुई (सुवासाः) ऋतुस्नाता (जाया-इव) पत्नी के समान (तन्वम्) शरीर को (वि सस्रे) खोल देती है ।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

बी. एन. शिव लाल अग्रवाल

एस. 144, औद्योगिक क्षेत्र, जालन्धर-144004. (भारत)

दूरभाष : 75909

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथो अमुम् ।
कामान्त्समर्द्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृताः ॥

सा० उ० 5 । 2 । 8/4 ॥

(पावमानीः) वेद की पवित्र ऋचाएं (नः) हमारे लिए (इमम्) इस (लोकम्) लोक को (अथो) और (अमुम्) उस परलोक को (दधन्तु) अर्जन करें (देवैः) निष्काम विद्वानों द्वारा, अथवा वेदप्रापक ऋषियों द्वारा (समाहृताः) भली प्रकार लाई गई (देवीः) [वे] दिव्यगुण वाली ऋचाएं (नः) हमारी (कामान्) कामनाओं को (सम्+अर्द्धयन्तु) समृद्ध करें, फलीभूत करें ।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

विजय साइकिल एण्ड स्टील इण्डस्ट्रीज़

VS

VS ब्राण्ड फार्ज्ड स्टील पाईप फिटिंग्स
के
उत्कृष्ट निर्माता

माडल हाऊस रोड़, बस्ती शेख,
जालन्धर - 144 002

दूरभाष :— कार्यालय : 76279, 77614 आवास : 2917

तार : फॉर्ज फिट (FORGFIT)

प्रयोजक—श्री हरबंस लाल शर्मा, उपप्रधान—श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट, करतारपुर

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

येन देवा: पवित्रेणात्मानं पुनते सदा ।
तेन सहस्त्रधारेण पावमानी: पुनन्तु न: ॥

सा० उ० 5 । 2 । 8/5 ॥

(देवा:) निष्काम ज्ञानी (येन) जिस (पवित्रेण पवित्र के द्वारा = ज्ञान के द्वारा (सदा) सदा (आत्मानम्) अपने को, आत्मा को (पुनते) पवित्र करते हैं (तेन) उस (सहस्त्रधारेण) हजारों धाराओं वाले (ज्ञान) के द्वारा (पावमानी:) वेद की पवित्र ऋचाएं (न:) हम को (पुनन्तु) पवित्र करें ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

हैमको इण्डस्ट्रीज़ प्रा. लि.

निर्माता :-

हार्डवेयर सामान, फास्टनर्स्

तथा

आयरन और स्टील के रिरोलर्स्

पञ्जीकृत कार्यालय :—

मकसूदां, जालन्धर-144008 (भारत)

दूरभाष : कार्यालय : 73503 आवास : 73594

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋचाँ त्व: पोषमास्ते पुपुष्वान् गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु ।
ब्रह्मा त्वो वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां वि मिमीत उ त्वः ।।

ऋ० 10 । 71 । 11 ।।

(त्वः) एक (पुपुष्वान्) पुष्टि करता (ऋचाम्) ऋचाओं की (पोषम्) पुष्टि को (आस्ते) आश्रय करता है (त्वः) एक (शक्वरीषु) शाक्वर सामों में (गायत्रम्) गायत्र्यादि छन्दों को (गायति) गाता है । (त्वः) एक (ब्रह्मा) ब्रह्मा (जातविद्याम्) संशय दशा में कर्त्तव्य ज्ञान को (वदति) बोलता है (उ) और (त्वः) एक (यज्ञस्य) यज्ञ के (मात्राम्) परिणाम को, शरीर को (वि-मिमीत) विशेष रूप से बनाता है ।

हमेशा याद रखें--

मफतलाल फैब्रिक्स

कृपया पधारिये--

हर प्रकार के सूटिंग शर्टिंग के लिये टेरीकोट में हो या सूती में, रंग बिरंगे या सादे, साड़ियां, बिस्तर की चादरें, तौलिये, रूबिया एवं अनोखी विभिन्नताओं वाले वस्त्रों के लिये--

एक ही छत के नीचे सभी कुछ, मिल के भाव पर सभी स्कूलों की यूनिफार्म (वर्दी) भी यहां प्राप्तव्य हैं ।

समय तथा धन की बचत

फुटकर बिक्री के लिये अनुमोदित प्रदर्शनी केन्द्र

दीपावली
O/S माई हीरां गेट, सरकूलर रोड,
जालन्धर नगर ।

अग्रवाल ब्रदर्स
(तैयारशुदा वस्त्र)
O/S माई हीरां गेट, सरकूलर रोड,
जालन्धर नगर ।

दूरभाष : 76662

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति ।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति ॥

अ० 10 । 8 । 32 ॥

(अन्ति) समीप (सन्तम्) होते हुए को [मनुष्य] (न) नहीं (जहाति) छोड़ता है (देवस्य) भगवान् के (काव्यम्) काव्य को (पश्य) देख (न) [वह] न तो (ममार) मरता है (न) [और] न ही (जीर्यति) पुराना होता है ।

With best compliments from :

STANDARD RUBBER INDUSTRIES

Manufactures of :
TRANSMISSION RUBBER BELTINGS, V-BELTS, MICRO SHEETS & HAWAI CHAPPALS

P.B. No. 441, HOSHIARPUR ROAD,
J A L A N D H A R - 144 004 (India).
Grams : RUBBER BELT
Phones : Factory 76725 Resi. 78625, 78725

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनं परि ।
श्रद्धां सूर्य्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः ॥

ऋ० 10 । 151 । 5 ॥

(श्रद्धाम्) [अतः] श्रद्धा को (प्रातः) प्रातःकाल (हवामहे) हम बुलाते हैं, चाहते हैं, (श्रद्धम्) श्रद्धा को (मध्यन्दिनं) दो पहर के समय (परि) सब ओर से [चाहते हैं] सूर्य्यस्य) सूर्य्य के (निम्रुचि) अस्त होने पर [चाहते हैं] । (श्रद्धे) हे श्रद्धा ! (इह) इस संसार में, इस जीवन में (नः) हम सबको (श्रद्धापय) श्रद्धायुक्त कर ।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

★ खेलों के उत्कृष्ट सामान के निर्माता एवं निर्यातकर्ता

★ सर्वोपरि एवं सर्वाधिक निर्यात के लिये स्वर्णपदक प्राप्त

★ हाकी के सामान के अधिकृत व एक मात्र वितरक

रोम	टोक्यो	मेक्सिको	म्यूनिक	मोण्ट्रियल	तथा	मास्को
1960	1964	1968	1972	1976		1980

ओलम्पिक खेलों के लिये हाकी के सामान के एकमात्र व अधिकृत वितरक—

स्थापित—1925

हंस राज महाजन एण्ड सन्ज़ प्रा. लि.

(भारत सरकार द्वारा प्रमाणित निर्यातगृह)

जी. टी. रोड, जालन्धर-144001

फैक्ट्री—

★ जी. टी. रोड, जालन्धर — दूरभाष : 72693, 75875, 74486
★ इण्डस्ट्रियल एरिया, जालन्धर
★ बस्ती बावा खेल, जालन्धर — तार : महाजनसन
★ इण्डस्ट्रियल स्टेट, गांधी नगर, जम्मू — टैलैक्स : 385207 HRMS in

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पावमानीर्योऽध्येत्यृषिभिः सम्भृतं रसम् ।
तस्मै सरस्वती देहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् ॥

सा० उ० 5 । 2 । 8/2 ॥

(यः) जो (पावमानीः) पवित्र वेद-ऋचाओं को (ऋषिभिः) [और] ऋषियों से (सम्भृतम्) धारण किये (रसम्) रस को (अध्येति) विचारता है (सरस्वती) ज्ञानाधार प्रभु (तस्मै) उसके लिए (क्षीरम्) दूध (सर्पिः) घी (मधु) मधु, शहद (उदकम्) [और] जल अथवा (मधु-उदकम्) मीठा जल (दुहे) दोहता है, देता है ।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

मै. भारत आयरन एण्ड स्टील रोलिंग मिल्स

मण्डी गोबिन्दगढ़ (पञ्जाब)

प्रयोजक--श्री राज गोयल जी

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यस्मात्पक्वादमृतं संबभूव यो गायत्र्या अधिपतिर्बभूव ।
यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपास्तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् ॥

अ० 4 । 35 । 6 ॥

(यस्मात्) जिस (पक्वात्) पके हुए [ओदन] से (अमृतम्) जीवन, मोक्ष (सम्बभूव) उत्पन्न होता है (यः) जो (गायत्र्याः) गायत्री का (अधिपतिः) अधिपति, स्वामी (बभूव) है (यस्मिन्) जिसमें, जिसके लिए (विश्वरूपाः) सब पदार्थों का निरूपण करने वाले (वेदाः) वेद (निहिताः) रखे हैं (तेन) उस (ओदनेन) ओदन के द्वारा (मृत्युम्) मृत्यु को (अति+तराणि) अतिक्रमण करता हूँ, पार करता हूँ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

★

अग्रवाल फर्नीचर हाऊस (रजि.)

करतारपुर (जिला जालन्धर)

दूरभाष : कार्यालय : 24 घर : 99

शाखा कार्यालय—

71, कनाट प्लेस, देहरादून

दूरभाष : 3425

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वैश्वदेवीं वर्चस आरभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः।
अतिक्रामन्तो दुरिना पदानि शतं हिमाः सर्ववीरा मदेम।

अ० 12। 2। 27॥

(वर्चसे) वर्चस्=तेज के लिए (वैश्वदेवीम्) सब देवों=विषयों का ज्ञान कराने वाली वेदवाणी को (आरभध्वम्) पूरी तरह आरम्भ करो=अभ्यास करो (शुद्धः) शुद्ध [और इसके द्वारा] (शुचयः) पवित्र (भवन्तः) होते हुए (पावकाः) [दूसरों को] पवित्र करने वाले (दुरिता) दुरवस्था वाले (पदानि) ठिकानों को, चिह्नों को (अति+क्रामन्त) अतिक्रमण करते हुए (सर्ववीराः) हम सब वीर (शतम्) सौ (हिमाः) सर्दियाँ=वर्ष (मदेम) आनन्द से रहें।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

जगजीत इन्डस्ट्रियल रोलिंग मिल्ज़

कपूरथला

दूरभाष : 2987

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्रद्धां देवा यजमाना वायुगोपा उपासते ।
श्रद्धां हृदय्ययाकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु ॥

ऋ० 10 । 151 । 4 ॥

(देवा:) ऋत्विक्, विद्वान्, निष्काम महात्मा (यजमाना:) यजमान, यज्ञ करने-कराने वाले (वायुगोपा:) प्राणवायु से रक्षित (श्रद्धाम्) श्रद्धा को (उपासते) उपासते हैं, सेवन करते हैं (हृदय्यया) हृदय में होने वाली (आकूत्या) आकूति, उच्च भावना के द्वारा (श्रद्धाम्) श्रद्धा को (श्रद्धया) [और] श्रद्धा से (वसु) धन को विन्दते) प्राप्त करते हैं।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

★

जिज्ञासु रिरोलिंग मिल्स

नट-बोल्ट्स्, हाथ के औजार
तथा बिल्डिंग फिटिंग के सामान के
निर्माता तथा विदेश निर्यातक

जिज्ञासु स्टेट, पो. बा. नं. 437, प्रीत नगर,
जालन्धर शहर - 144004

दूरभाष :— कार्यालय : 79545 77261, 73081 आवास : 78479
तार : जिज्ञासु (JAGYASU)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम् ।
उतोदिता मघवन्त्सूर्य्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥

ऋ० 7 । 41 । 4 ॥

(मघवन्) हे पूजित धन देने वाले परमेश्वर ! (उत इदानीम्) और इसी समय, (उत अह्नाम्) और दिनों के (मध्ये) मध्य में (भगवन्तः स्याम) [हम] भग=ऐश्वर्य वाले होवें । (उत सूर्यस्य) और सूर्य्य के (उदिता) उदय काल में (वयम्) हम (देवानाम्) निष्काम विद्वानों की (सुमतौ स्याम) सुमति में होवें ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

जे. बी. सॉल्वेक्स इण्डस्ट्रीज प्रा. लि.

मिल्स :-

वरयाणा, कपूरथला रोड़,

जालन्धर

दूरभाष :—मिल्स : 76660, 79264 ग्राम : सॉल्वेक्स (SOLVEX)

टेलेक्स : 0385 217 JBSI IN

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वं विष्णो सुमतिं विश्वजन्यामप्रयुतामेवयावो मतिं दाः ।
पर्चो यथा नः सुवितस्य भूरेरश्वावतः पुरुश्चन्द्रस्य रायः ॥

ऋ 7 । 100 । 2 ॥

(विष्णो) हे चराचर में व्यापक प्रभो ! (त्वम्) तू (मतिम्) मनन करने योग्य (अप्रयुताम्) [दोषों की] मिलावट से रहित (विश्वजन्याम्) सर्वजनहितकारिणी (सुमतिम्) उत्तम ज्ञान वाली [वेदवाणी] (दाः) देता है (यथा) जिससे (नः) हमें (सुवितस्य) प्रेरित (भूरेः) बड़े (अश्वावतः) घोड़ों, बिजली आदि से युक्त (पुरुश्चन्द्रस्य) अत्यन्त आनन्द देने वाले (रायः) धन का (पर्चः) संयोगी बनता है ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

राजेश इस्पात उद्योग

आयरन स्टील रि-रोलर्स् तथा निर्माता

अमन नगर, जालन्धर शहर

दूरभाष : 79054

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नयसीद्वति द्विषः कृणोष्युक्थशंसिनः ।
नृभिः सुवीर उच्यसे ॥ ऋ० 6 । 45 । 6 ॥

(इत् उ) सचमुच ही (द्विषः) शत्रुओं को (अति नयसि) तू दूर ले जाता है, शत्रुओं को अतिक्रमण करके दूर ले जाता है (उक्थशंसिनः) [और उनको] वेद प्रशंसक (कृणोषि) तू कर देता है (नृभिः) [अतः] मनुष्यों से (सुवीरः) उत्तम वीर (उच्यसे) कहा जाता है ।

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

★

अतुल कुमार रोहित कुमार

सरिया, पत्ती व एंगल के थोक व्यापारी

टाण्डा रोड़, जालन्धर शहर (पंजाब)

दूरभाष : 73483

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

य० 19 । 30 ॥

(व्रतेन) व्रत के द्वारा (दीक्षम्) उत्तम अधिकार को (आप्नोति) [मनुष्य] प्राप्त करता है (दीक्षया) [और] दीक्षा से=उत्तम अधिकार के द्वारा (दक्षिणाम्) दक्षिणा को, सत्कार को, उत्साह को (आप्नोति) प्राप्त करता है । (दक्षिणा) [और] दक्षिणा से (श्रद्धाम्) श्रद्धा को (आप्नोति) प्राप्त करता है । (श्रद्धया) [और] श्रद्धा से (सत्यम्) सत्य (आप्यते) किया जाता है ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

कृष्णा इण्टरप्राइसिस

साबुन बनाने के सामान के वितरक
तथा कमीशन एजेण्ट्स्

मण्डी रोड़, जालन्धर-144001

दूरभाष :- कार्यालय : 75719, 77645 P.P. आवास : 79384

ग्राम : त्रिमूर्त्ति (TRIMURTI)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः ।
ऋषिभिः संभृतो रसो ब्रह्मणेष्वमृतं हितम् ॥

सा० उ० 5 । 2 । 8/3 ॥

(हि) सचमुच (पावमानीः) वेद की पवित्र ऋचाएं (स्वस्त्ययनीः) कल्याण प्राप्त कराने वाली (सुदुघाः) उत्तम रीति से फल देने वाली (घृतश्चुतः) [और] घृत=घी और तेज प्राप्त कराने वाली हैं। (ऋषिभिः) [उनसे] ऋषियों ने (रसः) रस, आनन्द (संभृतः) धारण किया (ब्रह्मणेषु) [और] ब्रह्मवेत्ताओं (अमृतम्) जीवन अथवा मोक्ष (हितम्) डाल दिया गया।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

लोहा, स्टील, सरिया, तार

तथा

तार के उत्पादनों के थोक व्यापारी

एस. पी. ट्रेडिंग कार्पोरेशन

2, महर्षि देवेन्द्र रोड़,

कलकत्ता - 7

प्रयोजक -- श्री पवन कुमार जैन

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मन्त्रश्रुत्यं चरामसि ।
पक्षेभिरपिकक्षेभिरत्राभि संरभामहे ॥ ऋ० 10 । 134 । 7 ॥

(देवा:) हे दिव्यगुणसंपन्न विद्वान् महात्माओ ! (नाकि:) न तो (मिनीमसि) हम हिंसा करते हैं, (नकि:) [और] न ही (आ+योपयामसि) हम फूट डालते हैं । (मन्त्रश्रुत्यम्) वेदमन्त्र के ज्ञानानुसार (चरामसि) हम आचरण करते हैं । (अत्र) इस संसार में (कक्षेभि:) तिनके समान तुच्छ (पक्षेभि:) साथियों के साथ (अपि) भी (सम्) मिलकर=एक होकर (अभि+रभामहे) सम्मुख उद्योग करते हैं ।
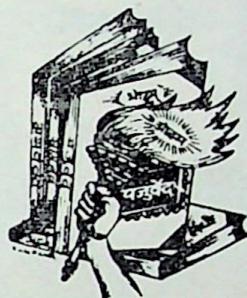
हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

गणेश इक्सपोर्ट्स

गेंद, बल्ला, लैग्गाड़, गल्ब्ज़, हॉकी और फुटबाल तथा अन्य सभी

प्रकार के खेलों के समान

के

उत्कृष्ट निर्माता तथा विदेश निर्यातक

गणेश बिल्डिंग बस्ती नौ, जालन्धर शहर-144 002 (भारत)

दूरभाष :— कार्यालय 74593 आवास 79017 टैलैक्स : 385-318 SHIV IN

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कीर्तिर्यस्य स जीवति—धवलकीर्त्ति का धनी अमर है ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

अपने पूज्य पिता
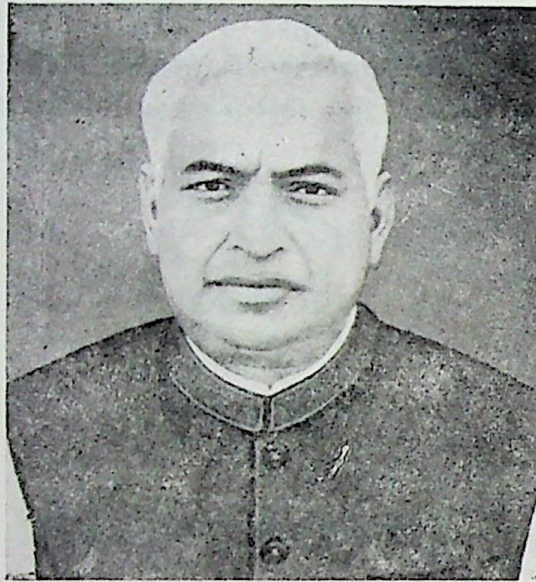
स्व. श्री शिव लाल जी बांसल

जो

अपने अन्तिम क्षणों तक श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय की तथा दीन दु:खियों की सेवा के रूप में समाज सेवा करते रहे

की

पुण्य स्मृति में

मै. बांसल टी कम्पनी

कनक मण्डी, मोगा-142001 (फरीदकोट)

दूरभाष : दुकान 2716 घर 2950

मै. शिव लाल एण्ड सन्स	**मै. शिव लाल जगदीश राय**
मोगा	**मोगा**
दूरभाष : 2716	दूरभाष : 2043

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अन्नपतेऽन्नस्य नो धेह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

य० 11 । 83 ॥

(हे अन्नपते) हे अन्न के स्वामिन् परमात्मन् ! (नः=अनमीवस्य) हमें रोगरहित, रोगनाशक (शुष्मिणः) बलप्रदाता (अन्नस्य) अन्न का (धेहि) दान दे । [हे प्रभो !] (दातारम्] दाता को (प्र+प्र+तारिषः) बहुत-बहुत बढ़ाइए । (नः=द्विपदे) हमारे मनुष्यों, भृत्यादिकों के लिए (चतुष्पदे) तथा चौपाये के लिए (ऊर्ज) बल तथा बलकारक अन्न (धेहि) दे ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

★

बलराम फॉरगिंग

नट-बोल्ट बिल्डिंग फिटिंग मिटिरियल

तथा

कृषि उपकरणो के

निर्माता एवं निर्यातकर्त्ता

क्रीसेन्ट इन्जीनियरिंग कार्पोरेशन के सामने

जी. टी. रोड़, बाई पास,

जालन्धर शहर-144004

दूरभाष : 71052 P.P.

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥ ऋ० 10 । 9 । 4 ॥

(देवीः) दिव्यगुण वाले (आपः) जल (नः+अभीष्टये) हमारे अभीष्ट (पीतये) पीने के लिए (शम्+भवन्तु) सुखदायी हों (नः) हम पर (शंयो) शान्ति और कल्याण की (अभि+स्रवन्तु) चारों ओर से वृष्टि करें ।
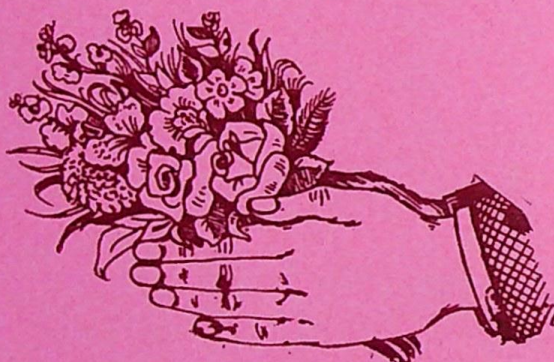
हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

अरविन्द स्टील कार्पोरेशन

(विदेश से आयात तथा निर्यात करने वाले)

निर्माता—

कृषि उपकरण, रोलर्स् तथा हैण्डटूल्स्

टाण्डा रोड़, जालन्धर शहर - 144008 (भारत)

दूरभाष : 74588

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥

य० 31 । 7 ॥

(तस्मात्) उस (सर्वहुतः) सब के दाता (यज्ञात्) पूजनीय परमेश्वर से (ऋचाएँ=ऋग्वेद (सामानि) साम=सामवेद (जज्ञिरे) उत्पन्न हुए । (तस्मात्) उसी से (छन्दांसि) छन्द=अथर्व वेद (जज्ञिरे) उन्पन्न हुए । (तस्मात्) उसी से (यजुः) यजुर्वेद (अजायत) उत्पन्न हुआ ।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

विजय फारगिंग (भारत)

फार्ज ड् स्टील पाईप फिटिंग

के

उत्कृष्ट निर्माता

नकोदर रोड़, बाम्बे ब्रॉस बिल्डिग, जालन्धर-144003.

दूरभाष : कार्यालय 76279 आवास 2917

प्रयोजक : श्री हरबंस लाल जी शर्मा, उपप्रधान--आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह ।
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिबि देवा दिविश्रितः ॥

अ० 11 । 7 । 24 ॥

(पुराणम्) पुराणस्वरूप, पुराणा होने पर भी सदा नया (यजुषा + सह) = यजुर्वेद के साथ (ऋचः) ऋग्वेद के साथ (ऋचः) ऋग्वेद (सामानि) सामवेद (छन्दांसि) अथर्ववेद (सर्वे) सब (उच्छिष्टात्) उच्छिष्ट सर्वोत्कृष्ट परमात्मा से (जज्ञिरे) उत्पन्न होते हैं। (दिविश्रितः) ज्ञान के आश्रय वाले (देव) दिव्यगुणयुक्त वेद वा इन्द्रियाँ (दिवि) दिव्यगुणयुक्त जीव अथवा मन में [प्राप्त होती हैं]

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

प्रभु दयाल ओम प्रकाश

जिन्दल और टाटा स्टील पाईप

तथा

प्रकाश P.V.S. पाईप के थोक विक्रेता

बाजार नौहरियां, जालन्धर शहर

दूरभाष : कार्यालय : 72507, 79607   आवास : 79617, 79707

अन्य सम्पर्क सूत्र :

मै. बी. बी. इण्टरप्राईसिज़

बाज़ार नौहरियां, जालन्धर शहर ।

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यथा देवा असुरेषु श्रद्धामुग्रेषु चक्रिरे ।
एवं भोजेषु यज्वस्व स्माकमुदितं कृधि ॥

ऋ० 10 । 151 । 3 ॥

(यथा) जैसे (देवा:) देव, विद्वान्, निष्काम महात्मा (उग्रेषु) तेजस्वी (असुरेषु) असुरों पर=प्राण देने वालों पर (श्रद्धम्) श्रद्धा, भक्ति (चक्रिरे) करते हैं (एवं) ऐसे ही (भोजेषु) भोजन कराने वालों में (यज्वसु) [और] यज्ञ करने कराने वालों में (अस्माकम्) हमारा (उदितम्) उदय (कृधि) कर-करा ।

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

★

पैंसला इण्डस्ट्रीज़

हार्डवेयर, नट्स् वोल्ट्स्, रिवट्स्,
G. I. बाल्टियां, कृषि उपकरण तथा
हाथ के औजारों आदि के निर्माता

जिज्ञासु स्टेट, प्रीत नगर,
पो. बा. नं. 427, जालन्धर शहर - 144004 (भारत)
दूरभाष :— कार्यालय : 76210, 77714 आवास : 77260

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ य० । 30 । 3 ॥

(सवितः) हे संसार के उत्पन्न करने वाले, संसार के शासन करने वाले, संसार को शुभ प्रेरणा देने वाले, (देव) दिव्यगुणयुक्त परमेश्वर ! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराईयों को, दुरवस्थाओं को (परा+सुव) दूर कीजिए । (यत् भद्रम्) जो भला [है] तत् नः] वह हमें (आसुव) दीजिये ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

किशन चन्द स्टील रि-रोलिंग मिल्स

निर्माता :-

सरिया पत्ती, कृषि उपकरण,

नट्स्-वोल्ट्स्-रिवट्स् तथा ब्राईट् बार

इण्डस्ट्रियल एरिया, सोढल रोड़,

जालन्धर शहर

दूरभाष :- मिल्स : 73307 आवास : 75992

ग्राम : आयरन नट्स् (IRON NUTS)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तमिद्वोचेमा विदथेषु शम्भुवं मन्त्रं देवा अनेहसम् ।
इमां च वाचं प्रतिहर्यथा नरो विश्वेद्वामा वो अश्नवत् ।।

ऋ० 1 । 403 ।।

(देवा:) हे विद्वानो ! विदथेषु) ज्ञानयज्ञों में (तम्) उस (शम्भुवम्) कल्याणमय (अनेहसम्) निर्दोष (मन्त्रम्) मन्त्र को (इत्) ही (वोचेम) बोलें । (नर:) हे मनुष्यो ! (च) और (इमाम्) इस (वाचम्) वाणी को (प्रतिहर्यथ) चाहो (व:) तुम्हें (विश्वा) सारी (इत्) ही (वामा) कमनीय वाणी (अश्नवत्) प्राप्त होगी ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

★

सरिया, पत्ति, एंगल के
उत्कृष्ट विक्रेता

कुन्दन स्टील कार्पोरेशन

टाण्डा रोड, जालन्धर नगर (पंजाब)

दूरभाष : 73483

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भग एव भगवां अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्यामं ।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह ॥

ऋ० 7 । 41 । 5 ।

(भगवान्) परमेश्वर (भगः) भजनीय, पूजनीय (एव अस्तु) ही होवें (तेन) उससे युक्त हुए (वयम् देवाः) हम ज्ञानी, धार्मिक (भगवन्तः स्याम) ऐश्वर्य्य वाले होवें (भग) हे भजनीय परमेश्वर! (तम् त्वा) उस तुझको (सर्वः इत्) सब [संसार] ही (जोहवीति) स्तुति करता है, पुकारता है। (भग) भजनीय पदार्थों के दाता! (सः) ऐसा तू (इह नः) इस संसार में हमारा (पुरः+एता भव) अग्रगामी नेता आदर्श हो।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

रोशन हार्डवेयर इण्डस्ट्रीज़

बिल्डिंग फिटिंग का सामान, औजार
एवं कृषि उपकरणों के निर्माता
तथा
विदेश में निर्यात करने वाले

प्रीत नगर, सोढल रोड़,
जालन्धर - 144004

दूरभाष :— कार्यालय : 72837 निवास : 73348
तार : 'डोर फिटिंग' (DOR-FITTING)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तस्मा अरं गमाम दो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
आपो जनयथा च नः ॥ ऋ० 10 । 9 । 3 ॥

(वः) तुम्हारे (तस्मै) उस को (अरम्+गमाम) भली प्रकार हम प्राप्त हों, (यस्य) जिसके (क्षयाय) वास के लिए, वृद्धि के लिए (जिन्वथ) तुम प्रसन्न होते हो (आपः) जल [हमारे लिए] (चनः जनयथ) अन्न पैदा करें ।

With best compliments from :

SANT BRASS METAL WORKS

BOILER MOUNTINGS, STEAM VALVES WATER &
GAS PIPE FITTINGS C. I. VALVES MFRS.

G. T. ROAD, BYE-PASS, NEAR PATHANKOT CHOWK,
JALANDHAR - 144 004 (Pb.)

Phones : Office : 78727, 76206 Resi. : 73606, 73593, 3080
Grams : "SANTBRASS"

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

With best compliments from :

PKF

RS

THINK YOU LOSING 43% OF CAPITAL ?

ON DEPOSIT OF Rs. 5000/- & IN 6 YEARS

AT 15% P.A. YOU GET Rs. 12,230/-

(PAID BY US)

AT 12% P.A. YOU GET Rs. 10,082/-

FOR DETAILS & DEPOSIT SCHEME CONTACT :-

THE PUNJAB KASHMIR FINANCE PVT. LTD.

19, G. T. ROAD, JALANDHAR.

Phones : 2771 & 3114

&

THE RELIABLE AGRO ENGG. SERVICE PVT. LTD.

G. T.—NEW COURTS ROAD, JALANDHAR.

Phone : 78003

Delhi Office :

"ANUPAM BHAWAN" NANIWALA BAGH,

COMMERCIAL COMPLEX, AZADPUR,

DELHI. Phone : 7121615

Chairman & Managing Director

BALBIR RAJ SONDHI

SERVING THE DEPOSITORS & TRANSPORTERS FOR OVER 27 YEARS

★ FIXED DEPOSITS ★ HIRE PURCHASE ★ TYRES & TUBES SALES

RATES OF INTEREST

1. 6 to 11 months — 13% P.A.
2. 12 to 23 months — 14% P.A.
3. 24 to 35 months — 14½% P.A.
4. 36 months & over — 15% P.A.

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् ।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्त्ति द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्वा व्रजत ।

ब्रह्मलोकम् ॥ ऋ० 19 । 71 । 1 ॥

प्रभु आदेश देते हैं—हे मनुष्यो ! (प्रचोदयन्ताम्) [लोगों को] उत्तम प्रेरणा दो (द्विजानाम्) द्विजों की (पावमानी) पवित्र करने वाली (वरदा) उत्तम पदार्थ दिलाने वाली (वेदमाता) वेद माता (मया) मैंने (स्तुता) उपदेश कर दी । (आयुः) [अब] आयुः (प्राणम्) प्राण, (प्रजाम्) सन्तान (पशुम्) पशु, (कीर्त्तिम्) कीर्त्ति, (द्रविणम्) धन (ब्रह्मवर्चसम्) ब्रह्मतेज, ज्ञानबल (मह्यम्) मुझे (दत्वा) देकर (ब्रह्मलोकम्) ब्रह्मलोक =मुक्ति को (व्रजत) तुम प्राप्त करो ।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

गुज्जरमल जसफूल चन्द

कमीशन एजेन्ट्स

दाना मण्डी, करतारपुर

दूरभाष : मिल : 5 दुकान : 51 निवास : 9

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

श्री चेत राम आयल मिल्स

उत्कृष्ट तेल तथा खल के निर्माता

मण्डी रोड, जालन्धर - 144008

दूरभाष : 72010, 72306, 78804
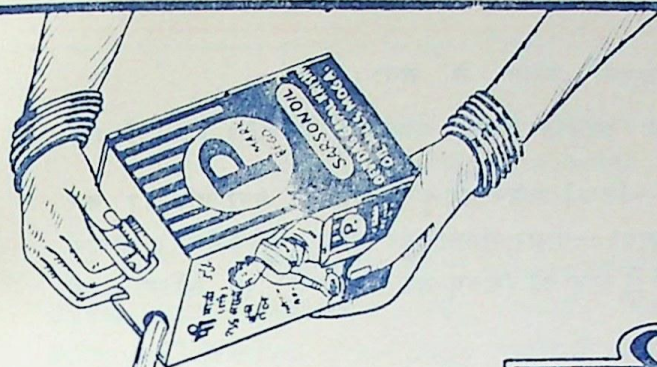
नार : आयल मिल (OIL MILL)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एह्यश्मानमा तिष्ठाश्मा भवतु ते तनूः।
कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्ते शरदः शतम् ॥ अ० 2।13।4॥

(आ—इहि) आ (अश्मानम् आ—तिष्ठ) पत्थर पर पूरी तरह बैठ, पूरा अधिकार कर (ते तनूः) तेरा तन=शरीर (अश्मा भवतु) पत्थर=पत्थर समान दृढ़ होवे (विश्वे देवाः) सम्पूर्ण दिव्यगुण, दिव्य शक्तियाँ, नियम (ते आयुः) तेरी आयु को (शतम् शरदः कृण्वन्तु) सौ सर्दियाँ=वर्ष करें।
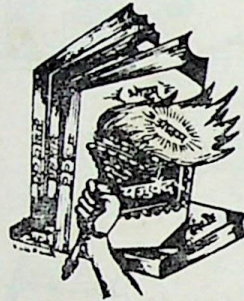
हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

जे. एम. पी. मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी

मोटर पार्ट्स

के

निर्माता एवं निर्यातकर्त्ता

983, प्रीत नगर, सोढल रोड़,

जालन्धर शहर - 144004

दूरभाष :— कार्यालय : 72755, 73035 निवास : 73667, 72887

तार : चैक्नट्स् (CHECK NUTS)

टैलैक्स् : 385-314 JMPI IN

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनेजदेकम्मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत् ।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मारिश्वा दधाति ॥ यजु०. 40.4 ॥

4. There is one unchangeable, eternal, intelligent Spirit, even more vigorous then mind. Material senses cannot preceive Him. Therefore the sage withdraws his senses from their natural course and perceives the Supreme Being everywhere present.

★

With best compliments from :

★

MAJESTIC AUTO LIMITED

MANUFACTURERS OF INDIA'S QUALITY

AND

POWER PACKED MOPED

MAJESTIC AUTO LIMITED

C-48, Focal Point LUDHIANA-141010.

Cable : MAJESTIC Tele : 25775 Telex : 0386-375

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥ यजु०.40.1 ॥

1. By one Supreme Ruler is this universe pervaded, even every world in the whole circle of Nature Enjoy pure delight, O man, by abandoning all thoughts of this perishable world, and covet not the wealth of any creature existing.

★★
★
★★

With best compliments from :

HIGHWAY CYCLE INDUSTRIES LTD.
MAKERS OF SINGLE AND MULTISPEED FREEWHEELS

HIGHWAY CYCLE INDUSTRIES LTD.
698, INDUSTRIAL AREA B,
LUDHIANA-141 003.

Tele : 37624, 26554 Cable : HIGHWAYS Telex : 0386-297

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य ।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ॥

ऋ० 10 । 171 । 6 ॥

(अप्रचेता: अन्नम्) मूर्ख, बेसमझ मनुष्य अन्न को (मोघम् विन्दते) व्यर्थ ही प्राप्त करता है । (सत्यम् ब्रवीमि) सच कहता हूं (सः तस्य) वह [धनलाभ] उसके लिए (वधः इत्) मृत्यु—हत्या ही [है,] (न) [जो] न तो (अर्यमणम्) माननीय की, उत्तम मानवाले की (पुष्यति) पुष्टि करता है, पालना करता है (न) [और] न ही (सखायम्) मित्र की [पालना करता है] (केवलादी) अकेला खाने वाला (केवलाघः) केवल पापी ही (भवति) होता है ।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

जैको स्टील इण्डस्ट्रीज़

नट्स् तथा वोल्ट्स आदि

के

निर्माता व निर्यातक

कोतवाली बाजार,

जालन्धर शहर–144001 (भारत)

दूरभाष : 73245

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बलं धेहि तनूषु नो बलमिन्द्रानलुत्सु नः ।
बलं तोकाय तनयाय जीवसे त्वं हि बलदा असि ।।

ऋ० 3 । 53 । 18 ।।

(इन्द्र) हे बलधारी प्रभो ! (नः तनूषु) हमारे शरीरों में (बलम् धेहि) बल दे, धारण करा (नः अनलुत्सु बलम्) हमारे रथवाहकों में बल [दे] (तोकाय तनयाय) शिशु के लिए, सन्तान के लिए (जीवसे बलम्) जीवन के लिए बल [दे] (हि त्वम्) क्योंकि तू (बलदाः असि बलदाता है ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

वरुण इन्जीनियरिंग कम्पनी

करोना ब्राण्ड वाल्वज़, कॉक्स्
तथा
विभिन्न प्रकार के बरसाती पानी के पाईपों
के
निर्माता

कार्यालय :
बाजार बांसावाला, जालन्धर शहर - 144001
दूरभाष : 73375

फैक्ट्री :
प्रीत नगर रोड़, इण्डस्ट्रीयल एरिया,
जालन्धर शहर - 144004

दूरभाष :— कार्यालय : 74545, 76167 आवास : 72096

तार : वरुणा (VARUNA)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम् ।।

भावार्थ :—सदा विद्या देती है विनय, विनय से हो जाता है पात्र ।
पात्रता से मिलता धन धान्य, धान्य से सब सुख पाते छात्र ।।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

आर्य माडल हाई स्कूल, करतारपुर

जिला -- जालन्धर-144801 (पञ्जाब)

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रियं श्रद्धे ददतः प्रियं श्रद्धे दिदासतः ।
प्रियं भोजेषु यज्वस्विदं म उदितं कृधि ॥

ऋ० 10 । 151 । 2 ॥

(श्रद्धे) हे श्रद्धा ! (ददतः) देने वाले का (प्रियम्) प्रिय=भला, (श्रद्धे) [और] हे श्रद्धा ! (दिदासतः) देने के इच्छुक का [भी] (प्रियम्) भला हो । (भोजेषु) भोजों में=भोजन कराने वालों में (यज्वसु) यज्ञ कराने वालों में (मे) मेरा (इदम्) यह (प्रियम्) प्यारा (उदितम्, उदय, अभ्युदय (कृधि) कर, करा ।

मातरः सर्वभूतानाम् गावः सर्वसुखप्रदाः

राष्ट्रोत्थान के लिये गोवध बंद हो

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

मै. दीपक इण्डस्ट्रीज

लोहा, स्टील, सरिया, तार

तथा

तार के उत्पादनों के थोक व्यापारी

57/7, राजा दिनेश मार्ग,

कलकत्ता - 6

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शतहस्तः समाहर सहस्रहस्तः संकिर ।
कृतस्य कार्य्यस्य चेह स्फातिं समा वह ॥

ऋ० 3 । 24 । 5 ॥

(शतहस्त:) सैंकड़ों हाथों वाला होकर (सम् + आ हर) इकट्ठा करके ला । (सहस्रहस्त:) हजारों हाथों वाला होकर (सं + किर) समदृष्टि से बिखेर, दान दे । (कृतस्य + च) किये हुए कर्म का और (कार्य्यस्य) आगे किये जाने वाले कर्म्म का (स्फातिम्) विस्तार (इह) इसी संसार में, इसी जन्ममें (सम् + आ—वह) भली प्रकार सर्वथा प्राप्त कर ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

लिंडस
मार्का
बाडी बलाक
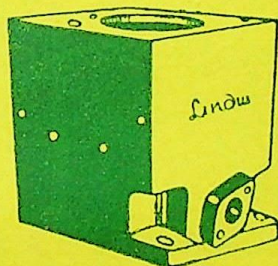
इन्जन बनाने वालों द्वारा मन्जूरशुदा बाडी-बलाक, जिस पर आप भरोसा कर सकते हैं. ये गारंटी से दिये जाते हैं ।
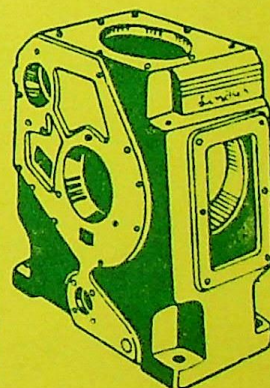
निर्माता
लक्ष्मी इन्डस्ट्रीज़
मण्डी रोड, जालन्धर शहर. फोन: 72388

Bilkat Graphics

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुर्वन्नेवेह कर्म्माणि जिजीविषेच्छतं समा: ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म्म लिप्यते नरे ।। यजु०.40.2 ।।

2. Aspire, then, O man, to live, by virtuous deeds for a hundred years, in peace with thy neighbours. Thus alone, and not otherwise, will thy deeds not influence thee.

★★
★
★★

With best compliments from :

ROCKMAN CYCLE INDUSTRIERS PVT. LTD.

MAKERS OF HERO, ROMA CHAINS AND HUBS

Rockman Cycle Industries Pvt. Ltd.

A-7, FOCAL POINT,
LUDHIANA - 141010.

Tele : 23893, 24623 Cable : ROCKMAN Telex : 0386-332

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यथा ब्रह्म च क्षत्रं च न बिभितो न रिष्यत: ।
एवा मे प्राण मा बिभे: ।। अ० 2 । 15 । 4 ।।

(यथा) जैसे (ब्रह्म च) ब्रह्म=ज्ञान, आत्मिक शक्ति और (क्षत्रम् च) क्षत्र=शूरता, शारीरिक शक्ति और=मानसिक शक्ति (न बिभीत:) नहीं डरते हैं (न रिष्यत:) [अतएव] नहीं हिंसित होते हैं, (एवा में प्राण) इसी प्रकार [हे] मेरे प्राण ! (मा बिभे:) मत तू डर ।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

तार बनाने के थोक व्यापारी

नावल्टी इन्जीनियरिंग वर्क्स

113-बी, 10 मनोहर चौक,

कलकत्ता - 7

दूरभाष :— कार्यालय : 336930
आवास : 476352

प्रयोजक—श्री नवरत्न जी

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम् ।
ओ हि वर्त्तन्ते रथ्येव चक्राऽन्यमन्यमुप तिष्ठन्ति रायः ॥

ऋ० । 10 । 117 । 5 ॥

(तव्यान् नाधमानाय) बलवान् मनुष्य दुःखी को (इत् पृणीयात्) अवश्य प्रसन्न करे (द्राघीयांसम् पन्थाम्) अतिदीर्घ [जीवन] पथ को (अनु+पश्येत) विचार से देखे। (रायः रथ्या) धन रथ के (चक्रा+इव+उ+हि) चक्रों की भांति सचमुच ही (आ+वर्त्तन्ते) घूमते रहते हैं, (अन्यम्+अन्यम्) [और] एक के बाद दूसरे के (उप+तिष्ठन्ति) पास चले जाते हैं।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

भारत भर में प्रसिद्ध, मोटर की कमाणियों के
उत्कृष्ट निर्माता

बाम्बे मोटर ट्रेडिंग कम्पनी

कपूरथला

दूरभाष : 2346

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः सम्मातरा चिन्न समं दुहाते ।
यमयोश्चिन्न समा वीर्य्याणि ज्ञाती चित्सन्तौ न समं पृणीतः ॥

ऋ० 10 । 117 । 9 ॥

(हस्तौ) दोनों हाथ (सम + चित्) समान होते हुए भी (समम् न विविष्टः) समान, एक-जैसे नहीं व्यापते । (सम्मातरा चित्) एक मां की होती हुई भी (समम् न दुहाते) एक-समान नहीं दूध देती हैं । (यमयोः चित्) जोड़िये दो भाइयों के भी (वीर्य्याणि) सामर्थ्य (समा न) बराबर नहीं होते । (ज्ञाती + सन्तौ + चित्) नातेदार होते हुए भी (समम् + न) एक-समान नहीं (पृणीतः) प्रसन्न करते, पालते, दान करते ।

★

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

★

स्टील कारपोरेशन आफ पंजाब

रिरोलर्स, सी. आई. तथा एम. आई. कास्टिंग्स

व कृषि यंत्रों के निर्माता, लोहा एवं

इस्पात के कन्ट्रोल स्टाकिस्ट

मुख्य कार्यालय :

पोस्ट बाक्स नं. 4,

इण्डस्ट्रियल एरिया, कपूरथला

दूरभाष : 2521, 2974

तार : STECORPUN

शाखा कार्यालय :

टांडा रोड,

जालन्धर शहर

दूरभाष : कार्यालय : 78858

घर : 73395

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥ यजु० 40.5 ॥

5. He moves all, but Himself does not move. Tothe ignorant He is far, but to the wise He is at hand. He pervades inside and outside of all.

With best compliments from :

KHEM CHAND RAJ KUMAR

'EVEREST HOUSE' 10th FLOOR,
46-C, CHOWRINGHEE ROAD,
CALCUTTA-16.

Branches :

at Bombay & New Delhi

Phones : 443-31 (3 Lines)

Cable : KAYSTEEL Telex : 7338 KAYSTEEL

Printed at : Job Press, Jalandhar-2.

CC-O. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha